हौसले से भरे किरदारों की दास्तान...

बौने क़द के ऊँचे लोग

हौसले से भरे किरदारों की दास्तान...

बौने क़द के ऊँचे लोग

Bone Kad Ke Unche Log

by Alok Sethi

प्रथम संस्करण	:	सितम्बर 2014
द्वितीय संस्करण	:	सितम्बर 2018
क़ीमत	:	` 200/-

लेखक : **आलोक सेठी**

हिन्दुस्तान अभिकरण, पंधाना रोड, खण्डवा (म.प्र.)

tel : 0733-2223003, 2223004

cell : 094248-50000

mail : hindustanabhikaran@yahoo.co.in

web : www.hindustanabhikaran.com

प्रकाशक एवं मुद्रक : **शब्दावली प्रकाशन**

गोडाउन नं. 2, अग्रवाल तौल कांटा कम्पाउण्ड

लसुड़िया मोरी, देवास नाका, ए.बी. रोड, इन्दौर

Cell : 70240-50000

रूपांकन : sanjay patel productions 0 9 7 5 2 5 2 6 8 8 1

© सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित।

Bone Kad Ke Unche Log by Alok Sethi

ISBN No. :

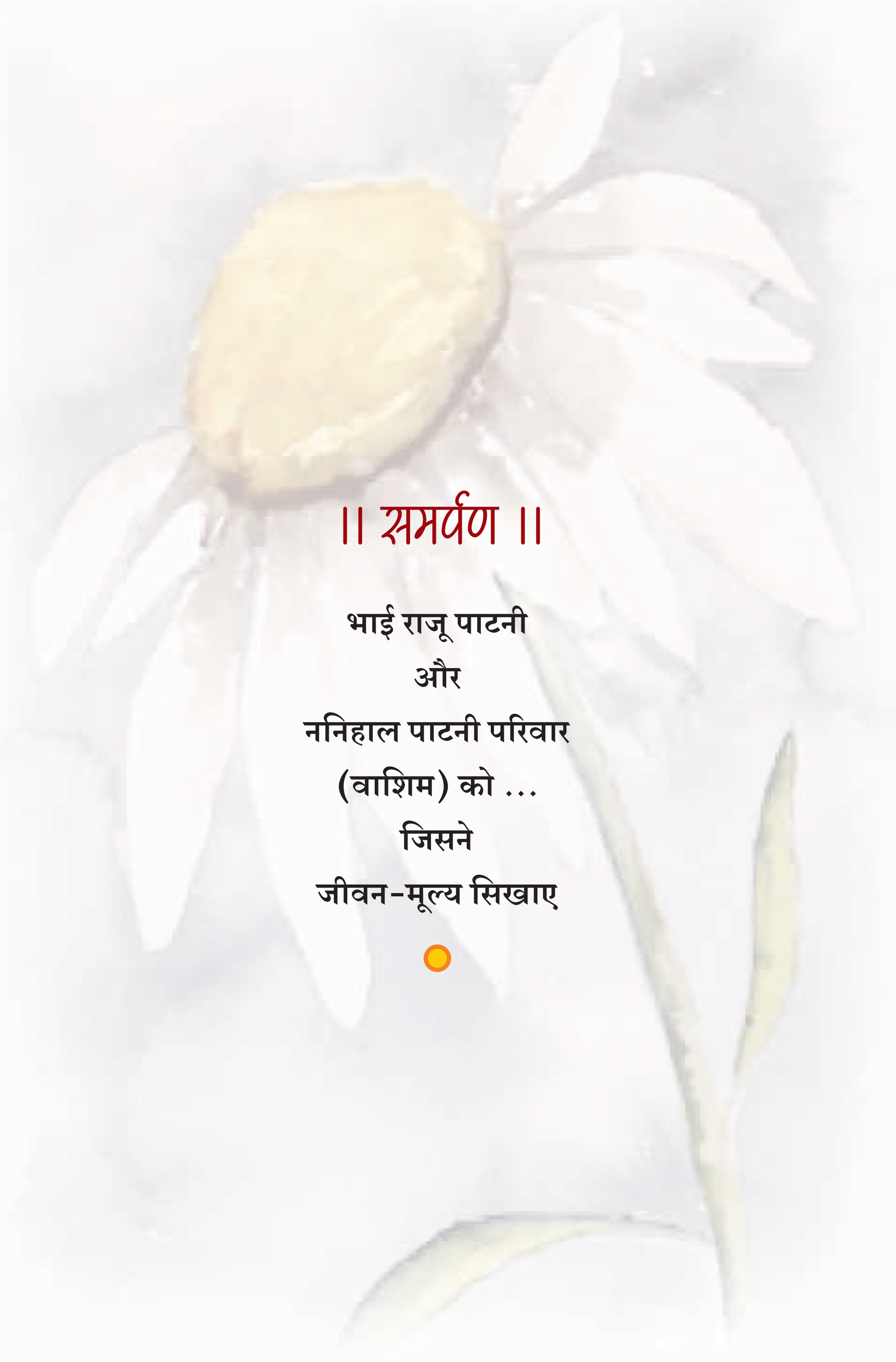

।। समर्पण ।।

भाई राजू पाटनी

और

ननिहाल पाटनी परिवार

(वाशिम) को ...

जिसने

जीवन-मूल्य सिखाए

अपनी बात

झाँकता हूँ तो एक युद्ध दिखाई देता है ख़ुद के भीतर। एक ऐसा महाभारत जिसमें दोनों तरफ़ से लड़ रहा है आलोक सेठी नाम का शख़्स। एक, जिसके पास क़लम है और शब्दों से इश्क़ करता है। कुछ मासूम सपने हैं, जिन्हें पाल-पोसकर आसमान का क़द देना चाहता है, कहीं एकांत में बैठकर ढेर सारे पुराने फ़िल्मी गाने सुनना चाहता है, गीत-कविताएँ लिखना और ग़ज़लें कहना चाहता है, कवि सम्मेलनों और मुशायरों को अपनी रातें देना चाहता है और जिसमें देश-दुनिया को क़दमों से नाप लेने की चाह है... तो दूसरी तरफ़ एक महत्वाकांक्षी उद्यमी है, जो अपने कारोबार को शीर्ष पर ले जाना चाहता है। सारे कामकाज और आर्थिक प्रबंधन को त्रुटिरहित कर व्यवसाय के संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को अपने साथ जोड़ लेना चाहता है। आने वाली संतति को सुरक्षित, व्यवस्थित एवं समृद्ध विरासत देना चाहता है।

इन दोनों विपरीत चरित्रों से लड़ते-लड़ते अक्सर हाँफने लगता हूँ। दोनों समय भी माँगते हैं और समर्पण भी। जीवन जूझ रहा है इस संग्राम में। जब-जब एक आलोक जीतने लगता है तो दूसरा आलोक हारने लगता है। बावरा मन दोनों को जीतते देखना चाहता है और निरंतर खोजता रहता है तीसरा रास्ता।

इसी ऊहापोह में ज़िंदगी दौड़ रही है। इस रफ़्तार में कई नायाब हमसफ़र मिले। कुछ आज भी साथ हैं, कुछ दूर और कुछ बहुत दूर चले गए। ऐसा एक भी आदमी नहीं मिला, जिसमें ख़ुद की कोई एक ख़ूबी न रही हो। मैंने ऐसे कई लोग देखे जो दुनिया की नज़र में तो आम थे, लेकिन उनके विचार, सोच और उनकी सीख ख़ास लोगों से भी ख़ास थी। संस्कार, ज्ञान या बुद्धि केवल पढ़े-लिखे या धनाढ्य लोगों की बपौती नहीं है। जीवन में आपको कब, कौन, क्या सिखा जाए, कोई भरोसा नहीं। यह पुस्तक उन आम लोगों की कहानी है, जो बातों-बातों में इस नाचीज़ को कुछ ऐसा सिखा गए कि मन-मस्तिष्क पर अटल हो गया। उन्हें आपके साथ बाँटना चाहता हूँ। सारी घटनाएँ सच्ची हैं... अधिकांश आपबीती हैं और कुछ एक बुज़ुर्गों से सुनी हैं। बातें निहायत व्यक्तिगत हैं, किसी को नागवार न गुज़रें इसलिए नाम और पहचान को बदल दिया है। आप अपने आसपास के किसी भले आदमी का चेहरा लगाकर देखिएगा, आपको लगेगा कि जैसे आपके ही जीवन का कोई अनुभव इस ख़ाकसार ने अपनी क़लम के मारफ़त आपको पढ़ाया-सुनाया है। अगर आपने अपने आसपास के किसी छोटे आदमी की ऊँचाई को देख लिया तो 'बौने क़द के ऊँचे लोग' का यह अनुष्ठान सार्थक होगा।

▪ ***आलोक सेठी***

अनुक्रम

- रोज़ी ही मेरा रोज़ा है 9
- दुश्मनी लाख सही, ख़त्म न कीजे रिश्ता 12
- कर भला तो हो भला 15
- मुसीबत के साथी 18
- हौसलों से उड़ान होती है 20
- बिटिया 23
- जिस पलड़े में तुले मुहब्बत, उसमें चाँदी नहीं तौलना 25
- तेरा मुझसे है पहले का नाता कोई 27
- पुराने वफ़ादार 29
- हारने का आनंद 31
- अहसान 33
- शुक्रिया परवरदिगार का 35
- तक़दीर और तदबीर 37
- साइड इफ़ेक्ट 39
- हर आदमी में होते हैं दस-बीस आदमी 41
- नींव की पूजा 43
- क्षमा बड़न को शोभती 45
- जो लंबी उम्र देना हो तो ख़िदमदगार बेटे दे 47
- राजा से बड़े रंक 50
- धीरज मोठी बात छे 52
- मेहमाँ जो हमारा होता है 54
- शबरी के बेर 57
- राजदूत 59
- बराबरी का दर्जा 61
- ख़ुद को सज़ा 63
- अभिमान हो ना जाए 65
- मुखिया मुख सो चाहिए 68
- मसीहा 70
- भाई 72
- व्यस्त रहो, मस्त रहो 74
- तहज़ीब का दामन 76
- भैया को दिए महल-दुमहले, मुझको दिया परदेस 78
- अन्न परम ब्रह्म 80
- नाई को फ़ायदा 82
- संगीत ख़ुदा है 84
- लंबा चलना है तो सबके साथ चलिए 86
- काल करे सो आज कर 88
- अँधेरे में जुगनू 90
- ना जाने किस रूप में नारायण मिल जाएँ 93
- गुलदस्ता 95
- पिता पेड़ हैं, हम शाखाएँ 97
- हृदय परिवर्तन 100
- भगवान से बढ़कर 103
- सच्ची इबादत 105
- शरबती 108
- पति परमेश्वर 110
- दिव्यांग 112
- शिक्षा 114
- कंट्रोल के चावल 116
- मैकेनिक की सीख 118
- नज़रों का लिहाज़ 121
- राज मिस्त्री की कहानी 124
- नानी बाई को मायरो 127
- मरने के पहले जीने का आनंद 130
- टैक्सी ड्रायवर 132
- पानी पताशे 134
- स्वाभिमानी बहन 136
- स्वाभिमान का सम्मान 138
- निर्जीव से प्यार 140
- नियमित जीवनशैली 142
- बलात्कारी पति 144
- काका 146
- जैसा खाओ अन्न वैसा रहे मन 148
- केप्सूल 150
- शुक्राना 152
- क्या नहीं करना है 154

रोज़ी ही मेरा रोज़ा है

सूरज को पूरब का दरवाज़ा खटखटाने में अभी देर थी। कान्हा-किसली का रेस्ट हाउस अँधेरे में डूबा हुआ था और साँय-साँय करती डरावनी आवाज़ें हमारा पीछा कर रही थीं। पर्यटक जल्दी-जल्दी चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे कि कहीं घड़ी का काटा पाँच पर न पहुँच जाए और पहरेदार जंगल में घुसने से मना कर दे। बिजली गुल थी, लिहाज़ा कंडील और अलाव ही राह रोशन कर रहे थे। समय धड़कनों का इंतहान ले रहा था कि जीप का चालक एक बुरी ख़बर के साथ दाख़िल हुआ- 'टायर पंचर है।' हम सबके हाथ-पाँव फूल गए और चेहरे सवाल बनकर लटक गए। अब क्या करें? पंचर कहाँ बनेगा? रेस्ट हाउस का बूढ़ा चौकीदार बोला- 'सलाम चाचा बनाते हैं, अंदर गाँव में रहते हैं। कोशिश कर लीजिए, पर अभी रात है, शायद ही काम हो पाए?'

अँधेरे से जूझते हुए हम 'सलाम टायर वर्क्स' पहुँच गए। हिम्मत कर आवाज़ लगाई- 'चाचा...ओ चचाजान !' अंदर से एक बुज़ुर्ग, लेकिन दरगाह सी पाक़ आवाज़ आई- 'कौन है बेटा?' मैंने कहा- 'परदेसी मुसाफ़िर हैं चाचा। टायर पंचर हो गया है।' 'ठीक है, बना दूँगा।' एक हाथ में चिमनी लिए और दूसरे से आँख मसलते हुए चाचा बाहर निकले। सफ़ेद बाल, झुकी कमर, पुरानी लुंगी और फटा कुर्ता। उन्हें देखकर साफ़ लग रहा था कि उम्र ने ज़िंदगी को आख़िरी सीढ़ी की तरफ़ धकेल दिया है।

बोले- 'घबराओ मत बेटा, मेरे कंप्रेसर के टैंक में हवा भरी हुई है।' वे पंचर बना रहे थे और मुझे लग रहा था कि आज सारा कार्यक्रम चौपट हो जाएगा। दोनों टायर हवा से भर गए और चाचा के पाना मारते ही ठन की आवाज़ कर उठे। हवा से अघाए हुए टायरों ने तसल्ली दी। पूरब के चेहरे पर सूरज की लाली आई तो अपने चेहरे पर उम्मीद की।

मैने सौ का नोट निकाला और चाचा की तरफ़ बढ़ा दिया। 'आठ रुपए खुल्ले नहीं हैं क्या?' मैने कहा- 'बख्शीश है, आपने रात में मेरा काम किया है।' 'बिलकुल नहीं, मुझे तो केवल आठ रुपए ही चाहिए।' 'रख लो चाचा, आपने मेरा पूरा एक दिन बचाया है। दिनभर रुकना पड़ता तो हज़ारों रुपए ख़र्च होते, उसके सामने तो यह बहुत कम है।' चाचा ने कहा- 'बेटा मैं एक मुसलमान हूँ, फिर भी मैं पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ने नहीं जा पाता। कामकाज और थकान की वजह से रमज़ान में रोज़े भी नहीं रख पाता। न यतीमख़ाने जाकर यतीमों की सेवा कर पाता और न ज़कात दे पाता। कहने का मतलब यह कि मैं वो एक भी काम नहीं कर पाता जो हमारे मज़हब में सबसे ज़रूरी बताए गए हैं।... मेरा यक़ीन है कि अल्लाताला ने मुझे यहाँ मुसाफ़िरों की गाड़ियों के पंचर बनाने के लिए भेजा है। यही मेरा काम है। मेरी रोज़ी ही मेरा रोज़ा है। मेरी मस्जिद, मेरी नमाज़ सब यहीं है। यहाँ बैठकर मैं अपने काम को जितनी नेक नियति से अंजाम दे पाऊँ, वही मेरी इबादत है। मेरे लिए तो आप से आठ का सवा आठ रुपए लेना भी हराम है।'

चाचा सलाम बोले जा रहे थे और मुझे लग रहा था कि कोई फ़क़ीर मेरे सामने खड़ा है। मैं खड़ा सोच रहा था कि क्या चचा उसी दुनिया का हिस्सा हैं जहाँ आदमी की भूख इतनी बड़ी है कि वह आदमी को ही मारकर खा जाना चाहता है। जहाँ घोटाले और मुनाफ़ाख़ोरी आम और ख़ास दोनों की आदत हैं।

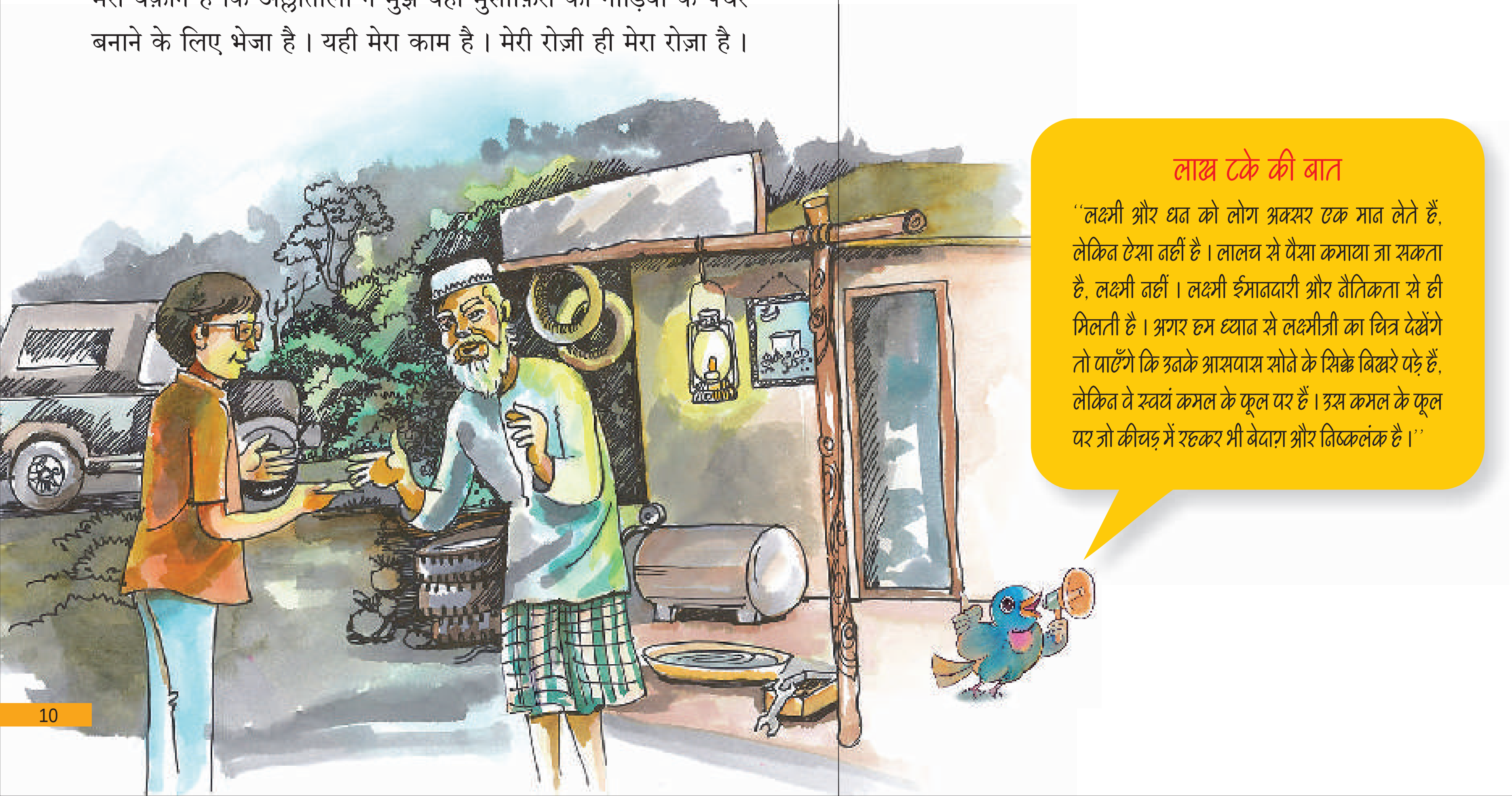

दुश्मनी लाख सही, ख़त्म न कीजे रिश्ता

बौने क़द के ऊँचे लोग

कचहरी में भीड़ और कचकच न हो, ऐसा भला कहाँ होता है। वहाँ की भीड़ बताती है कि दुनिया में कितनी मार-काट है, कितना बैर भाव है। उस रोज़ खंडवा कचहरी का यही हाल था। पैर रखने की जगह नहीं। चेहरे पर तनाव और पीड़ा लिए ढेर सारे मुवक्किल और उनसे ज़्यादा वकील। पटेल काका खंडवा के पास के एक गाँव के रसूखदार थे और मुझसे बेहद स्नेह रखते थे। उनकी बेटी के केस के फैसले का दिन था, भोला मन बार-बार काँप रहा था इसलिए अपनी हिम्मत समझकर मुझे साथ ले गए थे। पिछले साल ही उनकी इकलौती बेटी की शादी हुई थी। लड़के के दिल में छेद था, लेकिन लड़के वालों ने इसकी भनक न लगने दी। शादी हो गई। बेटी ससुराल गई तो राज़ खुला। डॉक्टरों से संपर्क किया तो उन्होंने साफ़ कह दिया कि दो-चार साल से ज़्यादा निकाल पाना मुश्किल है। आख़िरकार पटेल काका ने दिल पर पहाड़ रखकर बेटी से तलाक़ के लिए आवेदन करवा दिया। दोनों पक्षों में जमकर विवाद हुआ, एक-दूसरे की देखा-देखी बंद हो गई। जैसा कि अनुमान था फ़ैसला पटेल काका के पक्ष में हुआ। तलाक़ मंजूर हो गया। लड़के वालों के चेहरे फक्क पड़ गए। अब बारी थी पटेल काका के परिजन के जश्न मनाने की। लेकिन उस दिन जो कुछ हुआ, शायद ही पहले कभी हुआ हो।

पटेल काका अचानक अपनों के बीच से उठे और सामने की झुंड में चले गए। जंवाई राजा को अभिवादन किया, समधी के पाँव छुए और हाथ जोड़कर खड़े हो गए। आँखों से अनायास आँसू गिरे जा रहे थे और आवाज़ गले में बार-बार फँस रही थी। ख़ुद को भीतर से संभाला और बोले- 'बेटी और जंवाई का साथ इतना ही लिखा था। इस मुक़दमे के दौरान मुझसे और मेरे परिजन से जितनी भी गलतियाँ हुईं, उसके लिए मैं आपसे करबद्ध क्षमा चाहता हूँ। इस बूढ़े बाप का एक अंतिम निवेदन स्वीकार कीजिए।

कोर्ट ने भले ही आज से तलाक़ मंज़ूर कर लिया हो, पर कम से कम आज भर और ये हमारे जंवाई राजा हैं और आप समधी। मुझ पर उपकार कीजिए, घर में रसोई तैयार है। मेरी घरवाली दामाद और आपके परिवारजन के लिए कुछ कपड़े लाई है। इसे ग्रहण कर हमें उपकृत करें... हमारा तलाक़ कल से।' लड़के के पिता की आँखों से गंगा-यमुना फूट पड़ीं और उन्होंने पटेल काका को अपनी बाँहों में कस लिया। आँसुओं में सारा वैमनस्य धुल गया। थोड़ी ही देर में दोनों परिवार साथ चल पड़े...और मेरा साथ देने के लिए जनाब बशीर बद्र के लफ़्ज़ आ गए -

आप भी आइए, हमको भी बुलाते रहिए।
दोस्ती जुर्म नहीं, दोस्त बनाते रहिए।
दुश्मनी लाख सही, ख़त्म न कीजे रिश्ता
दिल मिले न मिले, हाथ मिलाते रहिए।

बौने क़द के ऊँचे लोग

सुबह घर से निकलने में देर हो गई थी इसलिए गाड़ी की रफ़्तार कुछ तेज़ थी। यह क्या, भैयाजी के ऑफ़िस के बाहर इतनी भीड़। पलभर को लगा कि पहले ही लेट हूँ, निकल जाऊँ, लेकिन मन नहीं माना। पास ही खड़े एक परिचित से पूछा-'क्या मामला है...?' वह कान में फुसफुसाकर बोला- 'भैयाजी प्लॉट और ऑफ़िस वाला केस हार गए हैं। मकान मालिक कुर्की ऑर्डर लेकर आए हैं और लाख मिन्नतों के बाद भी एक दिन का समय भी नहीं दे रहे हैं। भैयाजी को सूझ नहीं पड़ रही कि एक दिन में इतना सामान कहाँ और कैसे शिफ़्ट करें।' मैंने भी देखा कि भैयाजी हाथ जोड़े गिड़गिड़ा रहे हैं और कुर्सी पर बैठा बूढ़ा मकान मालिक पसीजने की बजाय भला-बुरा उगल रहा है। कोर्ट का कोटवार और पुलिस वाले भी उसी का साथ दे रहे हैं- 'सामान तुरंत ख़ाली कर रहे हो कि बाहर फेंकना शुरू करें।'

भैयाजी का रसूख, रुतबा और जलवा ही लोगों ने देखा था, उनकी इस तरह की गिड़गिड़ाहट और मकान मालिक का रूखापन देखकर लगभग हर किसी का दिल पसीज रहा था। दूसरी ओर भैयाजी से जलने वाले भी मकान मालिक को भड़काए जा रहे थे- 'घंटे भर की मोहलत मत देना, वरना बाद में जूते घिस जाएँगे और प्लॉट ख़ाली नहीं होगा।' मकान मालिक का पारा सातवें आसमान पर- 'दुनिया इधर से उधर हो जाए, अब मैं घड़ीभर की भी मोहलत देने वाला नहीं हूँ।'

तभी भैयाजी का लड़का आया। मोटरसाइकिल खड़ी की और सारा माजरा समझा। पिताजी को कोने में ले जाकर कुछ फुसफुसाया और फिर मकान मालिक के पास आया। दोनों हाथ जोड़कर बोलने लगा- 'काका मेरी तरफ़ देखिए, मैं आपको ग्यारंटी देता हूँ कि हम लोग तीन दिन में मकान ख़ाली

कर देंगे।' मकान मालिक के ऊपर जैसे जादू हो गया। चेहरे से गुस्सा छू हो गया और अकड़ ग़ायब। कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। फिर उसने जो कहा, वह किसी अमृत वचन की तरह था।

मकान मालिक हम सबसे मुख़ातिब था- 'ये लड़का और मैं पिछले आठ साल से हर महीने इस केस की पेशी के लिए कोर्ट जा रहे हैं। कोर्ट जाते समय कई बार यह लड़का मुझसे प्रकाश टॉकीज के सामने टकराया। कई बार तो हम एक ही टैम्पो में बैठे। मैं जब तक पैसे निकालता, ये दोनों के पैसे दे देता और कंडक्टर से कहता कि काका मेरे साथ हैं। मैं इसके ख़िलाफ़ केस लड़ रहा था, लेकिन इसने कभी भी मेरे सम्मान में रत्तीभर भी कमी नहीं की।'

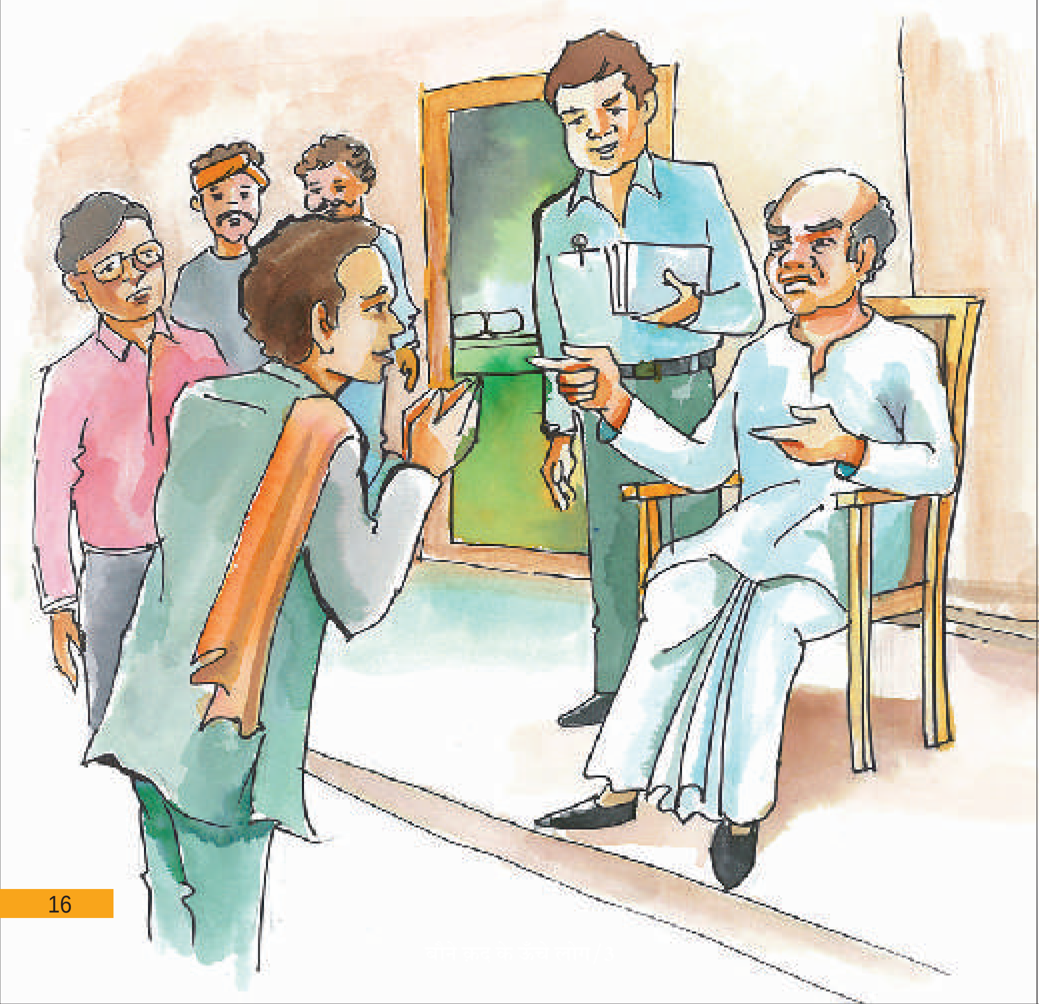

फिर लड़के से बोला- 'बेटा, तेरे टैम्पो के आठ-आठ आने का क़र्ज़ है मुझपर। घबरा मत। तीन दिन नहीं, सात दिन का समय दिया... पर बेटा देखना दुनिया मुझ पर हँसे नहीं, सात दिन में ख़ाली ज़रूर कर देना।'

किसी को दिया गया सहज सम्मान कैसे सैकड़ों गुना होकर वापस मिलता है, बिलकुल साक्षात था। ■

मुसीबत के साथी

उसने दुकान के सामने वाला मकान किराए पर लिया था। आमंत्रण देने आया था कि रात में सत्यनारायण की कथा है, आइएगा। यूँ तो मैं हर आमंत्रण पर यथासंभव उपस्थित होता हूँ, पर उस दिन चूक गया। वह अगले दिन प्रसाद लेकर दुकान पर आया- 'भैया आप लोग नहीं आए।' मैने माफ़ी माँगी। वह बोला- 'कोई बात नहीं, आज दोपहर चाय पर आ जाइएगा।' वह बुलाता रहा और मैं नहीं जा पाया। कभी व्यस्तता, कभी लापरवाही।

एक रात दुकान में आग लग गई। देखते ही देखते आग फैल गई। सारा मोहल्ला इकट्ठा हो गया और लोग जान की बाज़ी लगाकर आग बुझाने लगे। वे लोग भी जिन्हें मैने कभी देखा तक नहीं था। जब आग क़ाबू में आई, तनाव और आपाधापी कम हुई तब देखा कि एक व्यक्ति पिछले चार घंटे से लोगों को लगातार पानी और शरबत ला-लाकर पिला रहा था। लोग थक जाते तो बैठकर सुस्ता लेते, लेकिन एक वह था जो रुकने का नाम नहीं ले रहा था। वह सामने के मकान का वही किराएदार था। तब लगा कि हम जिन्हें कई बार ग़ैर ज़रूरी समझते हैं, वे वास्तव में किसी बड़ी मुसीबत में ढाल बन जाते हैं।

लाख टके की बात

फूल केवल अपनी ख़ुशबू बाँटते हैं। जो भी रास्ते से गुज़रता है सबको, बिना यह सोचे कि वह दोस्त है या दुश्मन। महक लेने वाला कौन है, यह सवाल ही उसके लिए असंगत है। हम फूल न बन सकें तो कम से कम उसे बाँटने वाले हाथ बनें। उन हाथों में हमेशा ख़ुशबू रहती है, जो औरों को फूल बाँटते हैं।

हौसलों से उड़ान होती है

सीमित साधन और असीमित उत्साह से टायर की दुकान तो शुरू कर दी, लेकिन पूँजी की कमी हर मोड़ पर हिम्मत तोड़ देती थी। ग्राहक तो ख़ूब आते, पर टायर ही स्टॉक में नहीं होते। जेठ की दोपहर थी, सूरज आग उगल रहा था, सड़कें सूनी थीं और माहौल अलसाया था। अकेला दुकान पर बैठा मैं रूमाल से पसीना पोंछ रहा था कि एक कार आकर रुकी। उसमें से नगर के बड़े उद्योगपति और पूर्व परिचित उतरे। बोले- 'बेटा अपनी कार के टायर मिलेंगे क्या?' मैंने कहा- 'क्षमा कीजिए, काम अभी चालू किया है इसलिए कार के टायर नहीं रख पा रहा हूँ। आपका इंदौर में अच्छा परिचय है, वहीं से बुलवा लीजिए।'

वे आकर मेरे पास बैठ गए और दाहिना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया। बोले- 'बेटा, मेरे लिए इंदौर से टायर मँगाना बहुत आसान है। एक फ़ोन पर चाहे जितने टायर आ जाएँगे, लेकिन मैं टायर तुझसे ही लूँगा और तू ही मुझे इंदौर से मँगवाकर देगा। यह रख एडवांस। बेटा, अगर टायर व्यवसाय में आगे बढ़ना है तो एक बात ज़िंदगीभर याद रखना...कोई भी ग्राहक हो, किसी भी साइज़ का टायर माँगे...मुँह से ना नहीं निकलना चाहिए।'

बरसों हो गए इस वाकये को भी और उन सज्जन को दुनिया से विदा हुए भी, किंतु आज भी किसी ग्राहक को टायर के लिए मना करने से पहले उनका चेहरा आँखों में तैर जाता है। उनके हाथ की छुअन मेरे कंधे पर महसूस होती है।

लाख टके की बात

अपनी ताक़त पहचानने से ज़्यादा ज़रूरी है अपनी कमज़ोरियों को आँकना और उन्हें साफ़गोई से कुबूल करना... उसे ठीक करने का प्रयास करना। हमारे पास दो आँखें और एक जीभ है, मतलब दो बार देखकर एकबार बोलना चाहिए। दो कान एक मुँह है, मतलब बोलने से ज़्यादा सुनना चाहिए। दो हाथ और एक पेट है, मतलब जितना खाते हैं उसका दोगुना काम करना चाहिए।

बिटिया

बेहद रईस परिवार था। बड़ा और सम्मिलित। मान, सम्मान, धन, धान्य हर मामले में समृद्ध। मुखिया के छोटे भाई के बेटे के लिए लड़की देखने जाना था। तैयारी पूरी, जाने वालों की लिस्ट भी तैयार। सब समझाने और मनाने में लगे, लेकिन लड़के के पिता जाने को तैयार नहीं। जब सबने घुटने टेक दिए तो फिर उनसे न जाने का कारण पूछा गया।

उनका कहना था- 'लड़की को उसके माता-पिता ने कितने अरमानों से पाला होगा, संस्कार देने में कोई कसर न छोड़ी होगी। लड़की ऊहापोह के बाद कितने ख़्वाब सजाए हमारे सामने आएगी। उस बच्ची को देखने के बाद अगर किसी कारण से बाज़ार में सजे सामान की तरह रिजेक्ट करना पड़ा तो मैं अपने को अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा? प्रभु ने मुझे इतना साहस नहीं दिया है।'

लाख टके की बात

दो बातें जीवन के प्रति आपका
नज़रिया बतला देती हैं।

पहला-जब आपके पास कुछ नहीं होता,
तब आप क्या करते हैं?

दूसरा-जब आपके पास सबकुछ होता है,
तब आप क्या सोचते हैं?

साफ़ संदेश है कि आदमी के चरित्र का पता
अभाव में नहीं, वैभव के समय लगता है।

जिस पलड़े में तुले मुहब्बत, उसमें चाँदी नहीं तौलना

बौने क़द के ऊँचे लोग

उस विधवा बूढ़ी को सारा मोहल्ला मौसी कहता था। उसके बच्चे कहीं बाहर रहते थे, लेकिन उसका मन खंडवा और पास के गाँव की खेती में रमता था। पहले ताँगे से रोज़ खेत आती-जाती थी। जबसे मोहल्ले के लड़के ने पुराना टैम्पो ख़रीद लिया और गाँव की तरफ़ जाने लगा, मौसी को भी खेत जाने का नया साधन मिल गया। मौसी जब भी गाँव जाने के लिए सड़क पर खड़ी होती, टैम्पो वाला आदर से उसको बैठाता और खेत तक छोड़ता। पैसे देने लगती तो दोनों हाथ जोड़ लेता। कहता- 'मौसी आपके सामने ही खेलकर बड़े हुए हैं, आपसे क्या पैसे लेने?' मौसी लाख कहती, पर वह पैसे न लेता।

इस बार मौसी के खेत के आम फलों से लदे थे। वह जब भी गाँव जाती चार-पाँच किलो बाँध लाती और टैम्पो वाले लड़के को दे देती। जब तक आम थे, ऐसा अक्सर करती। एक दिन मौसी गाँव से आ रही थी कि मोहल्ले के काका ने टोका- 'मौसी धन आपका है, मुझे कहने का हक़ नहीं, लेकिन मन दुखता है इसलिए कह रहा हूँ।' टैम्पो से आने-जाने का किराया चार रुपए होता है, लेकिन तुम उस लड़के को 20-30 रुपए का आम दे देती हो। यह कौन-सी अक्लमंदी है? 'मौसी ओटले पर बैठी और जैसे अतीत की किसी गुफा में घूमने लगी। आँचल से पसीना पोंछा और बोली- 'काका प्रेम का कोई तराज़ू नहीं होता। वह भी दिन था जब लड़का ग़रीबी के बावजूद मुझसे किराया नहीं लेता था। हर बार बिना पैसे लिए मुझे लाता-ले जाता था। तब उसे नहीं पता था कि एक दिन मैं उसके लिए आम लेकर आऊँगी। आज मेरी बारी आई है तो क्या मैं प्रेम को सस्ते-महँगे के तराजू पर तौलूँ?' मौसी के इस जवाब पर प्रेम की सारी पोथियाँ न्योछावर हो गईं। ■

लाख टके की बात

प्रेम सदा ही अकारण होता है। जिस प्रेम में कारण होता है, वह प्रेम नहीं रह जाता। प्रेम सौदा नहीं है। वह लेन-देन के व्यवसाय जगत से बाहर है और यही उसका सौंदर्य है। इस पार्थिव शरीर पर प्रेम अपार्थिव की किरण है। इसलिए प्रेम के सहारे प्रार्थना तक पहुँचा जा सकता है और प्रार्थना के सहारे प्रभु तक।

■ तेरा मुझसे है पहले का नाता कोई

टायर के नए शो-रूम का निर्माण कार्य चल रहा था। एक मज़दूरन के साथ पाँच-छह साल का लड़का आया करता था। वह उसे कहीं छाँव में बैठा देती और बीच-बीच में बिस्किट-पानी देकर उसे दुलार आती। दोनों की उम्र का फ़ासला बता रहा था कि बच्चा उसका पोता है। एक दिन मुझसे रहा नहीं गया और मैंने पूछ लिया- 'बाई कौन है ये बच्चा? इसके माता-पिता इसे नहीं

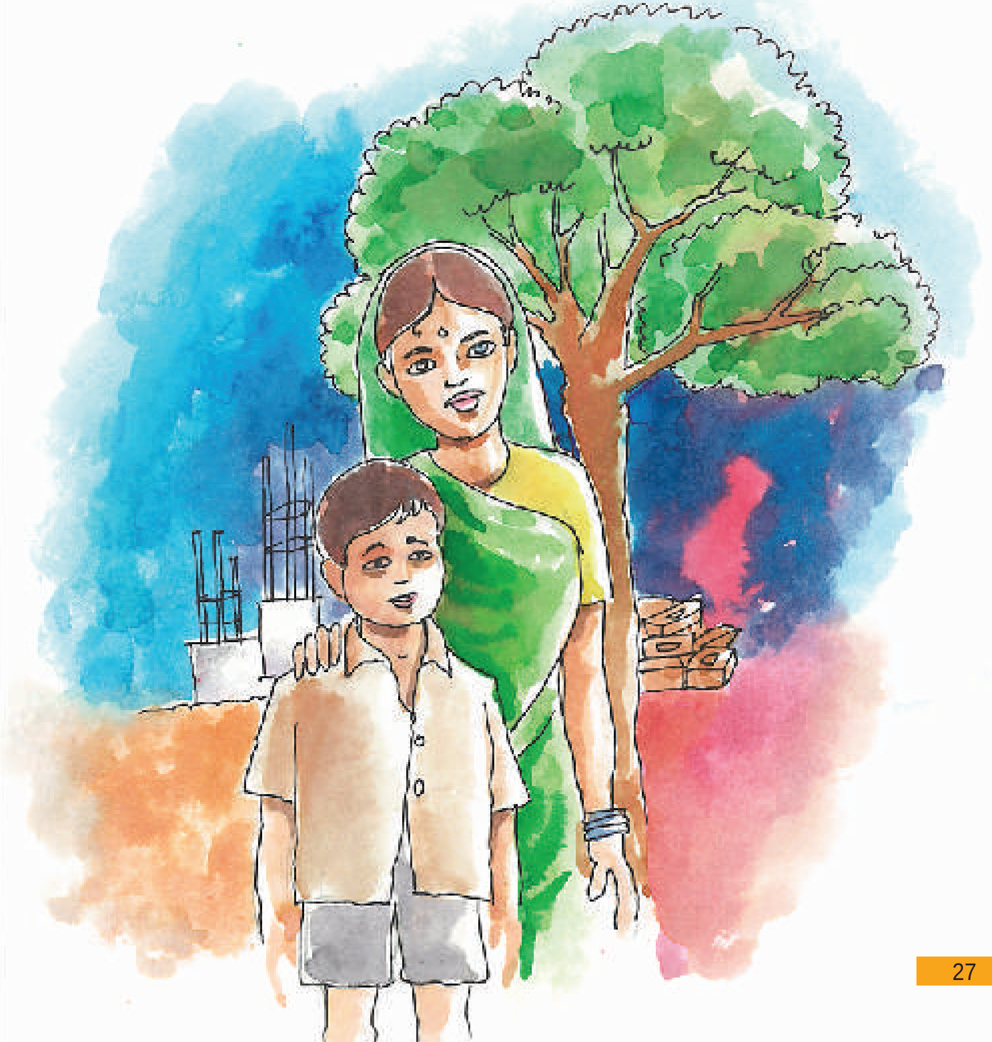

संभालते?' उसने कहा- 'मेरे बेटे की बीवी का लड़का है।' मैंने कहा- 'यह कौन-सा रिश्ता हुआ भला ?' उसने ठंडी आह भरी- 'भैया इसकी कहानी क्या बताऊँ, हुआ यूँ कि मेरे बेटे ने एक विधवा से शादी कर ली। उसके साथ ये बेटा भी आया। बाद में दोनों की नहीं पटी। मेरे बेटे ने भी दूसरी शादी कर ली और इसकी माँ ने भी, लेकिन दोनों में से कोई इसे साथ नहीं ले गया। मुझसे इस मासूम की फजीहत देखी नहीं गई। तब से यह मेरे पास है। चाहे किसी भी रिश्ते से हो, लेकिन है तो मेरा पोता ही...।' ■

लाख टके की बात

सृजनात्मक बनो। तुम क्या कर रहे हो, इसकी चिंता मत करो। जो करो दिल से करो, तब तुम्हारा काम पूजा बन जाएगा। तुम कुछ भी करोगे प्रार्थना हो जाएगी। तुमने सृजन किया, तुम आनंदित हुए...तुम तृप्त हो गए।

■ पुराने वफ़ादार

उस दिन फुर्सत में था और एक परिचित के मेडिकल स्टोर पर बैठा गपशप कर रहा था। दुकान बंद होने का समय हो रहा था। उन्होंने नौकर को आवाज़ दी और सामने की होटल से बीस रोटियाँ लाने को कहा। मुझे आश्चर्य हुआ। 'भाभी पीहर गई हैं क्या?' उन्होंने कहा-'नहीं।' 'फिर होटल से रोटियाँ ? वे बोले-'यूँ ही।' मैं पूछता रहा, वे टालते रहे। जैसे-जैसे वे टालते, मेरी उत्सुकता बढ़ती जाती।

जब मैने जानने की ज़िद पकड़ ली तो उन्होंने जवाब दिया- 'ये रोटियाँ अपने साथ घर ले जाता हूँ। घर पहुँचकर गाड़ी खड़ी करता हूँ और मोहल्ले के लावारिस कुत्तों को आवाज़ देता हूँ। वे एक-एक कर इकट्ठे हो जाते हैं और मैं उन्हें रोटियाँ खिला देता हूँ।' मेरी आँखों में सवाल देखकर उन्होंने इसका

फ़लसफ़ा बताया- 'ग्लोबलाइज़ेशन के इस युग में रईसी दिखाने के लिए लोग कुत्ते भी विदेशी पालने लगे हैं। इन देसी कुत्तों को कोई नहीं पूछता, जबकि ये उन्हीं कुत्तों के वंशज हैं जो हमारे पूर्वजों के वफ़ादार थे। हमारे पुरखों की रखवाली के लिए इनके पूर्वजों ने कितने रतजगे किए होंगे। इसलिए मैं शेरू और मोती के लिए रोटी ले जाता हूँ, जिनका हिस्सा पूसी और जूली के पास चला गया है।'

लाख टके की बात

खुशियाँ बटोरते-बटोरते उम्र गुज़र गई, लेकिन एक दिन पता चला कि खुश तो वे हैं जो औरों को खुशियाँ बाँटते हैं। जिस जिस दिन आपने अपनी ज़िंदगी दिल से जी ली बस वही दिन आपके है..... बाकी सब तो कैलेंडर में लिखी तारीखें हैं।

हारने का आनंद

बौने क़द के ऊँचे लोग

अँधेरे की चादर समेट रही थी और सूरज पूरब पर लाल रंग चढ़ा रहा था। पक्षियों की चहचहाट और मुर्गे की बाँग के बीच शहर अगड़ाई ले रहा था, आँखें मल रहा था, उसकी नींद खुल रही थी। सड़क पर इक्का-दुक्का लोग थे और वह भी मॉर्निंग वॉक करने वाले। रोज़ की तरह सामने पिता-पुत्र की जोड़ी दिख गई। हमेशा की तरह वृद्ध पिता आगे-आगे चल रहे थे और जवान बेटा दस क़दम पीछे। यह देखकर फिर मुझे आश्चर्य होता, लेकिन आज मुझसे रहा न गया। प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए मैं धीरे से बेटे के साथ हो लिया और हौले से पूछ ही लिया- 'हमेशा देखता हूँ, बाबूजी बुज़ुर्ग होकर भी तुमसे आगे निकल जाते हैं और तुम जवान होकर भी पीछे रह जाते हो। क्या कारण है?'

वह मेरे कान के क़रीब आकर फुसफुसाया- 'मेरी स्पीड या हौसला कम नहीं है, लेकिन मैं जान-बूझकर पीछे चलता हूँ। मैं नहीं चाहता कि बाबूजी को ज़रा भी महसूस हो कि वे बूढ़े और कमज़ोर हो गए हैं।'

लाख टके की बात

तीन लोगों को हमेशा ध्यान रखना चाहिए...

पहला- जिसने तुम्हें जिताने के लिए
बहुत कुछ हारा हो, यानी पिता।

दूसरा- जिसको तुमने हर दुख में पुकारा हो,
यानी माँ।

तीसरा- जिसने सबकुछ हारकर तुमको जीता हो,
यानी जीवनसाथी।

अहसान

एक अधिकारी थे। उनके पुश्तैनी गाँव का एक व्यापारी उनके परिवार को हमेशा सताता रहता था। उससे सभी बेहद तंग थे। जब वे उस क्षेत्र के एसडीएम बनकर आए तो उन्होंने पिता से कहा कि अब इस व्यापारी को छठी का दूध याद दिलाता हूँ।

पिता ने तुरंत रोका- 'बेटा, ऐसा कभी मत करना। यह व्यापारी स्कूल के दिनों में मेरा सबसे अच्छा दोस्त था। अपने समाज में एक रिवाज है कि अगर किसी बच्चे की असामायिक मृत्यु हो गई हो तो उसे दफ़नाने के लिए पिता अपनी गोदी में लेकर नहीं जाता। उस समय किसी न किसी को इसके लिए

अपनी गोद आगे करनी पड़ती है। अपशकुन मानकर लोग ऐसा करने से घबराते हैं और आगे नहीं आते। तेरी माँ ने तुझसे पहले एक बच्चे को जन्म दिया और उसकी मौत हो गई। उस समय शकुन-अपशकुन की परवाह न करते हुए इस व्यापारी ने मिट्टी हो चुके फूल से बच्चे को गोदी में उठाया और अंतिम संस्कार करने गया। यह अहसान मरते दम तक कभी मत भूलना।'

लाख टके की बात

कुछ नाते होते हैं घड़ी के काँटों की तरह। एक ही घड़ी में बँधकर भी लंबे समय तक एक-दूसरे से मिल नहीं पाते, मिलते भी हैं तो कुछ देर के लिए... लेकिन हमेशा जुड़े रहते हैं एक-दूसरे से।

शुक्रिया परवरदिगार का

बौने क़द के ऊँचे लोग

एक बुज़ुर्ग थे... याक़ूब सेठ। अपने दोस्त महमूद पहलवान के साथ वे एक गली से गुज़र रहे थे। रात हो गई थी। बिजली नहीं थी। रास्ते में सरिये से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली खड़ी थी। बातों में मस्त दोनों चले जा रहे थे। याक़ूब सेठ को अचानक ज़ोर से कुछ चुभा। ट्रॉली में भरा सरिया उनके उनके बाज़ू में चुभा था। ख़ून से लथपथ हो गए थे। दूसरे दिन उनसे मेरी मुलाक़ात हुई।

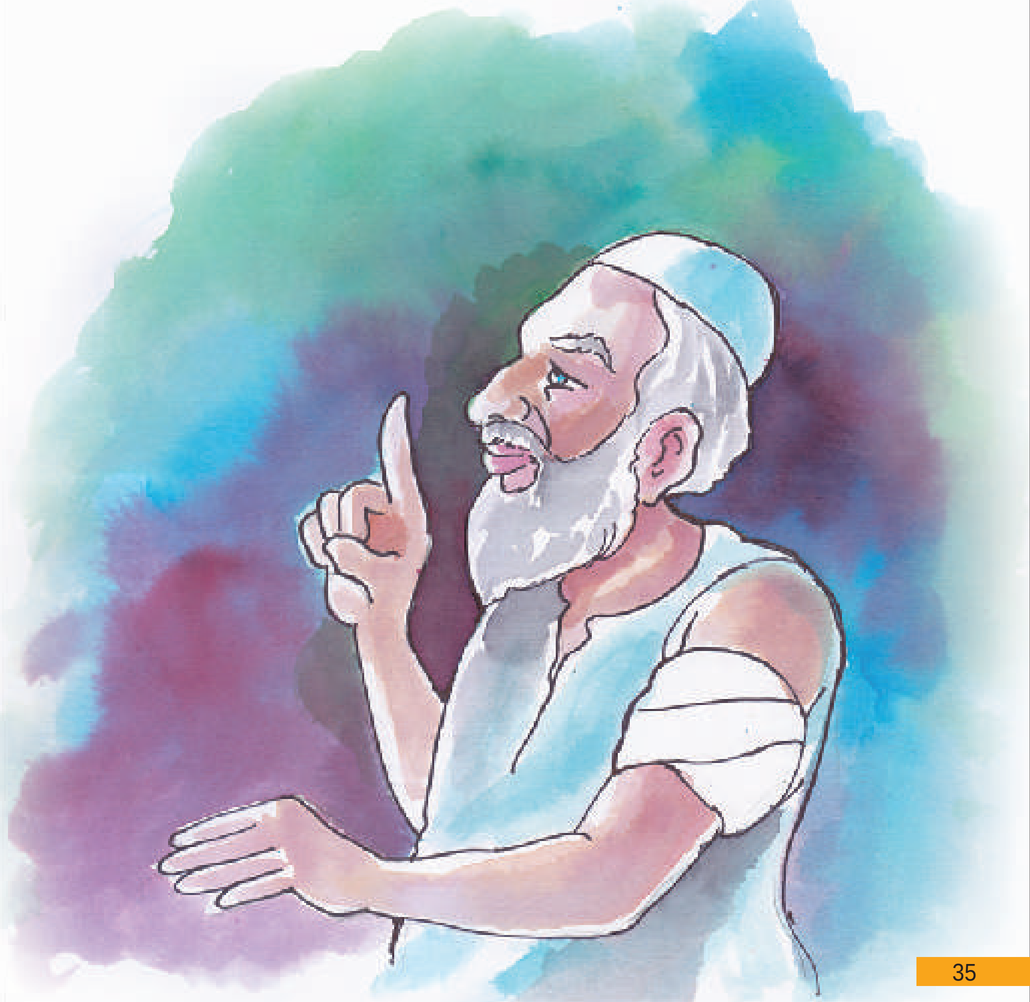

मैने कहा- 'चचाजान, उस ट्रॉली वाले की लापरवाही से आपको इतनी जमकर चोट लगी। आपने उसकी पिटाई क्यों नहीं की ?' याक़ूब सेठ के हाथ दुआ के लिए उठ गए। बहुत ही शांत भाव से बोले- 'कल उस ट्रॉली के सरिये से मैं मर भी सकता था। परवरदिगार ने मुझे जान बख्श दी। उस ट्रॉली वाले से गाली- गलौज या मारपीट के चक्कर में अगर मैं उस समय ख़ुदा का शुक्रिया अदा करना भूल जाता तो क्या मुझे ख़ुदा कभी माफ़ करता ?'

लाख टके की बात

अगर हम किसी को तकलीफ दे रहे हैं तो प्रभु से स्वंय के लिए ख़ुशी की उम्मीद न रखें..... अगर हम तकलीफ़ पा कर भी किसी को ख़ुशी दे रहें हैं तो फिर अपनी ख़ुशी की फ़िक्र न करें।

तक़दीर और तदबीर

बौने क़द के ऊँचे लोग

यूँ तो वह पान वाला था, लेकिन जब भी पान खाने जाओ तो ऐसा लगता था कि वह हमारा रास्ता ही देख रहा हो। दर्शन हो या साहित्य, हर विषय पर बात करने में उसे बड़ा मज़ा आता था। उसके पास जब भी जाओ बातों का ख़ज़ाना तैयार रहता था। कई बार उससे कहा कि भाई देर हो जाती है, जल्दी पान लगा दिया करो, पर उसकी बात ख़त्म नहीं होती।

एक दिन अचानक कर्म और भाग्य पर बात शुरू हो गई। तक़दीर और तदबीर की। मैने भी सोचा कि आज इसकी फ़िलॉसफ़ी देख ही लेते हैं। कम से कम आगे से दिमाग़ चाटना तो बंद ही कर देगा। मेरा सवाल था- 'बताओ आदमी मेहनत से आगे बढ़ता है या भाग्य से?' उसके जवाब ने मुझे चकित कर दिया। जाले मेरे दिमाग़ के साफ़ हो गए।

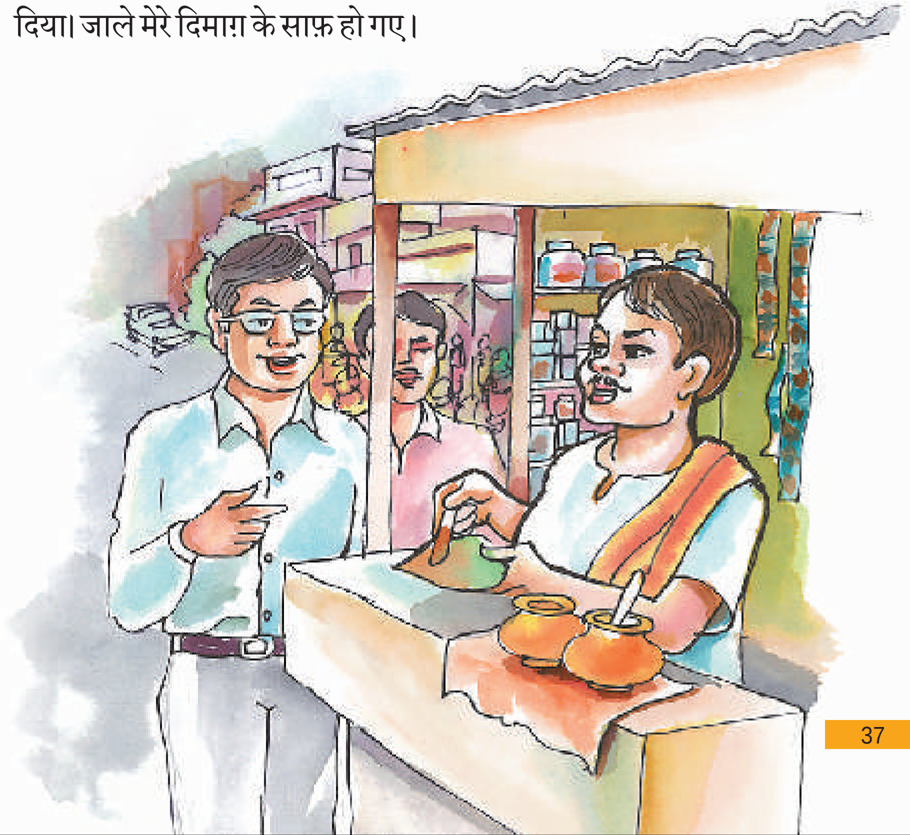

कहने लगा- ‘आपका किसी बैंक में कोई लॉकर तो होगा ही। उसकी चाबियाँ ही हैं इस सवाल का जवाब। हर लॉकर की दो चाबी होती है। एक अपने पास होती है और एक मैनेजर के। अपने पास जो चाबी है वह है परिश्रम और मैनेजर के पास वाली है भाग्य। जब तक दोनों चाबियाँ एकसाथ नहीं लगतीं ताला नहीं खुल सकता। आप कर्मयोगी पुरुष हैं और मैनेजर भगवान। अपन को अपनी चाबी लगाते रहना चाहिए, पता नहीं ऊपर वाला कब अपनी चाबी लगा दे। कहीं ऐसा न हो कि भगवान अपनी भाग्यवाली चाबी लगा रहा हो, हम परिश्रम वाली चाबी न लगा पाएँ और ताला खुलने से रह जाए।’

लाख टके की बात

दो अक्षर का ‘लक’, ढाई अक्षर का ‘भाग्य’, तीन अक्षर का ‘नसीब’, साढ़े तीन अक्षर का ‘क़िस्मत’, सभी चार अक्षर के ‘मेहनत’ से छोटे होते हैं।

साइड इफ़ेक्ट

बौने क़द के ऊँचे लोग

व्यापार के साथ वे हमेशा सामाजिक कार्यों में भी लगे रहते थे। आज के इस दौर में शादी-ब्याह, सगाई-संबंध के बीच में पड़ने वाले लोग कम ही मिलते हैं। उन्हें अपना धन और समय दोनों लगाकर जोड़ी जमाने में मज़ा आता था। सगाई के बाद शादी के कामों की ज़िम्मेदारी लेने में भी उन्हें कभी पीछे हटते नहीं देखा। बैठे-बैठे सहज ही बात होने लगी। मैंने कहा- ‘भाई साहब! आप चाहे अपना सिर काटकर रख दो, लेकिन मेरा अनुभव है कि पीठ पीछे लोग गालियाँ ही देते हैं। लानत-मलानत करते हैं।’ वे बोले-‘तुम क्या समझते हो कि मुझे यह सब नहीं पता।’ ‘फिर आप इन कामों में क्यों उलझे

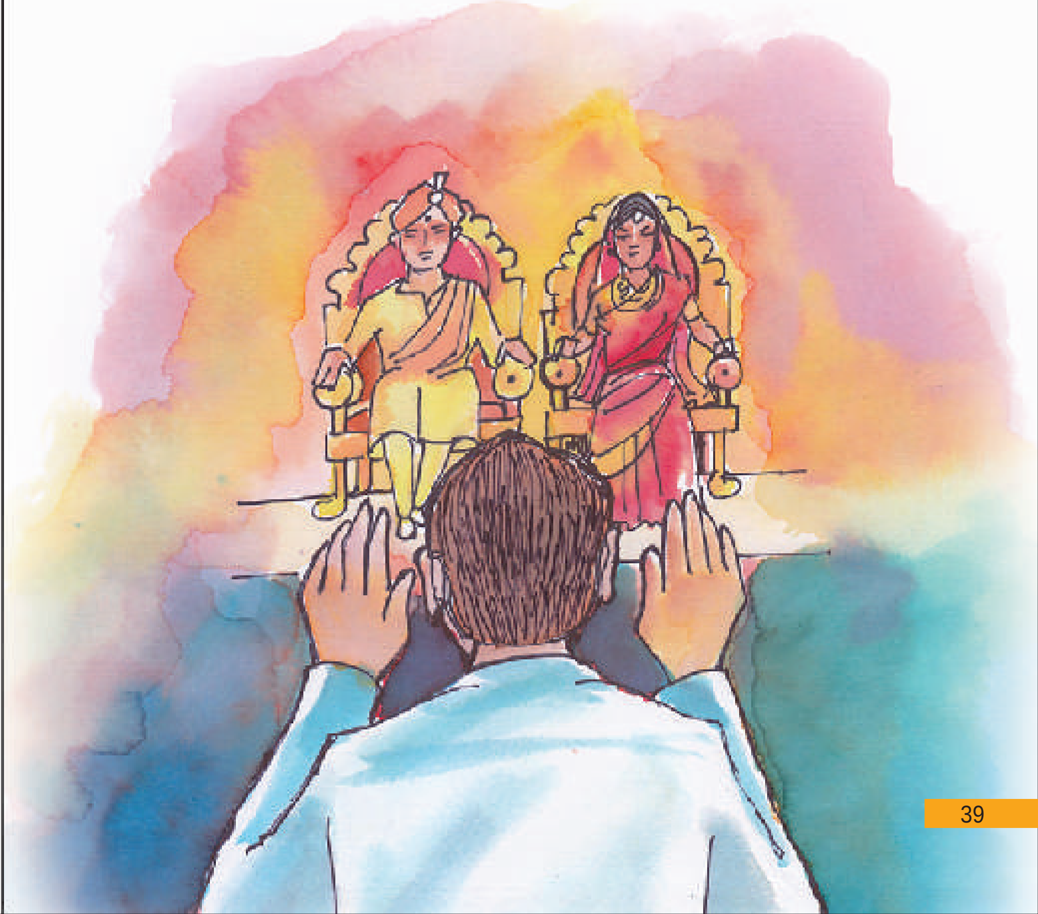

रहते हो ?' वे कहने लगे- 'मुझे पता है कि परोपकार या परमार्थ करने के बाद जहालत और बदनामी भी मिलती है, लेकिन आप एक बात बताओ कि किस काम में साइड इफ़ेक्ट नहीं है? कार या बाइक में चलते समय एक्सीडेंट हो सकता है, तो क्या हम इस डर से गाड़ियाँ चलाना बंद कर देते हैं? व्यापार बढ़ने से, दूसरों की नज़र में आने से आयकर का छापा पड़ सकता है, इस डर से क्या हम कारोबार समेटते हैं? सच तो यह है कि जो हमारे फ़ायदे के काम हैं, उनके साइड इफ़ेक्ट जानते हुए भी हम उन्हें करते हैं, लेकिन सामाजिक ज़िम्मेदारियों का मसला आता है तो बदनामी का बहाना बनाकर हम उससे पल्ला झाड़ लेते हैं।' इस जवाब ने मुझे निरुत्तर कर दिया। ■

लाख टके की बात

ऐसा नहीं कि ज़िंदगी बहुत छोटी है.... दरअसल हम ''जीना'' ही बहुत देर से शुरू करते है...... फ़लसफ़ा बस यही है कि लोगों के काम आते रहो, बड़े आदमी बन जाओगे।

■ हर आदमी में होते हैं दस-बीस आदमी

बौने क़द के ऊँचे लोग

कारोबार के शुरुआती दिन थे और साधन बेहद सीमित। व्यापार चल निकला और लगातार बढ़ता गया, साथ में पूँजी की तकलीफ़ भी बढ़ती गई। बैंकों के चक्कर काट लिए, लेकिन कहीं बात नहीं बनी। तभी एक शुभचिंतक ने जुगाड़ लगाई और कहा कि एक अधिकारी से मेरी बात हो गई है, रविवार को पेपर लेकर उनके घर चले चलना, काम हो जाएगा। साहब का ख़र्चा-पानी लगेगा, साथ लेकर चलना। एक-एक रुपए की तकलीफ़ थी सो ख़र्चा-पानी सुनकर हाथ-पाँव फूल गए। मरता क्या न करता? तैयारी के साथ मुक़र्रर वक़्त पर उनसे मिलने गए। साहब ने नगद रुपए रखवा लिए और दो दिन में काम कर दिया।

कुछ माह बाद एक दिन साहब अचानक दुकान पर पधारे। मुझे आश्चर्य हुआ कि इतना व्यस्त और बड़ा अफ़सर मेरी इस छोटी-सी दुकान पर। अंदर आते ही बोले- 'यार मेरी कार का ट्यूब ख़राब हो गया है,

एक निकलवा देना।' ट्यूब मैंने उनके सुपुर्द की। उन्होंने पैसे पूछे। हाथ जोड़कर मैंने कहा- 'साहब आपकी कृपा से ही आज यह दुकान चल रही है। आपने ऐसे समय में हमारा लोन स्वीकृत किया, जब हमारे लिए एक-एक रुपए एक-एक लाख के बराबर थे। मैं आपसे ट्यूब के पैसे नहीं ले पाऊँगा।'

वे तुरंत कुर्सी से खड़े हो गए और बोले- 'आप मुझसे पूरे पैसे लेंगे, उतने ही जितने आम ग्राहक से लेते हैं। कोई स्पेशल डिस्काउंट नहीं। मैंने लोन पास करने के लिए आपसे ख़र्चा लिया था ना, क्या आपका काम फ्री में किया? मेरा सिद्धांत है कि मैं काम करने के लिए रुपए लेता हूँ, लेकिन किसी भी क्लाइंट से एक रुपए का भी काम फ्री में करवाया हो तो मुझे ईश्वर की सौगंध।' पूरे पैसे देकर ही वे ट्यूब ले गए।

मैं आज भी तय नहीं कर पाता कि उस अफ़सर को भ्रष्ट मानूँ या ईमानदार। रिश्वत लेने के लिए गाली दूँ या लेन-देन की नैतिकता के लिए शाबासी। बार-बार निदा फ़ाज़ली याद आते हैं-

हर आदमी में होते हैं दस-बीस आदमी
जिसको भी देखना, कई बार देखना।

लाख टके की बात

यह पागलपन है कि आप गुलाबों से नफ़रत करने लगे क्योंकि एक बार आपको काँटा चुभ गया। सपने देखना छोड़ दिया क्योंकि एक सपना अधूरा रह गया। प्रार्थना करना छोड़ दिया क्योंकि एक प्रार्थना सुनी नहीं गई। मित्रों पर भरोसा करना छोड़ दिया क्योंकि उसने एक बार धोखा दिया।... एक कोशिश और कीजिए, हो सकता है सूरज के आने के पहले यह छोटी-सी एक रात हो।

नींव की पूजा

मुख्यमंत्री रुके हुए थे इसलिए सर्किट हाउस में बड़े-बड़ों का जमावड़ा था। रात्रि विश्राम कर सुबह रवाना हो रहे थे। हेलीपैड पर प्लेन तैयार था। उन्हें निकलने में पहले ही देर हो चुकी थी, लेकिन कार्यकर्ता और अधिकारी बार-बार रोक लेते थे। जैसे-तैसे भीड़ भेदकर बाहर आए और कार में बैठे। काफ़िला तैयार था, सायरन बजने लगा। कलेक्टर- एसपी भी पीछे वाली कार में बैठ गए।

सरकारी लाव-लश्कर दो क़दम भी आगे नहीं बढ़ा था कि मुख्यमंत्री ने ड्राइवर को कार रोकने का इशारा किया। क़ाफ़िला जहाँ का तहाँ ठहर गया। प्रशासन के होश उड़ गए। क्या हुआ? मुख्यमंत्री ने खिड़की से बाहर झाँका और पूछा-'वो सर्किट हाउस वाले दादा हैं न! क्या नाम हैं उनका?... हाँ रामखिलावन... बुलाइएगा उनको।' दादा से पहले पीडब्ल्यूडी के ईई आ गए और पूरी तरह झुक गए। 'राजा साहब क्या गुस्ताख़ी हुई इससे?'

तब तक दादा भी गए। मुख्यमंत्री ने पर्स से पाँच सौ का नोट निकाला और दादा को देते हुए बोले-'रामखिलावन अच्छी सेवा करते हो। इसी तरह सबकी ख़ातिरदारी किया करो।' फिर ईई को समझाइश दी-'सेवाभावी आदमी है, देखिएगा इन्हें कोई कोई तक़लीफ़ न होने पाए।' दादा की आँखों से ख़ुशी के आँसू बह रहे थे और मुख्यमंत्री का क़ाफ़िला रफ़्तार पकड़ चुका था। ■

लाख टके की बात

लोग कहते हैं कि बड़े लोग हैं इसलिए उदार हैं, जबकि ऐसा नहीं है... वे उदार हैं इसलिए बड़े हैं... फ़लसफ़ा यह है कि अगर आप ख़ुश रहना चाहते हैं तो दूसरों के लिए ख़ुशी का कारण पैदा कीजिए। आप अमीर होना चाहते हैं तो अपने आसपास अमीरी फैलाइए।

■ क्षमा बड़न को शोभती

गर्मियों की छुट्टियाँ मामाजी के घर में बीत रही थीं। रात तीसरे प्रहर में रही होगी कि अचानक ख़ामोशी को चीरती आवाज़ सुनाई दी-चोर...चोर, पकड़ो...पकड़ो। हॉल में सो रहे सारे बच्चे जाग गए। बाहर आकर देखा तो चौकीदार ने एक चोर को पकड़ रखा था। पता चला कि वह दीवार फाँदकर घर के अंदर घुस रहा था। मामाजी, चौकीदार और तीन-चार लोग उसे थाने ले गए। साथ में मैं भी हो लिया।

मामाजी को देखते ही थानेदार कुर्सी से खड़ा हो गया। तब मामाजी का रसूख देखा। उसने मामला समझा और चोर को दो बेंत लगाकर कोने में बैठा दिया। बल्ब की रोशनी में चोर का हुलिया साफ़ दिखाई दे रहा था।

बढ़ी दाढ़ी, बेतरतीब बाल, फटी बनियान, ढीला पाजामा, अधेड़ उम्र। मारे डर के मई भी उसे कँपा रही थी। थानेदार ने मामाजी और हमारे लिए चाय बुलवाई और कहा कि आप तो चाय लीजिए, इसे मैं देख लूँगा।

सबको चाय देने के बाद मामाजी ने कहा कि एक प्याली इस चोर को भी दे दीजिए। थानेदार थोड़ा असहज हो गए और बोले- 'भाऊ ये क्या कर रहे हो?' मामाजी बोले- 'देखो भैया, वो भी आख़िर है तो इंसान ही न...और चोरी कौन अपनी ख़ुशी से करता है। थानेदार साहब, वो तो इसे पीटना और चमकाना मेरे बूते का नहीं था इसलिए आपके पास ले आया। मेरा निवेदन है कि इसे रातभर बैठा के छोड़ दीजिएगा।...और हाँ मारिएगा मत।'

मुझे उस समय मामाजी में वो अरिहंत भगवान नज़र आए जो अपने ऊपर उपसर्ग करने वाले को भी क्षमादान देते थे। ■

लाख टके की बात

'क्षमा' शब्द स्वयं अपना अर्थ बयान कर देता है। यह शब्द 'क्ष' और 'मा' अक्षर से बना है। 'क्ष' अक्षर को गाँठ बनाकर लिखना पड़ता है, जबकि 'माँ' बिना किसी पेंच या गाँठ के।

■ जो लंबी उम्र देना हो तो ख़िदमदगार बेटे दे

अगस्त का आख़िरी सप्ताह था। बाहर बूँदाबाँदी हुई थी। मौसम ख़ुशनुमा था, लेकिन मन बेहद मायूस। एबी रोड पर दौड़ते वाहनों के शोरगुल के बावजूद दिल में एक अजीब-सा अकेलापन ठहर गया था। 77 बरस की उम्र में पहली बार बाबूजी अस्पताल में भर्ती हुए थे और वह भी सीधे आईसीयू में। वे आईसीयू में अकेले कैसे लेटे होंगे, सोचकर कलेजा फट रहा था। इंदौर के उस अस्पताल में मिलने वालों को ताँता लगा था। अवसाद, तनाव और आँसुओं को अंदर ही अंदर पीते हुए हर आने-जाने वाले को मुस्कुराते हुए अटेंड करना पड़ रहा था। बीच-बीच में कुछ लोग पीठ ठोक जाते- 'बाबूजी भाग्यशाली हैं कि आप जैसे बच्चे उन्हें मिले हैं और दिन-रात सेवा कर रहे हैं। तुरंत खंडवा से इंदौर ले आए।' गाहे-बगाहे हमें भी थोड़ा संतोष मिलता कि बाबूजी के लिए कुछ कर पा रहे हैं।

रात के दस बज रहे थे, मिलने वाले जा चुके थे। टहलने के लिए नीचे गेट पर आ गया। तभी मेरी नज़र एक पुरानी जीप पर गई। लगभग पचास साल का ठिगना-सा अधेड़ बूढ़ी महिला को आहिस्ता-आहिस्ता जीप से नीचे उतार रहा था। शायद दोनों माँ-बेटे थे। उसे देखकर तीन-चार वार्ड बॉय और चौकीदार इकट्ठे हो गए। लगा कि अस्पताल के कर्मचारी उससे पहले से परिचित हैं। सभी उन्हें लिफ़्ट से ऊपर ले जाने लगे। मुझे भी ऊपर आना था, साथ हो लिया। महिला डायलिसिस रूम में चली गई और वार्ड बॉय के साथ बेटा वेटिंग हॉल में मेरे साथ बैठ गया।

'कहाँ से आए हो काका?' वे कुछ जवाब देते उसके पहले ही वार्ड बॉय महेश, जो मेरा भी परिचित हो चुका था, धाराप्रवाह बोलने लगा- 'भैया, ये काका उज्जैन से आए हैं। महिला इनकी माताजी हैं। ये मोटर वाइंडिंग

मैकेनिक हैं और सप्ताह में दो बार माताजी की डायलिसिस कराने लाते हैं।' 'कब से आ रहे हैं?' 'छह साल हो गए।' मैं ठहरा बनिया, हिसाब लगाने बैठ गया। 'सप्ताह में दो बार, एक साल में सौ तो क्या छह सौ बार आ गए ?' काका बोले- 'भैया, हिसाब तो नहीं लगाया पर हो गया होगा।' 'इतना ख़र्च कैसे उठा लेते हो?' मोटर वाइंडिंग में इतनी ज़्यादा कमाई थोड़े ही होगी?' काका ने कहा- 'भैया, माँ पर किए ख़र्चे पर क्या विचार और क्या हिसाब?'

जन्म देने वाली माँ के लिए अगर चमड़ी के जूते बनाकर भी बेचने पड़े तो भी क्या पीछे हटना?' मैं अपने आप उसके सामने झुक गया और उसके पाँव छुए, लगा जैसे साक्षात श्रवण कुमार के दर्शन कर लिए हों। धीरे-धीरे चलते हुए आईसीयू के अंदर बाबूजी के पास जाकर खड़ा हो गया। मुझे हमारी सेवा छोटी लगने लगी और काका की आसमान से भी ऊँची। काका के सामने अचानक मेरा क़द बहुत छोटा हो गया।

लाख टके की बात

हर मंज़िल पर पहुँचने के बाद जब-जब मैंने पलटकर देखा तो मुझे कहीं भी मेरे क़दमों के निशान नज़र नहीं आए, नज़र आए तो हथेलियों के निशान। ये वो सहारे थे, जिनके बूते मैं यहाँ तक पहुँचा था। वो हथेलियाँ थीं मेरी माँ की।

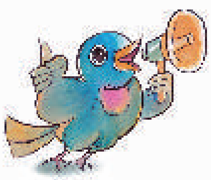

राजा से बड़े रंक

बौने क़द के ऊँचे लोग

मुंबई महानगर। सूरज पूरी तरह डूब चुका था और रात पर बिजली की रंग-बिरंगी रोशनी कब्ज़ा कर चुकी थी। मैं उल्हास नगर के अंबरनाथ लोकल स्टेशन पर खड़ा था। एक के बाद एक लोकल ट्रेन आ-जा रही थीं। भागते लोगों के चेहरे पर दिनभर की थकान के बाद भी घर पहुँचने का सुकून नज़र आ रहा था। अचानक मेरी नज़र प्लेटफ़ॉर्म के दूसरी ओर बैठे भिखारियों के एक बड़े झुंड पर गई। भिखारियों की इतनी बड़ी संख्या देख मुझसे रहा नहीं गया और पास जाकर मैं उनकी बातें सुनने लगा। जो कुछ देखा-सुना चमत्कृत करने वाला था।

ये सारे भिखारी अंबरनाथ स्टेशन के आसपास रहते हैं। रोज़ सुबह अपने-अपने तयशुदा क्षेत्र में भीख माँगने निकल जाते हैं। कोई भी दूसरे के क्षेत्र में अतिक्रमण नहीं करता। शाम को सब यहाँ इकट्ठे होकर अपनी-अपनी कमाई की चर्चा कर रहे थे। ज़्यादा कमाने वाले ख़ुश होकर अपनी आमदनी का बखान कर रहे थे और शराब आदि से जश्न मनाने की तैयारी कर रहे थे। इन्हीं भिखारियों के बीच आश्चर्य में डालने वाला दूसरा दृश्य भी था। एक ऐसा दृश्य जो आज की गला काट प्रतिस्पर्धा में एक सबक़ है। जिन भिखारियों की ज़्यादा कमाई नहीं हुई थी उन्हें एक तरफ़ कर दिया गया। फिर वे सारे भिखारी जिनकी उस दिन ज़्यादा कमाई हुई थी, उनके कटोरे में एक-एक सिक्के डालने लगे। देखते ही देखते निराश और उदास भिखारियों का कटोरा भी पूरी तरह भर गया। उनके भी खाने और जश्न की व्यवस्था हो गई। मुझे उन भिखारियों का क़द किसी राजा से बड़ा दिखाई दे रहा था। ■

लाख टके की बात

पत्तों की तरह होती है कई रिश्तों की उम्र। आज हरे तो कल सूख गये। यों ना जड़ों से सीखें रिश्ते निभाना.... रिश्ते और रास्तों में हम लंबे समय तक इंतज़ार करते हैं एक आदर्श पथ का, लेकिन यह भूल जाते हैं कि रास्ते चलने से बनते हैं, इंतज़ार करने से नहीं.......

धीरज मोठी बात छे

पीक सीजन का समय था। दुकान पर आए उस युवक की वेशभूषा साधारण थी, लेकिन चेहरे पर ग़ज़ब का आत्मविश्वास। मैं बेहद व्यस्त था। लगभग आधा घंटे बाद बातचीत शुरू कर पाया। उसने अपना परिचय दिया कि वह इंदौर की एक ट्यूब कंपनी से आया है और फिर प्राइज़ लिस्ट और सेंपल आगे कर दिया। प्राइज़ लिस्ट और सेंपल पर ग़ौर किए बिना ही मैंने उसे यह कहते हुए इंकार कर दिया कि मैं बरसों से एक अन्य जगह से ट्यूब लेता हूँ। मेरा कारोबारी सिद्धांत है कि जब तक कोई बहुत बड़ी दिक़्कत न आए मैं व्यवहार नहीं तोड़ता। वह थोड़ा मायूस ज़रूर हुआ, लेकिन निराशा को चेहरे पर हाज़िर नहीं होने दिया। उसने तुरंत कहा- 'कोई बात नहीं...एक गिलास पानी मिलेगा क्या?' पानी पीकर बड़ी विनम्रता से अभिवादन कर चला गया।

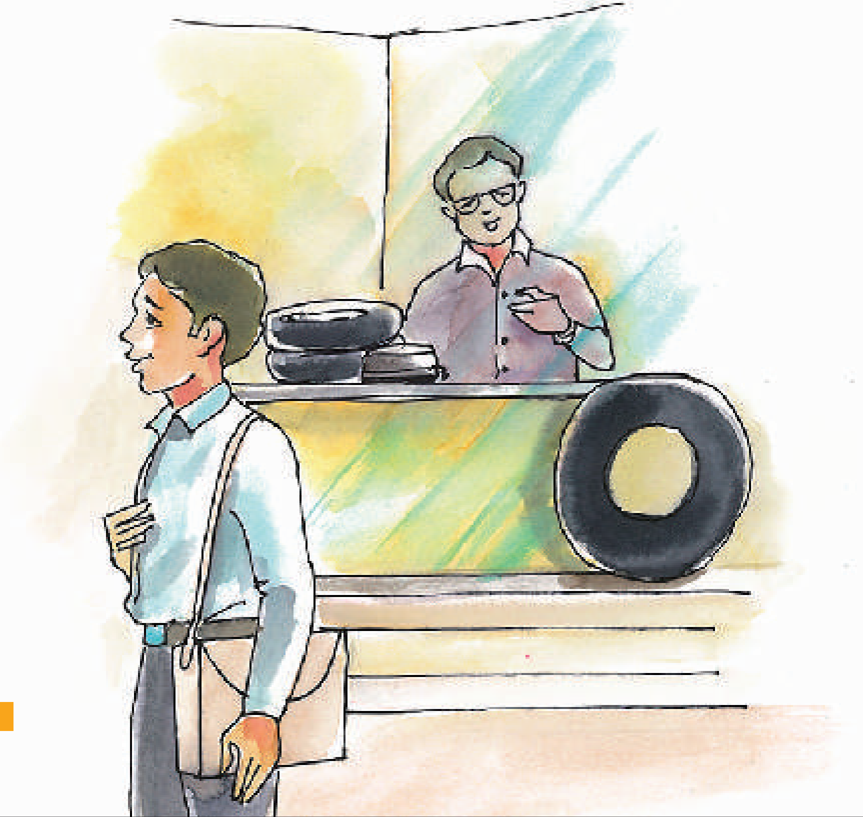

अगले मंगलवार फिर आया और बोला- 'मैं होटल का पानी नहीं पीता। पास से गुज़र रहा था, सोचा पानी पीता चलूँ। मिलेगा क्या एक गिलास?' पानी पीकर चुपचाप दस-पंद्रह मिनट तक बैठा रहा, इधर-उधर देखता रहा, अख़बार के पन्ने पलटते रहा और व्यवसाय की कोई बात किए बग़ैर विनम्र अभिवादन कर चला गया। फिर तो जैसे हर सप्ताह का नियम बन गया। हर मंगलवार आता, पानी पीता, बैठता, पेपर पढ़ता और देश-दुनिया की बातें कर चला जाता। आठ-दस मंगलवार बीत गए, उसका यह क्रम जारी रहा। एक दिन मैंने यूँ ही कहा- 'दिखाना ज़रा अपनी प्राइज़ लिस्ट और सेंपल।' उसके चेहरे से जैसे ख़ुशी मल्हार गाने लगी। फिर तो वह ऐसा जुड़ा कि बंधन टूटा ही नहीं। बरसों से वह मुझे ट्यूब सप्लाई कर रहा है।

साधारण-सा वह सेल्समैन मुझे व्यवसाय में लगन और धैर्य का वह पाठ सिखा गया, जो शायद मैं दुनिया की किसी भी यूनिवर्सिटी में नहीं सीख पाता।

लाख टके की बात

पानी को भाप बनाना है तो सौ सेंटीग्रेड तक उबालना पड़ता है। 99 सेंटीग्रेड पर भी उबलता पानी, पानी ही रहेगा। सिर्फ एक सेंटीग्रेड का फ़र्क उसे पानी से भाप बना देता है। अगर हम 99 सेंटीग्रेड तक भी आकर रुक गए तो हमारी सारी मेहनत बेकार है। सफलता और असफलता में केवल यही एक सेंटीग्रेड का फ़र्क होता है।

बौने क़द के ऊँचे लोग

थाईलैंड के ख़ूबसूरत समुद्रतटीय शहर पटाया के साइड सीन में कोरल आईलैंड जाना था। होटल के बाहर निकले ही थे कि हमें वह टैक्सी वाला फिर मिल गया। कल से ही बोल रहा है कि शाम को वह हमें मिनी सीम, नागनुच विलेज़ एवं पटाया टावर की सैर मात्र 500 बाथ (थाईलैंड की मुद्रा) में करवा देगा। मैंने साथियों से कहा कि इससे सस्ता टैक्सी वाला नहीं मिलेगा। इसे शाम के लिए बुक कर लेते हैं। हमने दोपहर तीन बजे का समय तय कर होटल वाले की गारंटी पर उसे एडवांस पेमेंट कर दिया।

कोरल आईलैंड की लंबी सैर और ढेर सारे वाटर स्पोर्ट्स के बाद हमें आते-आते रात के आठ बज गए। हमारे इंतज़ार में थक चुका मायूस टैक्सीवाला होटल के गेट पर ही बैठा मिला। हमें देखते ही बोला- 'मैं दो बजे से बैठा हूँ। मेरा पूरा दिन ख़राब हो गया।' हमने कहा- 'कोई बात नहीं। वैसे भी हम लोग बहुत थक गए हैं, आज कहीं नहीं जा पाएँगे।' उसने कहा- 'और आपका पेमेंट!' 'तुम रख लो, तुम्हारा दिन भी तो ख़राब हो ही गया है।' उसने पूछा- 'कल का क्या प्रोग्राम है?' 'हम कल शॉपिंग और सिटी टूर पर जाएँगे।' अगली सुबह वह हमें फिर होटल के गेट पर तैयार मिल गया। दिनभर उसके साथ सिटी टूर का आनंद ले हम शाम तक वापस होटल आ गए। 'कितने पैसे हुए?' उसने कहा-'कल दे तो दिए थे।' वो तो कल के थे। वह बोला- 'लेकिन कल मैंने आपको घुमाया ही कहाँ था... मैं बग़ैर सर्विस के पैसे कैसे ले सकता हूँ। अगर मैं ऐसा करता और आप अपने देश जाकर यह कहते कि पटाया में तो टैक्सीवाला बिना घुमाए ही पैसे ले गया तो सिर्फ मैं ही नहीं, मेरा देश भी शर्मिंदा होता।' हम कुछ कहते इसके पहले तो वह कार स्टार्ट कर फुर्र हो गया और हमारे पास छोड़ गया माजिद देवबंदी का यह शेर-

सामान-ए-तिजारत मेरा ईमान नहीं है।
हर दर पे झुके सिर, ये मेरी शान नहीं है।
अल्लाह मेरे घर की बरकत न चली जाए,
दो दिन से मेरे घर कोई मेहमान नहीं है।

लाख टके की बात

भारत में पर्यटकों को बकरा समझा जाता है। हर कोई उन्हें हलाल करने की तैयारी में रहता है, जबकि एशिया के ही इन छोटे-छोटे देशों में उन्हें गाय माना जाता है। यही कारण है कि विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने में हमसे मीलों आगे हैं।

शबरी के बेर

बौने क़द के ऊँचे लोग

श्रीलंका के पर्यटन उद्योग में आतंकवाद के निशान दिखाई दे रहे थे। हालाँकि वहाँ के लोग और सरकार उसमें प्राण फूँकने के लिए बेताब थे। वर्षों की दहशत कुछ महीनों में किसी भी भूगोल के चेहरे से कैसे ख़त्म हो सकती थी? फिर भी पर्यटक धीरे-धीरे श्रीलंका पहुँचने लगे थे। इसी दौरान एक टायर कंपनी के आयोजन में वहाँ जाने मौक़ा मिला। दिनभर लगातार चलने वाली कॉन्फ्रेंस ने होटल से बाहर ही नहीं निकलने दिया। दूसरे दिन जैसे ही समय मिला हम पाँच-सात डीलर गाइड को लेकर निकल पड़े घूमने के लिए।

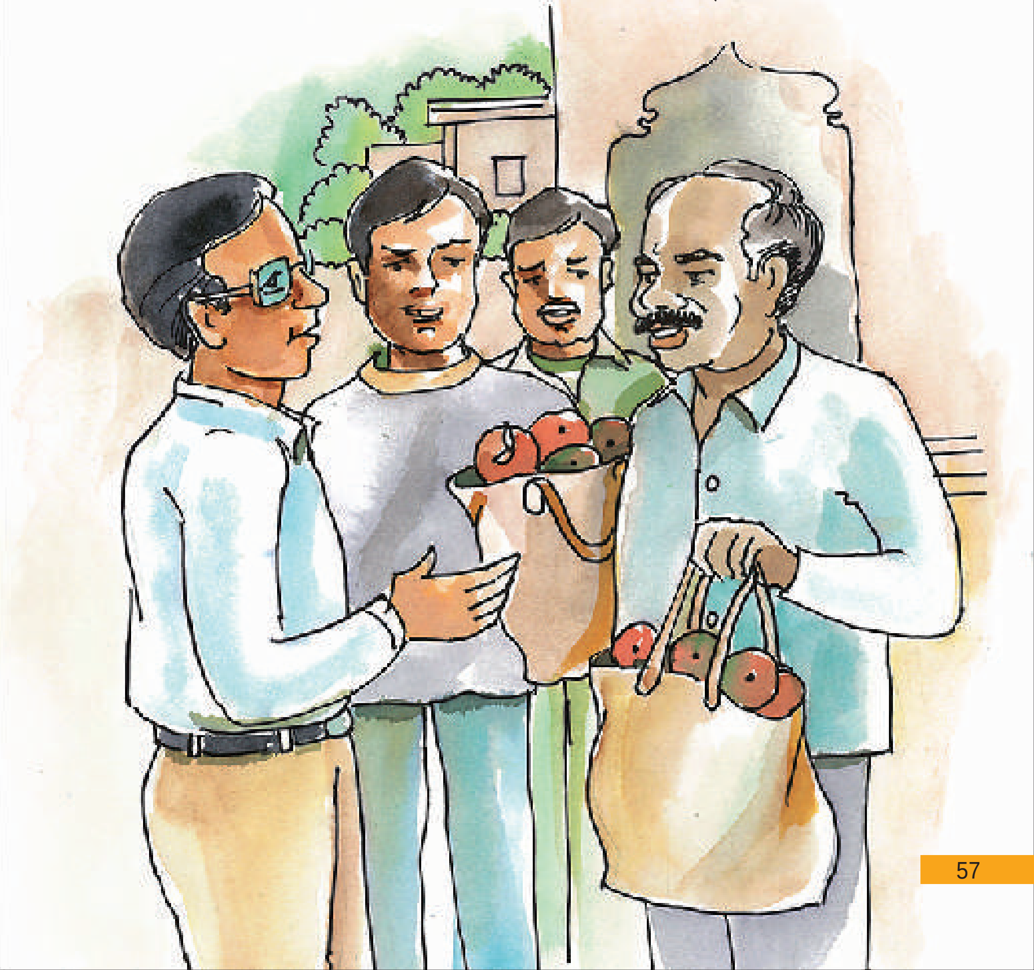

अधेड़ उम्र के गाइड विक्टर का पहनावा और चेहरे की मायूसी देखकर कोई भी उसकी माली हालत का अंदाज़ा लगा सकता था। सालों से पिटे पर्यटन उद्योग ने उसकी कमर तोड़ रखी थी। एक के बाद एक बौद्ध मंदिरों और प्राचीन इमारतों को दिखाते हुए वह सधी हुई अँग्रेज़ी में बड़े मनोयोग से श्रीलंका के इतिहास के बारे में बता रहा था। उसने सिटी टूर को शैक्षणिक और आनंददायी बना दिया। जैसे-जैसे समय बीत रहा था पेट में चूहे सौ मीटर की दौड़ लगाने लगे थे। एक डीलर ने हिंदी में कहा- 'यार बड़ा घटिया और ग़रीब शहर है, न तो कहीं नाश्ते की दुकानें हैं और न ही कहीं ढंग के फल नज़र आ रहे हैं।' उसकी बात ख़त्म भी नहीं हो पाई कि एक और बौद्ध मंदिर आ गया। वहाँ बेहद पुरानी पांडुलिपियाँ रखी हुई थीं। वापस आकर हम लोग वैन में बैठने ही वाले थे कि दोनों हाथों में बड़ी-बड़ी थैलियों में फल लिए विक्टर गेट पर खड़ा था। कहने लगा- 'मेरी माँ भारत की थी इसलिए मुझे हिंदी भी आती है। मुझे आपकी बातों से भूख और नाश्ते की इच्छा का पता चला। मैं आपके लिए कुछ फल लाया हूँ। बस एक गुज़ारिश है, कृपया आप अपने देश जाकर किसी से यह मत कहिएगा कि श्रीलंका में अच्छे फल नहीं मिलते।'

लाख टके की बात

सत्य बोलें, प्रिय बोलें
ऐसा सत्य न बोलें, जो प्रिय न हो
ऐसा प्रिय न बोलें, जो सत्य न हो।

राजदूत

बौने क़द के ऊँचे लोग

कुदरत ने धरती को कई बेहतरीन और ख़ूबसूरत नियामतें दी हैं। हरे-भरे ऊँचे पहाड़ उनमें से एक हैं। ऑस्ट्रेलिया में सिडनी के समीप थ्री सिस्टर्स या ब्ल्यू मांउटेन है। यह जितना सुंदर है, उतनी ही नज़ाकत से ऑस्ट्रेलिया के लोगों ने इसे संभाला और सहेजा है। गंदगी या कचरे का कोई नामोनिशान नहीं।

इन पहाड़ों पर खाने की कोई समुचित व्यवस्था न होने के कारण हमारा खाना होटल से पैक कर दिया गया था। मांउटेन की तलहटी के उस सुंदर बगीचे ने लंच का स्वाद कई गुना बढ़ा दिया था। कचरे को डस्टबीन में डाल हम लोग बस में आकर बैठ गए। बस स्टार्ट ही हुई थी कि हमारे साथ भारत से

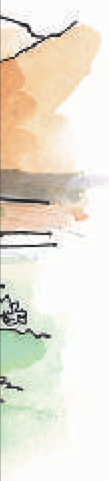

आई गाइड ने तुरंत बस रुकवा दी और सबसे इजाज़त लेकर दो मिनट के लिए नीचे उतर गई। वह तेज़ी से उस बगीचे की तरफ़ गई, जहाँ हम लोगों ने लंच लिया था। बस के काँच से साफ़ नज़र आ रहा था उसने लॉन में हममें से एक यात्री द्वारा छोड़ दिए गए ख़ाली पार्सल को उठाया और कुछ दूर जाकर डस्टबीन में डाल दिया। सधे क़दमों से वापस आकर बस में बैठ गई। देरी के कारण एक बार फिर सबसे क्षमा माँग उसने ड्राइवर को बस चलाने के लिए कहा। उसने बड़ी विनम्रता से कहा- 'हम यहाँ सिर्फ यात्री ही नहीं, भारत के राजदूत भी हैं। हमारी एक भी ग़लत हरकत सिर्फ हमारा नाम नहीं ख़राब करती, हमारे देश की छवि पर भी धक्का लगता है।' बाग में ख़ाली पार्सल छोड़कर आने वाले हमारे साथी का चेहरा देखने लायक़ था। ■

लाख टके का सवाल

अगर हमें ख़ुद को ख़ुश रखना है तो अपना नज़रिया बदलना होगा न कि दुनिया को। हम कीचड़ भरे संसार में अपने पैर साफ़ रखना चाहते हैं तो इसके दो ही तरीके हैं-या तो हम पूरी धरती को कालीन से ढँक दें या फिर स्वयं चप्पल पहन लें। किसी को बदलने में अपनी ऊर्जा बरबाद करने की बजाय अपनी सारी ऊर्जा का उपयोग स्वयं को रूपांतरित करने के लिए करें। हमारा रूपांतरण लोगों को प्रेरित करेगा।

■ बराबरी का दर्ज़ा

कहने को तो भैयाजी से व्यापारिक रिश्ता था, लेकिन वह कब व्यापार से व्यवहार और फिर परिवार में बदल गया, पता ही नहीं चला। उनके बेटे की शादी थी और सपरिवार जाना था। जीवन का अनुभव है कि जिस दिन कहीं जाना हो, उस दिन कुछ ज़्यादा ही काम आ जाते हैं। इंदौर पहुँचता तब तक बारात निकल चुकी थी। हम सीधे प्रोसेशन में शामिल हो गए। भैयाजी सहित चारों भाई एक जैसे सूट और साफे में शान से आगे-आगे चल रहे थे। उसी तरह के सूट, साफे और ठाठ के साथ पाँचवाँ शख्स भी उनके साथ था। ग़ौर से देखा तो आँखें फटी रह गईं। अरे! यह तो उनका कार ड्राइवर सलीम है।

शादी की रस्में संपन्न हो जाने के बाद रात में भैयाजी के साथ खाने के लिए बैठे। शादी की बातें निकलीं तो मुझसे रहा नहीं गया। मैने धीरे से सवाल किया-'भैयाजी, आप चारों भाइयों का तो समझ में आया, लेकिन सलीम भी उसी तरह के सूट और साफे में...?' भैयाजी मुस्कुराए और फिर कहा- 'आलोक भाई, सलीम को मेरे साथ रहते कोई तीस साल हो गए। आशीष इसी के सामने पैदा हुआ और इसी की गोद में खेलकर बड़ा हुआ। बरसों से यह हर सुख-दुख में हमारे साथ बराबरी से खड़ा है। मेरे तीनों भाई तो बाहर रहते हैं। जब वे मेरे साथ मेरे जैसा सूट और साफा पहनकर चल रहे थे तो सलीम क्यों नही? सिर्फ ख़ून के रिश्ते से ही कोई सगा नहीं हो जाता। ख़ून के रिश्ते से बड़ा है मुहब्बत का रिश्ता... और इस रिश्ते में यक़ीनन सलीम आशीष से ज़्यादा सगा है।' ■

> **लाख टके की बात**
>
> अपने अधिनस्थ को हम नौकर समझेंगे तो वे भी सिर्फ नौकरी करेंगे, अगर हम उन्हें परिवार समझेंगे तो वे भी परिवार की ज़िम्मेदारी निभाएँगे। समझने वाली छोटी सी बात यह है कि .....बड़े वह नहीं हैं जो बड़ी बातें कर लेते हैं...... बड़े वो हैं जो छोटी-छोटी बातों को समझ लेते हैं।

■ ख़ुद को सज़ा

फिर स्कूल जाने में लेट हो गया था। प्रार्थना ख़त्म हो चुकी थी और छात्र पंक्तिबद्ध होकर अपनी-अपनी कक्षा की ओर जा रहे थे। मेरे साथ देरी से आने वाले तीन छात्र और थे। हमें प्राचार्य महोदय ने रोक लिया। वे पचपन पार रहे होंगे। उनका शरीर भले गठीला था, लेकिन उम्र की थकान चेहरे से झाँक रही थी। उन्होंने कहा- 'देर से आने की सज़ा यह है कि दौड़कर मैदान के चार चक्कर लगाओ।' सज़ा सुनकर हमारे हाथ-पाँव फूल गए। मरता क्या न करता? भारी मन से दौड़ पड़े मैदान की ओर। थोड़ी देर में देखा तो प्राचार्य महोदय भी हम लोगों के पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। वे बेइंतहा हाँफ़ रहे थे, लेकिन दौड़े जा रहे थे। दो राउंड लगाकर हम रुक गए। उनकी हालत हमसे देखी नहीं जा रही थी।

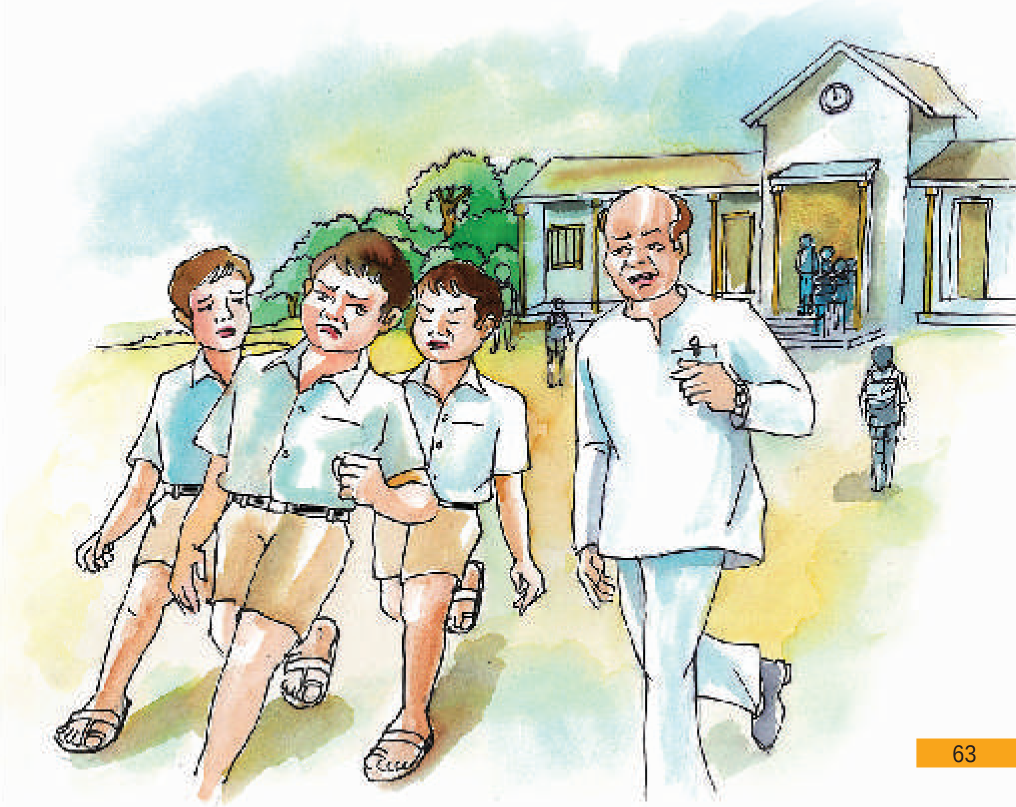

हमने निवेदन किया...‘सर आप क्यों थक रहे हैं? ग़लती तो हमारी है, हम लोग दौड़ ही रहे हैं।’ सर का जवाब सुनकर हम शर्म से पानी-पानी हो गए। बोले- ‘बेटा, अगर तमाम प्रयास के बाद भी मैं अपने छात्रों को समय की महत्ता नहीं समझा पाया तो इसका मतलब साफ़ है कि मेरे समझाने में ही कहीं कोई कमी है। जितनी ग़लती छात्रों की है, उससे ज़्यादा मेरी है। मुझे तो कोई सज़ा देने से रहा, इसलिए अपनी सज़ा मैने ख़ुद तय कर ली है। जब तक इस स्कूल के बच्चों को समय का अनुशासन नहीं समझा पाऊँगा, उनके साथ मैं भी मैदान के चक्कर लगाऊँगा।’

लाख टके की बात

बिना अनुशासन के कोई भी उपलब्धि हासिल नहीं होती। ध्वनि को अनुशासित करने से वह राग बन जाती है। शब्द अनुशासित होकर कविता बन जाते हैं। पानी को अनुशासित करने से वह नदी और नहर का रूप ले लेता है। इसी तरह जब हम कोई एक लक्ष्य निर्धारित करके उसे समय की सीमा में अनुशासित कर देते हैं तो वह हमारी सफलता का कारण बनता है।

अभिमान हो ना जाए

बौने क़द के ऊँचे लोग

क़स्बे में कॉलेज नहीं था। छात्रों को पढ़ने के लिए बाहर जाना पड़ता था। साधन और सुविधा के अभाव में अधिकांश बच्चे उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते थे। सेठजी के अपने बच्चे तो बाहर से पढ़कर आ गए, लेकिन क़स्बे के अन्य बच्चों की पीड़ा उन्हें बेहद सालती थी। उन्होंने अपना धन लगाकर कॉलेज तैयार किया और न्यूनतम फ़ीस पर उसे आमजन के बच्चों के लिए तैयार कर दिया। कॉलेज के शुभारंभ में एक सप्ताह का समय था। अचानक एक दिन सेठजी अपने चार-छह मित्रों के साथ दान पात्र लेकर बाज़ार में निकल पड़े। लोगों से निवेदन किया कि कॉलेज के लिए छोटा-बड़ा दान जो भी इच्छा हो दान पात्र में डाल दीजिए।

सभी व्यापारी आश्चर्यचकित थे। इकट्ठे हुए और उनसे हाथ जोड़कर निवेदन करने लगे- ‘आपको बाज़ार में पात्र लेकर आने की क्या ज़रूरत थी? आप तो संदेशा भेज देते, हम राशि लेकर ख़ुद बँगले पर हाज़िर हो जाते। दूसरा निवेदन यह कि आपने इतना बड़ा कॉलेज अपना पैसा लगाकर बनवा ही दिया है, हमारी इस छोटी राशि से क्या हो जाएगा?’ सेठजी ने ध्यान से सबकी बात सुनी और फिर बड़ी विनम्रता से बोले- ‘सही कह रहे हैं आप लोग। कॉलेज पूरी तैयार है और उसे चलाने के लिए एक्स्ट्रा फंड भी सुरक्षित है, लेकिन आप सबके सामने झोली फैलाने के पीछे एक बड़ा कारण है। मैं कभी नहीं चाहता कि हमारे बच्चों के मन में इस बात का लेश मात्र भी घमंड आए कि कॉलेज हमारे परिवार ने बनाया है। इसलिए इसमें भले एक प्रतिशत ही सही, पर क़स्बे का पैसा लगना चाहिए। कॉलेज का नाम न तो मेरे अथवा परिवार के किसी सदस्य के नाम से रहेगा और न ही यह लिखा जाएगा कि इसे मैंने बनवाया है। मैं इस कॉलेज का नामकरण प्रभु के नाम पर कर यहाँ बोर्ड लगाना चाहता हूँ

कि इसे जन-भागीदारी से बनाया गया है।' सुन रहा था सेठजी को और याद आ रहे थे कविवर सुरेश नीरव-

देखो कहीं ये जुगनू दिनमान हो न जाए।
ये रास्ते का पत्थर भगवान हो न जाए।
सब-कुछ दिया प्रभु ने अहसान मानता हूँ,
बस माँगता यही हूँ, अभिमान हो न जाए।

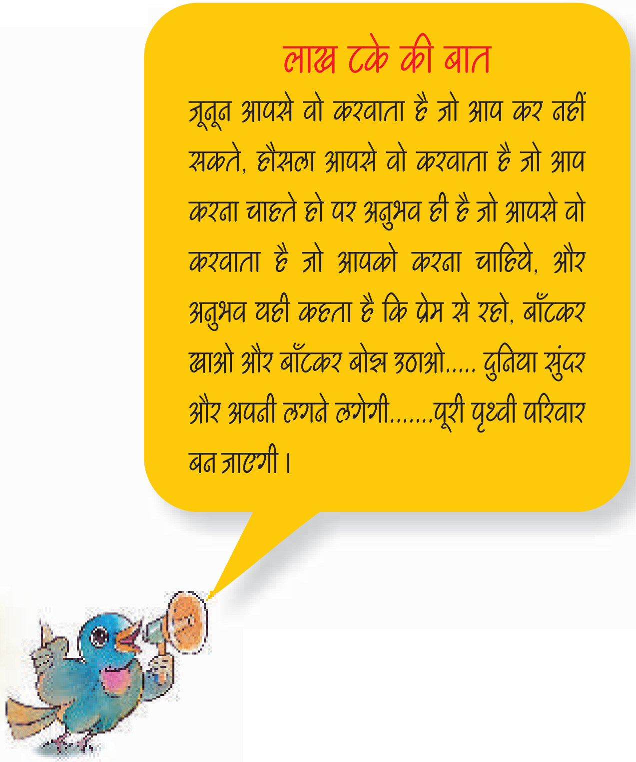

मुखिया मुख सो चाहिए

बौने क़द के ऊँचे लोग

हम लोग उन्हें चाचा कहते थे। ज़िंदगी से जुड़े हर सवाल पर उनका अपना जवाब था और हर पहलू पर अपना नज़रिया। एक सलाह के सिलसिले में उनके पास गया। वे अपनी फ़ैक्टरी के ऑफ़िस में बैठे थे। बातें चल ही रही थीं कि उनका बेटा दाख़िल हुआ। बोला-'पापा, फ़िटर मान ही नहीं रहा है। कहता है कल से काम पर नहीं आएगा। उसे दूसरी जगह एक हज़ार रुपए महीने ज़्यादा मिल रहे हैं।' चाचा ने कहा-'उसने मुझसे पंद्रह दिन पहले ही कह दिया था।...पर अपन ने दो महीने पहले दिवाली पर ही तो उसकी सेलरी बढ़ाई है।' बेटे ने कहा- 'हाँ पापा, पर क्या करें! उसके जाने से अपना काम रुक जाएगा। क्या करें, बढ़ा दें सेलरी?' चाचा ने कहा- 'देख लो, बढ़ा दो।' बेटा फ़िटर को

बताने जा ही रहा था कि चाचा ने उसे रोक लिया। कहा- 'उसकी तनख़्वाह तो मुझे बढ़ाना ही है, लेकिन उससे पहले एक काम करो, इसी अनुपात में सभी कर्मचारियों की पगार बढ़ा दो।' बेटे ने कहा- 'ऐसा क्यों? बाक़ी सभी तो संतुष्ट और ख़ुश हैं।' चाचा ने कहा- 'ऐसा नहीं है बेटा। फ़िटर ने हमारी मजबूरी का फ़ायदा उठाकर अपनी तनख़्वाह बढ़वा ली...पर बेचारे उन लोगों का क्या दोष जो हमारा लिहाज़ करते हैं और जितनी तनख़्वाह बढ़ा देते हैं उसी में ख़ुशी-ख़ुशी काम करते हैं। इसलिए पगार बढ़ेगी तो सबसे पहले उनकी बढ़ेगी जो वाक़ई वफ़ादार हैं, उसके बाद ही उस फ़िटर की।' उनका बेटा और मैं दोनों अवाक् होकर उनकी तरफ़ देखते रह गए। कभी तुलसीदास का दोहा पढ़ा था आज उसके अर्थ से साक्षात्कार हो गया-

मुखिया मुख सो चाहिए, खान-पान को एक।
पालत-पोषत सकल अंग, तुलसी सहित विवेक॥

लाख टके की बात

आप महान हैं अगर आप अपनी ख़ामी पहचान लेते हैं। आप और भी महान हैं जब आप उन्हें दूर करने की कोशिश करते हैं। आप महानतम हो जाते हैं जब दूसरों को उनकी ख़ामियों के साथ भी अपना लेते हैं और प्यार करते हैं।

मसीहा

बौने क़द के ऊँचे लोग

एक परिचित थे। फ़ोन आया कि उनका जवान साला अभी-अभी सड़क दुर्घटना में मारा गया है। अर्जेंट निकलना है। ट्रेन में बर्थ के लिए मदद हो सकती है क्या? मैं तुरंत उनके निवास पर पहुँचा। सारा घर अव्यवस्थित था। जाते ही आश्वस्त किया कि निश्चिंत रहें, ट्रेन में बर्थ दिलवाने की ज़िम्मेदारी मेरी। उसे हिम्मत रहे, इसलिए कुछ समय के लिए वहाँ रुक गया। इस बीच दोस्तों और परिचितों के फ़ोन आ रहे थे कि वे क्या मदद कर सकते हैं? वे सबको धन्यवाद दे रहे थे, लेकिन समझ नहीं पा रहे थे कि किससे क्या मदद लेनी चाहिए? सामने सूटकेस और ढेर सारे कपड़े फैले थे। छोटे बच्चे अलग तंग कर रहे थे। एक घंटे बाद ट्रेन थी। इतने में दरवाज़े की घंटी बजी। सामने भाभी की एक

सहेली खड़ी थी। उसने बिना किसी औपचारिकता के पूछा- 'आप लोगों के जूते कहाँ हैं।' जूतों की तरफ़ देखा तो सारे के सारे गंदे और कीचड़ में सने हुए थे। सखी ने पॉलिश की डिब्बी तलाशकर जूतों को चमकाना शुरू कर दिया। मुझे उस सहेली में जीसस का वह रूप नज़र आने लगा, जिसमें वे अपने अनुयायियों के पैर धो रहे थे। सहेली के इस प्रेम को देखकर मन श्रद्धा से भर गया। धीरे-धीरे वह घर के सारे काम व्यवस्थित करने लगी। जब तक उसकी सहेली कपड़ों में प्रेस करती भाभी ने बच्चों को नहलाकर तैयार कर लिया। घर के सारे काम होने तक वीआईपी कोटे में ट्रेन का टिकट भी कन्फ़र्म हो गया। दोस्त निश्चिंत होकर परिवार के साथ निकल गया।

इस घटना के बाद जब भी किसी परिचित को किसी मुसीबत में पाता हूँ, कभी यह नहीं कहता कि मेरे लायक़ काम क्या है? उसकी ज़रूरत के हिसाब से एक निश्चित काम में लग जाता हूँ। कभी यदि वह मुझसे पूछता है कि तुम्हें कैसे पता कि मुझे यह काम करवाना था? मैं जवाब देता हूँ कि मुसीबत के समय दोस्त को दोस्त के घर जूते तक साफ़ करते देखा है।

लाख टके की बात

सबसे ख़ुश करने वाला शब्द-'...पर मैं तुम्हारे साथ हूँ।' सबसे दुखी करने वाला शब्द- 'मैं तुम्हारे साथ हूँ पर...।' समान शब्दों के जगह बदलने से ही मायने बदल जाते हैं।

भाई

खेत के रास्ते का विवाद था। लंबे समय से केस चल रहा था। दोनों भाइयों के बेटे तो एक-एक ही थे, लेकिन किसी भी स्थिति में मानने को तैयार नहीं थे। बच्चों के चलते दोनों भाई भी एक-दूसरे के सामने थे। फिर पेशी थी। बरसात का मौसम था, आसमान में बादल छाए थे। कचहरी में दोनों दल मजिस्ट्रेट के सामने खड़े थे। अचानक तेज़ बारिश शुरू हो गई। बौछारें अंदर आने लगीं। छोटा भाई तेज़ी से कोर्ट से बाहर गया और जूते उठाकर अंदर ले आया। उसने जूते लाकर बड़े भाई के सामने रख दिए और कहा-'दादा पहन लो, आपके जूते बाहर गीले हो रहे थे।' बड़ा भाई भौचक्का रह गया।

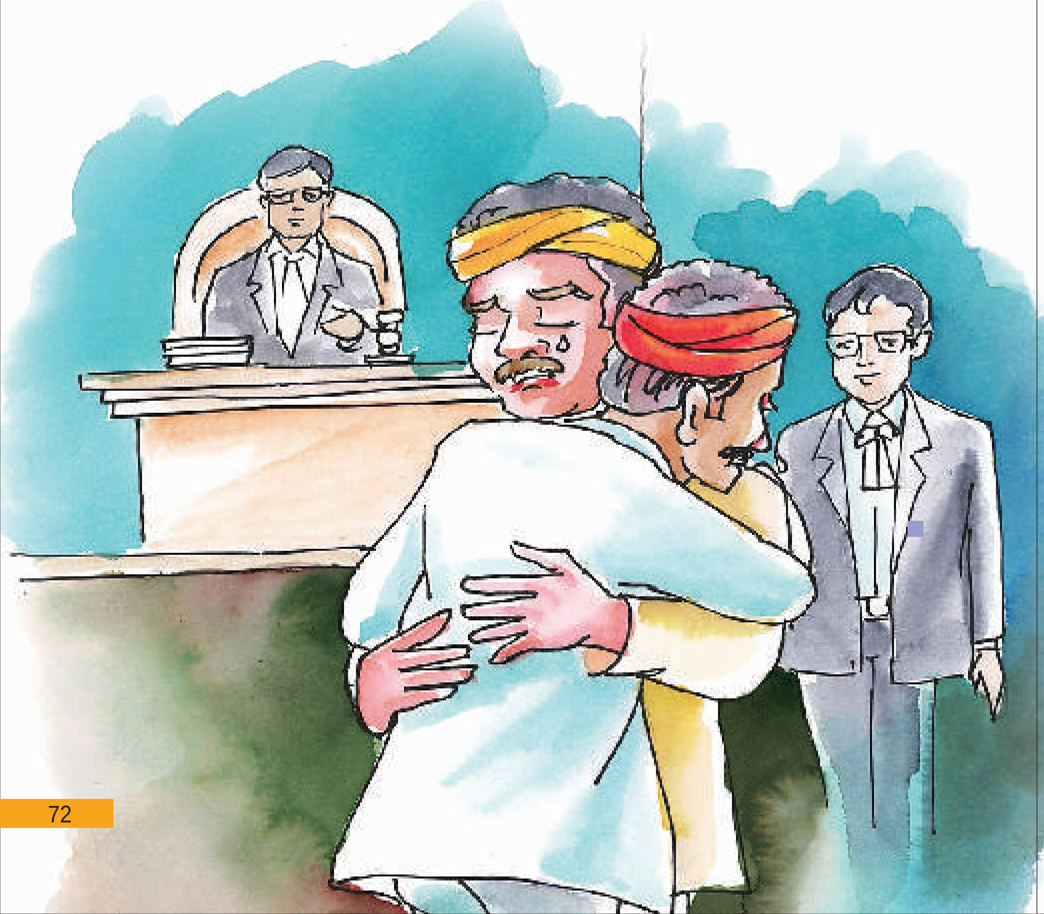

भीगी पलकों से छोटे भाई के प्यार और समर्पण को एकटक निहारता रहा। एकाएक उसने मजिस्ट्रेट साहब की ओर रुख़ किया। कहा-'साहब हो गया फ़ैसला। जो भाई आज भी मेरे जूते अपने हाथों से उठाकर ला सकता है, उसके खेत का रास्ता मैं क्या रोकूँगा? मेरा बेटा इकलौता है, कोई सगा भाई नहीं है इसका। ये क्या जाने भाई का प्रेम?' माहौल बदल गया। दोनों भाई गले मिलकर फूट-फूटकर रोने लगे। आँसुओं की ऐसी बाढ़ आई कि सारी रंजिशों के साथ कोर्ट की फाइलें भी बह गईं।

लाख टके की बात

ज़्यादातर रिश्ते तो हम स्वयं ही बनाते हैं, लेकिन कुछ विरासत में मिलते हैं। वही बुनियादी रिश्ते होते हैं। अपना, अपना ही होता है। एक बात और, ज़िंदगी में रिश्ते होना बेहद ज़रूरी हैं, लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है रिश्तों में ज़िंदगी होना।

■ व्यस्त रहो, मस्त रहो

बौने क़द के ऊँचे लोग

किसी ज़माने में कविराज का नाम स्थापित था और लोग उनसे मिलने में अपना सौभाग्य समझते थे। उम्र की इस ढलान में अब उनके पुराने जलवे नहीं बचे थे। मैं एक व्यावसायिक कार्य से उनके शहर गया था। अतिव्यस्तता के बाद भी मन नहीं माना, सोचा पाँच मिनट के लिए ही सही कविराज से मिल लिया जाए। चरण स्पर्श कर उनके बग़ल में बैठ गया। मेरा मोबाइल था कि लगातार बज रहा था। एक के बाद एक कॉल, सारे के सारे ज़रूरी। मैंने बड़ी विनम्रता से हर फ़ोन उठाने से पहले बातचीत में व्यवधान के लिए उनसे क्षमा माँगी। फ़ोन आना बंद होने के बाद मैने एक बार पुन: क्षमायाचना की।

उन्होंने जो जवाब दिया, वह मेरे लिए अप्रत्याशित था- 'बेटा इसमें क्षमा की क्या बात है, अपनी व्यस्तता या फ़ोन पर क्यों अफ़सोस करते हो? लोग तुम्हें याद कर रहे हैं। तुम्हारे बिना किसी का काम रुक रहा है। यह बड़ी बात है। भगवान का शुक्र अदा करो। तुम्हारे साथ मैं भी बैठा हूँ। मेरे पास भी मोबाइल फ़ोन है। 15 मिनट तो क्या, पिछले तीन घंटे से इस पर कोई घंटी नहीं बजी है। एक ज़माना था जब इस पर भी लगातार घंटियाँ बजती थीं। अब मैं एक घंटी को तरस जाता हूँ। बेटा याद रखना, अपनी व्यस्तता को कभी कोसना मत। सदा उसका शुक्रिया अदा करना।' ■

लाख टके की बात

ज़िंदगी में ख़ुश रहने का सबसे बड़ा मंत्र है - 'अपने काम से प्यार करो'... हथेली में सफलता भी तब तक ही लिखी होती है जब तक माथे से पसीना बहता रहता है। पसीने में भीगा सिक्का दुनिया का सबसे ख़ुशबूदार सामान है...।

तहज़ीब का दामन

बौने क़द के ऊँचे लोग

इंदौर जाना था, मित्र भी साथ हो लिया। मुझे भी सफ़र में बतियाने के लिए साथियों की ज़रूरत पड़ती है। संगियों के साथ कठिन सफ़र भी आसान हो जाता है। उसकी दादी सास बीमार थीं, देखने जाना था।

उसकी ससुराल पहुँचकर दादीजी से मिलने गए। लंबी बीमारी से काया कमज़ोर हो गई थी, चेतना कम थी। उसके ससुरजी ने दादीजी को निमाड़ी में आवाज़ लगाई- 'देख माय उठ... कूण आयऽल छे... कुँवर साहब आयाज, खंडवा से थारा सी मिलना...' दादी माँ ने आँखें खोलीं...दोस्त को देखा और हाथ हिलाने का असफल प्रयास करने लगीं। मुसीबत में ख़ुद के

अंग भी कैसे साथ छोड़ देते हैं, साफ़ नज़र आ रहा था। हमने कहा- 'बाबूजी, शायद माय को पानी चाहिए।' उन्होंने दादी माँ को सहारा दिया और पल्लू लेकर सिर ढक दिया। बोले- 'पानी-वानी कुछ नहीं चाहिए। कुँवर साहब के सामने खुले सिर से रहना उन्हें गवारा नहीं हो रहा है।' बात आगे बढ़ाई और कहा- 'माय ने लाख तकलीफ़ों के बाद भी कभी संस्कारों और सिद्धांतों का साथ नहीं छोड़ा। हमें भी जीवन में कभी भी शिष्टाचार की परिधि को पार नहीं करने दिया।' पल्लू से ढका दादीजी का चेहरा तेजस्वी हो गया था। एक-एक झुर्री में हज़ारों अनुभवों का ख़ज़ाना नज़र आ रहा था।

लाख टके की बात

तहज़ीबदार आँखें जब किसी के सम्मान में झुकती हैं तो दुनिया के हर दिल को अपने अंदर समेट लेती हैं। जब ये देखती हैं तो समंदर की गहराई से मोती निकाल लेती हैं। जब ये मुस्कुराती हैं तो दुनिया की तमाम मासूमियत को जज़्ब कर लेती हैं। जब ये रोती हैं तो आसमान हिला देती हैं और जब ये बंद होती हैं तो दुनिया को रुला देती हैं।

भैया को दिए महल-दुमहले, मुझको दिया परदेस

बौने क़द के ऊँचे लोग

गर्मी की भीषण तपन के बाद पहली फुहार गिरी थी। माटी की सोंधी ख़ुशबू ने मौसम को और ख़ुशनुमा कर दिया था। मित्र के घर बरामदे में बैठकर चाय की चुस्कियाँ ले ही रहा था कि भाभी गरमागरम भजिए ले आईं। सामने उनकी बेटी छोटे भाई के साथ कैरम खेल रही थी। खेलते-खेलते जीत-हार पर दोनों में बहस हो गई। भाई तेज़ था, लगा बहन को खरी-खोटी सुनाने। बहन बेचारी नम पलकों से कभी भाई तो कभी माँ की तरफ़ देख रही थी।

माँ ने मोर्चा संभाला- 'बेटा, तू उसे सुना रहा है और वह सुनती जा रही है। अधिक से अधिक दो-चार साल में विदा हो जाएगी। न जाने कैसे घर और कैसे लोग मिलेंगे इसे। अपनी ज़िंदगी में कब, कहाँ और कितना सुनना और सहना पड़ेगा इसको, कुछ भी अंदाज़ा है तुमको? इसलिए कम से कम यहाँ तो बख़्श दे इसको।' माँ का इतना कहना था कि भाई की आँखों से आँसुओं का सोता फूट पड़ा और लिपट गया अपनी बहन से...। ■

लाख टके की बात

सहिष्णुता नारी का अनमोल गुण है, जो उसमें कूट-कूटकर भरा रहता है। ज़रा-सी बात पर उबल पड़ने वाले पुरुषों को महिलाएँ ही सिखाती हैं कि उसे सहिष्णु होना चाहिए। पुरुष सौभाग्यशाली है कि माता, बहन, पत्नी और बेटी के रूप में सद्गुणों की सरिता उसके निकट बहती रहती है।

बौने क़द के ऊँचे लोग

तब साउथ में उत्तर भारतीय खाना खोजना मुश्किल होता था। हम चार दोस्त उस शाम ऊटी (तमिलनाडु) में राजस्थानी भोजन की तलाश में भटक रहे थे। एक सज्जन ने बताया कि सामने ऊपर बा साहब का रसोड़ा है, वहाँ आपका पसंदीदा भोजन मिल जाएगा। स्वभाव से चटोरे हम चारों चल पड़े रसोड़े की तलाश में। भोजन के लिए बैठते ही बा साहब ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि जूठन मत छोड़िएगा। पट्टी और पाटे बैठकर छककर खाने का आनंद लिया। पेट ठसाठस भर गया, लेकिन न चाहते हुए भी चारों की थाली में जूठन बच गया। एक बालक आया और छोड़े गए जूठन का अंदाज़ा लगाकर पर्ची बा साहब को थमा दी।

जब बिल चुकता करने के लिए गए तो बा साहब ने कहा- '240 रुपए तो हमें खाने के दे दीजिए और जूठन के 70 रुपए दानपात्र में डाल दीजिए।' हमने कहा- 'बा साहब, खाने का तो ठीक है, लेकिन जूठन का किसलिए?' बोले- 'हम राजस्थान से यहाँ आए हैं। हमने अन्न और अकाल की तकलीफ़ को भोगा है। इस भोजनालय को शुरू करते समय हमने एक नियम बनाया था। हम ग्राहक से विनम्रता पूर्वक निवेदन करते हैं कि जूठा न छोड़ें। इसके बाद भी अगर कोई छोड़ता है तो उसने जितने रुपए का खाना जूठा छोड़ा है, उतने रुपए इस दानपत्र में डालने हेतु निवेदन करते हैं। इस राशि से उन ग़रीबों को भोजन बाँटा जाता है जो दाने-दाने को मोहताज हैं। यह प्रतीकात्मक दंड इसलिए है ताकि जूठन छोड़ने से पहले आपको अन्न की क़ीमत का अहसास हो।' 'अगर कोई दंड की राशि देने से मना कर दे तो?' बा साहब का जवाब था- 'उनकी राशि उन्हीं के सामने मैं अपनी जेब से निकालकर इस दानपात्र में डाल देता हूँ। हमारा उद्देश्य उनसे दान एकत्र करना नहीं, बल्कि उन्हें जागरूक करना है।'

लाख टके की बात

अगर आप चाहते हैं कि आपका ज़िक्र हो तो आपको ऐसा कुछ करना पड़ेगा जो लीक से हटकर हो। भीड़ का हिस्सा बनने की बजाय भीड़ की वजह बनिए।

नाई को फ़ायदा

बौने क़द के ऊँचे लोग

चौराहे पर सरदारजी की दुकान थी। फुरसत मिलते ही आसपास के सभी दुकानदार उनके आसपास इकट्ठे हो जाते थे। आर्थिक तंगी के बावजूद उनके पास हँसी-मज़ाक, क़िस्से-कहानियों के अंबार लगे रहते थे। किसी भी बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताना उनके स्वभाव में था।

उस दिन वे अपने रिश्तेदारों की कमाई और संपत्तियों का बखान कर रहे थे- 'मेरे साढ़ू भाई का दो एकड़ का बँगला है। उसका भाई तो फ़्लाइट के बग़ैर चलता ही नहीं...' वग़ैरह-वग़ैरह। हमारे साथ एक साउथ इंडियन अन्ना बैठे थे। यूँ तो कम बोलते थे, लेकिन उस दिन उनसे नहीं रहा गया- 'सरदारजी हमारे केरल में एक कहावत है।' सरदार जी बोले- 'बताओ अन्ना।'

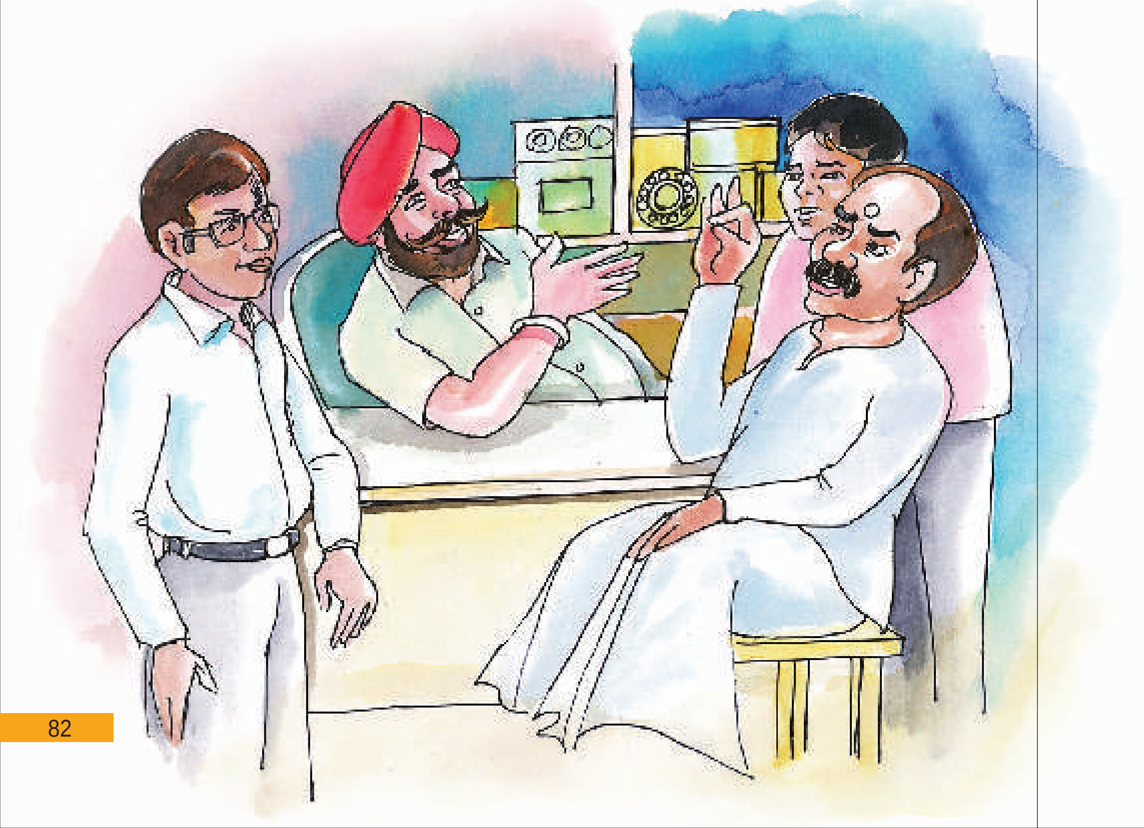

अन्ना ने कहा- 'कुत्ते के बाल बढ़ जाएँ तो नाई को क्या फ़ायदा?' सरदारजी अवाक्...। अन्ना ने बात को आगे बढ़ाया- 'सरदारजी नाई को फ़ायदा तब होता है जब आदमी के बाल बढ़ें। हमारे रिश्तेदारों के पास करोड़ों हैं, इससे हमें क्या लाभ? हमारा काम तो हमारी जेब का पैसा ही करेगा।' अन्ना ने भले ही मज़ाक में ऐसा कहा हो, लेकिन उनका एक वाक्य जीवन का बड़ा फ़लसफ़ा बता गया।

लाख टके की बात

हमारी कही बातें वह आईना है, जिसमें हमारी छवि दिखाई देती है। हमारे बरताव से लोग हमारे वज़न का अंदाज़ा लगाते हैं और हमारी बातों से उसकी क़ीमत का।

संगीत ख़ुदा है

बौने क़द के ऊँचे लोग

वे हमारे क़स्बे में संगीत के जाने-माने उस्ताद थे। कई लोगों को उन्होंने सरगम की तालीम दी थी। मैं उनके पास हारमोनियम सीखने गया। सिखाते समय वे बार-बार एक ही बात कहते- 'संगीत ख़ुदा है।' एक बार मुझसे नहीं रहा गया, मैं पूछ बैठा- 'उस्ताद हम ख़ुदा और संगीत को एक कैसे कह सकते हैं?' पहले तो वे धीरे से मुस्कुराए फिर बोले- 'मुझसे यह पंक्तियाँ सुनते तो सब हैं, लेकिन प्रश्न पहली बार किसी ने किया है।' कहने लगे- 'चाहे ख़ुदा कहें या फिर भगवान, क्या हम उसे देख पाते हैं? नहीं न! हम तो उसे सिर्फ महसूस करते हैं। संगीत भी ठीक वैसा ही है, जिसे हम देख नहीं पाते सिर्फ महसूस करते हैं। इसीलिए वह ख़ुदा है।'

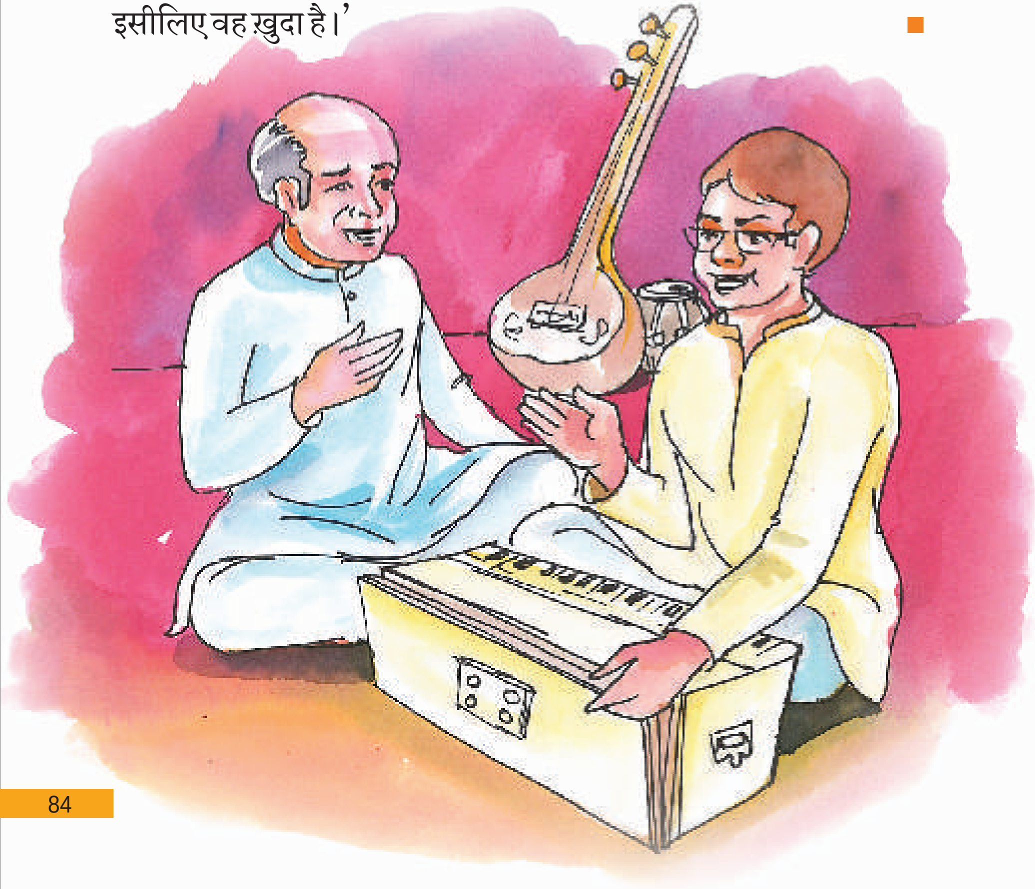

■ लंबा चलना है तो सबके साथ चलिए

बौने क़द के ऊँचे लोग

वे खंडवा के पास एक क़स्बे के बड़े उद्योगपति थे। कई ट्रक, कार और वाहन उनके पास थे। उनसे पुराना व्यावसायिक और पारिवारिक रिश्ता था। मैंने नया-नया टायर व्यवसाय शुरू किया था। कई महीनों से कभी पत्र लिखकर तो कभी फ़ोन से निवेदन कर रहा था कि टायर के लिए मुझे भी अवसर देवें।

एक दिन वे खंडवा आए तो मुझसे मिलने दुकान आ गए। बोले- 'बेटा, तुम्हारे पत्र आए-फ़ोन आए, लेकिन हम तुम्हारे यहाँ से टायर नहीं ले पाए, शर्मिंदा हैं।' मैंने कहा- 'इसमें शर्मिंदा होने वाली कोई बात ही नहीं है।

आपने दुकान पर चरण रखे, यही बड़ी बात है। आप निश्चिंत रहें, आगे से कभी आपके पास पत्र या फ़ोन नहीं आएगा... लेकिन क्या एक बात मैं जान सकता हूँ कि मेरी गुस्ताख़ी क्या है?' बोले- 'बेटा, कैसी बात करते हो? तुमसे किस बात की नाराज़गी? हमारे यहाँ संबंध से बड़े सिद्धांत हैं। हमारी पेढ़ी का बरसों से एक नियम है। सभी कामों की एजेंसियाँ तय हैं। पेंटर, नौकर, ड्राइवर, हार्डवेयर, पेट्रोल पंप, टायर विक्रेता सब परमानेंट हैं। बार-बार लोग या एजेंसियाँ बदलना हमारी फ़ितरत में नहीं। स्थायित्व से हमेशा लिहाज़ बना रहता है, ज़िंदगी आसान हो जाती है। जब तक कोई बड़ी दिक़्क़त न हो, हम पुराने लोगों को नहीं छोड़ते। टायर की बात करें तो हम पिताजी के ज़माने से इंदौर से एक दुकान से ले रहे हैं। दोनों को कभी एक-दूसरे से दिक़्क़त नहीं आई। इसलिए बेटा जब तक कोई बड़ा कारण नहीं होगा हम उन्हें नहीं छोड़ेंगे। हाँ, यह वादा ज़रूर है कि उनके बाद पहला नंबर आपका रहेगा।' ■

लाख टके की बात

दुनिया में कोई आदमी अच्छा है, इसकी छोटी और एकदम आसान पहचान क्या है? जिसके दोस्त और नौकर पुराने हैं, इसका मतलब है कि बुनियादी तौर पर वह आदमी अच्छा है।

काल करे सो आज कर

बौने क़द के ऊँचे लोग

बैंक में उस दिन भी बहुत भीड़ थी। मैनेजर के सामने फ़ाइलों का अंबार और मिलने वालों की क़तार थी। मैं एक सर्टिफ़िकेट लेने के लिए गया था। मुझे देखते ही उन्होंने आवाज़ दी और बैठाया। मैंने अपने आने का मक़सद बताया और कहा कि सर्टिफ़िकेट आज ही मिले, ज़रूरी नहीं है। आप सहूलियत से कल-परसों कभी भी बनवा देना। उन्होंने चपरासी को चाय और सर्टिफ़िकेट वाली फ़ाइल लाने के लिए कहा। उन्होंने आगे कहा- 'देखिए भाई साहब, सर्टिफ़िकेट कल भी मुझे ही बनाना है। भीड़ कल भी इतनी ही रहनी है। इसलिए मैं आज के काम को कल पर नहीं टालता। आप बुरा मत मानना...आप कल फिर इस काम के लिए आएँगे, आपका समय जाएगा, मुझे आपको कल फिर समय देना पड़ेगा...मेरा भी समय जाएगा।'

लाख टके की बात

अगर आप सही काम करने में देर लगा देते हैं तो याद रखिए कई बार सही काम भी ग़लत हो जाते हैं। देरी से किया गया न्याय भी अन्याय की शक्ल ले लेता है।

बौने क़द के ऊँचे लोग

वे मेरे इंदौर के बहुत अच्छे परिचित की बहन थीं। मैं भी उन्हें दीदी कहता था। खंडवा में मजिस्ट्रेट बनकर आई थीं। साहित्य में रुचि थी इसलिए मिलने के लिए आती रहती थीं। वे मुझे भाई की तरह स्नेह देती थीं और मैं उन्हें बड़ी बहन का सम्मान। मेरे एक घनिष्ठ मित्र का केस उनकी अदालत में चल रहा था। मित्र को कहीं से पता लगा और आ गया मेरे पास। मुझे पहले से ही पता था कि इस मामले में मित्र निर्दोष है। एक नेता ने अपनी खुंदक निकालने के लिए उसे फँसाया था। उसने कहा कि मैडम के पास जाकर मैं उसका पक्ष रखूँ। कोई कितना भी सगा हो, लेकिन मैं शासकीय अधिकारियों के संबंध का दुरुपयोग करने से बचता हूँ। चूँकि मित्र का मामला गंभीर था और उसे उस मामले में बड़ी सज़ा हो सकती थी, इसलिए उसकी बात मान ली।

फ़ोन पर समय लेकर मैं रविवार को उनके घर पहुँचा। इधर-उधर की बातों के बाद धीरे से विषय पर आया। मित्र के प्रकरण को पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत किया और दीदी से मदद के लिए निवेदन किया। उनका उत्तर मेरी उम्मीद के एकदम विपरीत था।

'भैया, जब न्यायाधीश का नियुक्ति पत्र आया तो पिताजी मिठाई के साथ एक धर्मग्रंथ भी लेकर आए। मिठाई खिलाई और कहा कि आज हमारे पास जो धन-संपदा है, हो सकता है कल न रहे। मैं किसी लालच या प्रभाव में आकर तेरे न्यायक्षेत्र में कुछ दख़ल दूँ। इस धर्मग्रंथ पर हाथ रखकर क़सम खा कि तेरे पिताजी भी अगर निर्णय को प्रभावित करने की कोशिश करें तो भी तू अपने निर्णय पर अटल रहेगी। तू वही करेगी जो तेरी कसौटी पर खरा उतरेगा।' यह कहते-कहते दीदी की आँखों से आँसू टपक पड़े।

वे बोलीं- 'भैया, मैं अपने सगे भाइयों से ज़्यादा आपसे स्नेह रखती हूँ, लेकिन इस विषय पर आपसे क्षमा चाहती हूँ। हो सकता है आपके मित्र को सज़ा हो जाए, हो सकता है बरी भी हो जाएँ, लेकिन जो भी होगा वह तथ्य और साक्ष्य के आधार पर होगा।' कुर्सी से खड़ा हुआ और मैंने दीदी के दोनों चरणों को स्पर्श किया। मेरे मन में उनका क़द कई गुना ऊँचा हो गया। मैंने उनसे कहा -

'दीदी, आज पता लगा कि हज़ारों विपरीत परिस्थितियों के बीच भी हमारा देश कैसे अडिग और अविचल खड़ा है।' इस घने अँधेरे में आप और पिताजी जैसे कुछ जुगनू हैं, जो रोशनी की राह दिखा रहे हैं। ■

लाख टके की बात

अगर आप नैतिक मूल्यों पर अटल हैं तो किसी के काम न आकर भी ऊँचे हो जाते हैं। अगर आप नैतिकता छोड़कर किसी का काम करते हैं, तो काम आकर भी छोटे हो जाते हैं।

ना जाने किस रूप में नारायण मिल जाएँ

बौने क़द के ऊँचे लोग

साइकिल का सदुपयोग कोई उससे सीखे... सब्ज़ी की एक टोकरी कैरियर पर, दो पीछे लगी लकड़ी पर, दो सामने हैंडल पर और बोरी से बनी एक बड़ी थैली डंडे पर... यानी कि सब्ज़ी की पूरी दुकान साइकिल पर। सबको आवाज़ लगाता घूमता रहता था मोहल्ले में। 'भगवान' तकिया कलाम था उसका। कोई पूछता आलू कैसे दिए? जवाब देता- 'पाँच रुपए किलो भगवान'। 'कोथमीर है क्या?'... 'बिलकुल ताजा है भगवान।' वह सबको भगवान कहता था, इसलिए लोग भी उसको 'भगवान' कहकर पुकारने लगे।

भगवान-भगवान की रट सुनकर मुझे चिढ़ आती थी उससे। मैंने उससे पूछा- 'तुम्हारा कोई असली नाम भी है या नहीं ?' 'है न भगवान, भैयालाल पटेल।' मैंने कहा- 'भैयालाल, तुम हर किसी को भगवान क्यों बोलते हो?' उसका जवाब मेरे लिए अप्रत्याशित था।

'भगवान, मैं शुरू से अनपढ़ गँवार हूँ। गाँव में सब्ज़ी के खेतों में मज़दूरी करता था। एक बार हमारे गाँव में भागवत कथा हुई। एक नामी संत आए। पूरी कथा तो मेरे पल्ले नहीं पड़ी, लेकिन एक लाइन मेरे दिमाग़ में आकर फँस गई। उन्होंने कहा कि हर इंसान में भगवान है, तलाशने की कोशिश तो करो। लगे रहो, पता नहीं किस इंसान में वह मिल जाए और तुम्हारा उद्धार कर जाए। बस उस दिन से मैंने हर मिलने वाले को भगवान की नज़र से देखना और पुकारना शुरू कर दिया। वाकई चमत्कार हो गया। दुनिया के लिए शैतान आदमी भी मेरे लिए भगवान हो गया। ऐसे दिन फिरे कि मज़दूर से व्यापारी हो गया। सुख-समृद्धि के सारे साधन जुटते गए। मेरे लिए तो सारी दुनिया ही भगवान बन गई।' ■

लाख टके की बात

जीवन एक प्रतिध्वनि है। आप जिस लहजे में आवाज़ देंगे, पलटकर आपको उसी लहजे में सुनाई देगी।

■ गुलदस्ता

एक दिन एक टायर कंपनी का अधिकारी बताने लगा कि उसे बचपन से हर जन्मदिन पर कोई एक गुलदस्ता भेजा करता था। पहले तो उसने काफ़ी खोजबीन कर पता लगाना चाहा, लेकिन वह गुलदस्ता इतनी ख़ुशी देता था कि बाद में खोजबीन करना बंद कर दिया। माँ से पूछता तो माँ कहती- 'हो सकता है तुम्हारे तिवारी सर हों, जिनकी दवाई तुम लाकर देते हो या फिर पड़ोस के किराना दुकान वाले कन्हैया सेठ हों, जिन्हें तुम ठंडा पानी पिलाते हो।'

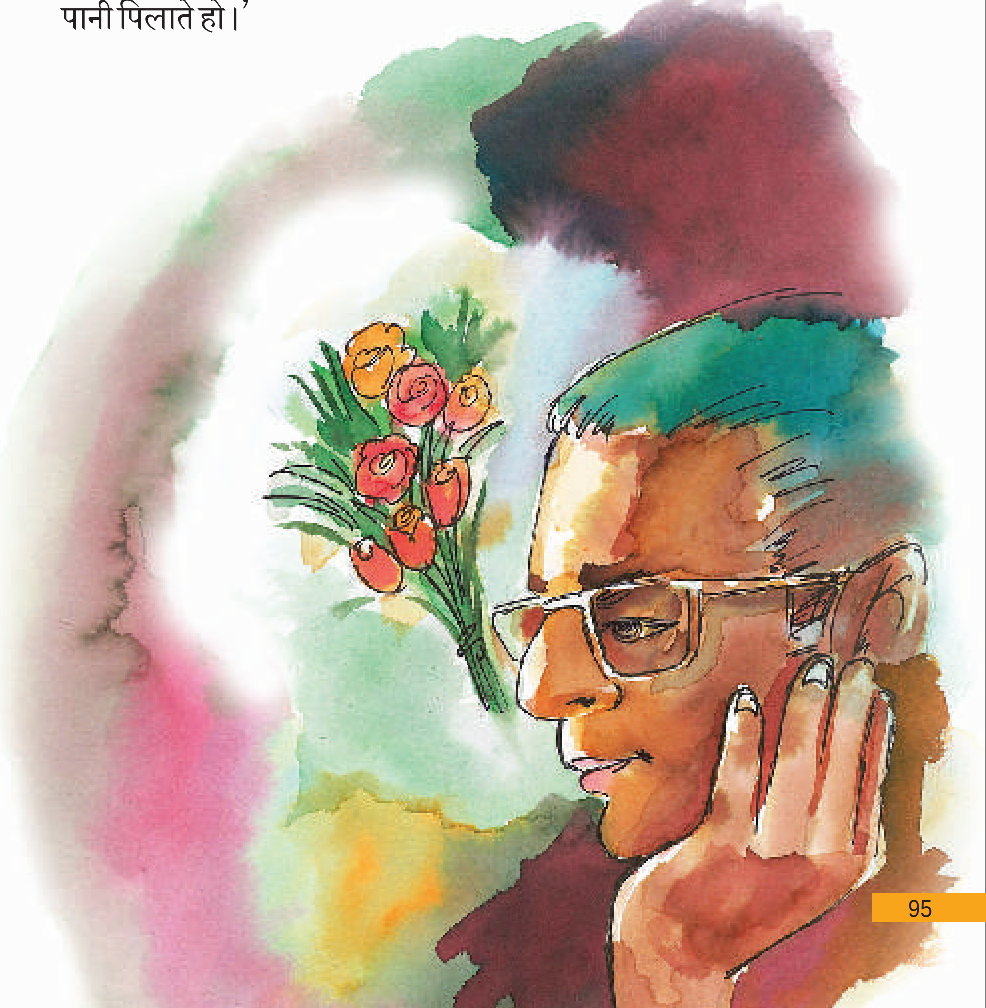

जब कुछ बड़ा हुआ तो नए विचार मन में आने लगे कि हो सकता है कि कोई साथ पढ़ने वाली लड़की हो जो उस पर मरती हो। वो और माँ उन सारे संभावित नामों पर विचार करते रहते थे। फिर जीवन की व्यस्तता में इस विषय पर विचार करना ही बंद कर दिया। पढ़ाई ख़त्म हुई, नौकरी लग गई, तबादले होते गए, देशभर में भटकता रहा, लेकिन गुलदस्ता निर्विघ्न रूप से प्रतिवर्ष आता रहा। इसी बीच अचानक एक दिन माँ नहीं रहीं। अगले जन्मदिन पर गुलदस्ता भी नहीं आया। ■

लाख टके की बात

माँ उस पेड़ की तरह है, जो परिंदों को ठिकाना देती है, मुसाफ़िरों को छाँव देती है और विज्ञान की भाषा में कहें तो ऑक्सीजन देकर ज़िंदगी देती है। कुछ नहीं बचता खोने के लिए, माँ को खो देने के बाद।

■ पिता पेड़ हैं, हम शाखाएँ

बौने क़द के ऊँचे लोग

पास के गाँव के एक निमाड़ी बुज़ुर्ग सदैव मेरे पास आते रहते थे। परिश्रमी और हँसमुख। समृद्ध काश्तकार होने के बाद भी सादगीप्रिय। बातचीत में घुमा-फिराकर बेटे का ज़िक्र अवश्य ले आते। उनका लाड़ला भोपाल में किसी बैंक में उच्च अधिकारी था। '... मेरे बेटे का तो नाम चलता है, ग़ज़ब के ठाठ-बाट हैं, गाड़ी और ड्राइवर भी हैं... राज कर रहा है...' सुन-सुनकर मेरे और स्टाफ़ के कान पक गए थे।

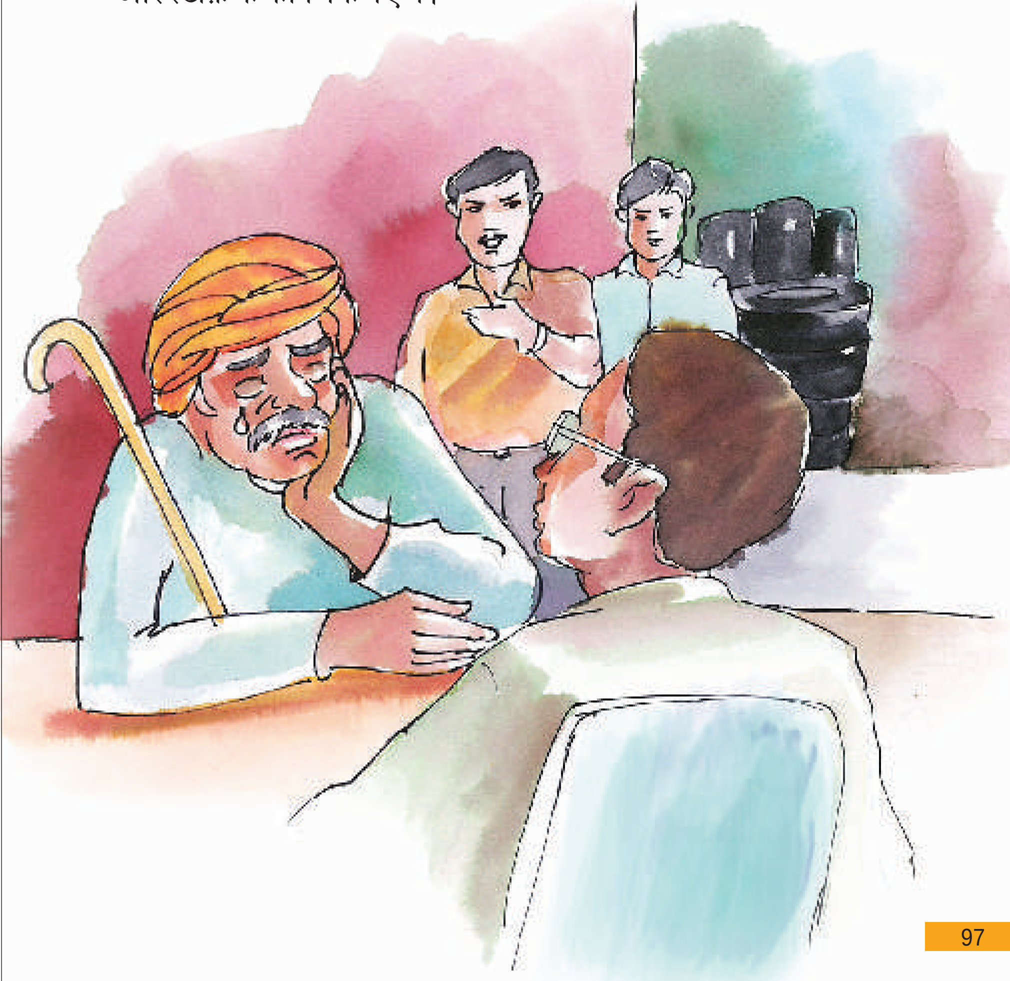

पिछले कुछ दिनों से वे आ तो रहे थे, लेकिन बेटे का महिमा गान बंद था। एक दिन मैंने यूँ ही छेड़ दिया- 'दरबार, जय ओंकारजी की...आजकल अपने कुँवर साहब के क्या हाल हैं? ' सुनकर उनका चेहरा लाल हो गया और आँखों से गंगा-जमना बहने लगीं। उन्होंने जो बयान किया, वह मुझसे न लिखा जाएगा। उन्हीं की अपनी ज़ुबान में सुनिए-

'पाछला महीना म म्हारा बेटा को जनमदिन थो। ओकी माय न घर सी लड्डू अरू घर को बणेल घी एक पोटली म बाँधी, मख दियो। बेटा का जनमदिन म रात म कोई 8 बजे भोपाल उनका घर म पहुँच्यो। उनका दरवाजा पर जब घंटी बजाई चपरासी दौड़ीन आयो। चपरासी नयो थो। पूछने लग्यो- 'आप कौन हैं? साहब अंदर हैं, जन्मदिन की पार्टी चल रही है।' मन कयो- 'थारा साहब सी बोल कि गाँव से पिताजी आयल है।' चपरासी अंदर जाय के वापस आयो अरू बोल्यो-'आप उस सामने वाले कमरे में जाकर आराम कीजिए।' हंउ जब पोटली अरू सामान उठाय के अँगना म से जाने लग्यो तो म्हारा कानण म आवाज आई। कोई म्हारा बेटा स पूछी रह्यो थो-'ये बूढ़ा कौन है?' बेटा न उख कह द्यो- 'मेरी मिसेज को काम करने में परेशानी होती थी, इसलिए पिताजी ने गाँव से नौकर भेजा है।' अख सुनिकर आसो लग्यो जस कोई न म्हारा कानण म पिघलो शीशो उड़ेल दियो। हंऊ एक मिनट रूक्यो बिना वापस पलटी गयो। चपरासी सामने खड़्यो थो। म्नह उस कयो- 'तेरे साहब बहादुर से कहना कि इसी क्षण से वह यह मान ले कि उसका बाप मर गया है...और मैंने तो यह मान ही लिया है कि मेरा कोई बेटा नहीं है।' घटना सुनाते-सुनाते बुज़ुर्ग की आँखों से आँसू की धारा लग गई और शब्द गले में फँसने लगे।

दुर्भाग्य देखिए, छह माह ही बीते थे कि अचानक एक दिन भोपाल से ख़बर आई कि उसके अधिकारी बेटे का दर्दनाक सड़क हादसे में निधन हो गया है। वो पिता जिसकी पिछले छह महीने से बेटे और बेटे के परिवार से बातचीत

बंद थी, जो यह कह चुका था कि तेरा कोई पिता नहीं और मेरा कोई बेटा नहीं है...इस घटना से टूट गया। बहू की अनुकंपा नियुक्ति लगवाने से लेकर उसके परिवार की हर ज़िम्मेदारी निभाई। बहू और पोते-पोतियों की सेवा करते-करते भोपाल के उसी मकान में अपने प्राण त्यागे, जिसकी दहलीज़ पर कभी न चढ़ने की क़सम खाई थी। ■

लाख टके की बात

बुज़ुर्गों के साथ किया गया हमारा व्यवहार यह तय करेगा कि हमारे बच्चे हमारे साथ कैसा व्यवहार करेंगे।

हृदय परिवर्तन

बौने क़द के ऊँचे लोग

बड़ी मन्नतों के बाद मेरे मित्र के यहाँ बेटा हुआ था। पूरे कुनबे का राजदुलारा था वह, कभी इस गोद में - कभी उस गोद में। उसे छींक भी आए तो पूरा घर बेचैन हो उठता। पिछले छह दिनों से बच्चे की तबीयत ठीक होने का नाम नहीं ले रही थी, शायद नज़र ही लग गई थी किसी की। सारे टेस्ट करवा लिए, अंत में मामला हार्ट में वॉल्व की ख़राबी का निकला। सलाह मिली तुरंत मुंबई निकल जाओ। वहाँ डॉक्टर से अपॉइंटमेंट तो मिल गया लेकिन ट्रेन में रिज़र्वेशन नहीं। पीक सीज़न था और ट्रेन में पैर रखने भर की जगह नहीं। सबने हिम्मत दी, जो होगा ट्रेन में ही देखा जाएगा। यहाँ से तो निकलो। रात 11 बजे - खण्डवा का प्लेटफ़ॉर्म नं. 1। ठसाठस भरी कलकत्ता मेल प्लेटफ़ॉर्म पर लगी। जगह के लिए

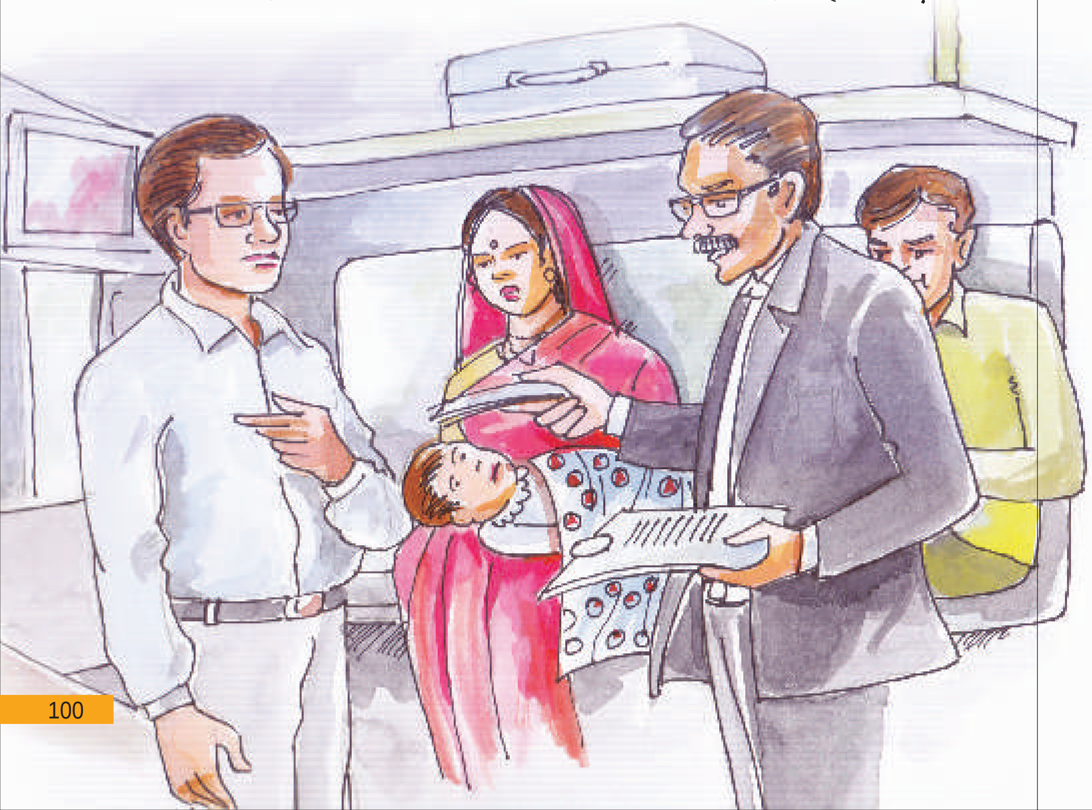

पूछा तो सारे टीसी साफ़ मना कर गए। मैंने एक बुज़ुर्ग टीसी को पकड़ा और उसे अपनी मजबूरी बताई। कहा 'दादा आपकी उम्र से तो लग रहा है कि रिटायरमेंट पास है, टीसी की नौकरी है ज़िंदगी भर पैसा तो ख़ूब कमाया होगा - मौक़ा है, दुआ भी कमा लीजिए!' टीसी भी पक्का खिलाड़ी था, ज़रा भी नहीं पिघला। अनुभव बोलता है कि इस देश में जब सारे रास्ते बंद हो जाएँ तो एक ही जादू चलता है - 'महात्मा गाँधी' मतलब नगद नारायण।

मैंने तुरूप का इक्का फैंका - चार सवारी, चार हज़ार। उसने कुटिल मुस्कान से मुझे देखा और कहा 'हो जाएगा - बैठ जाइए।' अगले स्टेशन पर वह आया। रसीद के पैसे और ऊपर के चार हज़ार रुपये सीधे अंटी कर लिए। न जाने उसे क्या सूझी कि अचानक उसने एक हज़ार रुपये वापस कर दिए और कहा ' बच्चा तो वाक़ई तप रहा है। अच्छा इलाज करवाइए, मेरे लिए तीन हज़ार ही बहुत हैं।' दस मिनिट बीते ही थे कि वह वापस आया और यह कहते हुए कि दो हज़ार भी बहुत होते हैं उसने एक हज़ार का नोट और वापस किया। सफ़र कुछ आगे बड़ा ही था, एक बार वह फिर से आया और इस बार एक हज़ार नहीं, पूरे दो हज़ार वापस कर दिए। कहने लगा 'बाबू आप सही पकड़े हैं। अगले साल ही मेरा रिटायरमेंट है। पूरी नौकरी में मैंने ख़ूब पैसा कमाया पर आज आपकी बात ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। आज से प्रण लेता हूँ कि बचे हुए एक साल में सिर्फ़ दुआएँ ही कमाऊँगा... आप भी मेरे लिए बस दुआ ही कीजिए।' इसके आगे बोलते हुए उसका गला भर्रा गया और आँसुओं का सैलाब बहने लगा।

लाख टके की बात

सतयुग में देवों का दानवों में युद्ध होता था। दोनों अलग-अलग लोक से थे। त्रेता युग में राम और रावण में लड़ाई। दोनों अलग-अलग देश के थे। द्वापर में युद्ध हुआ कौरवों और पांडवों में। दोनों अलग-अलग भाईयों की संतानें थीं। हर युग में परिधि सिमटती जाती है, यह कलयुग है। इसमें हमारा युद्ध अब किसी और से नहीं अपने आप से है। हमें लड़ना होगा उस शत्रु से जो असुर, रावण या कौरव बनकर छिपा बैठा है हमारे ही भीतर।

भगवान से बढ़कर

पहुँचे हुए संत थे वे। उस दोपहर कुछ फुर्सत में नज़र आए। भक्तों ने उन्हें घेर रखा था। बातचीत बदलते दौर में पारिवारिक रिश्तों पर चल रही थी। अचानक संतश्री ने प्रश्न किया। 'बताईये हमारे जीवन में माता-पिता का दर्जा कौन सा है?' सबने एक स्वर में उत्तर से दिया - भगवान से बढ़कर। उन्होंने आश्चर्य जताते हुए फिर से प्रश्न किया - ये कैसे हो सकता है? भगवान से बड़ा भी कोई हो सकता है क्या? सभी निरुत्तर थे। धीरे से एक भक्त ने कहा 'माता-पिता ने हमें जन्म दिया है इसलिए।' दूसरे ने कहा उन्होंने हमें दुनिया दिखलाई। तीसरे ने कहा वे हमारे सुख-दुःख का ख़्याल रखते हैं। संत बोले 'यह सभी काम तो भगवान की मर्जी से ही होते हैं न? फिर माता-पिता भगवान से बढ़कर कैसे हुए? भक्तगण फिर से निरुत्तर और कमरे में सन्नाटा पसर गया।

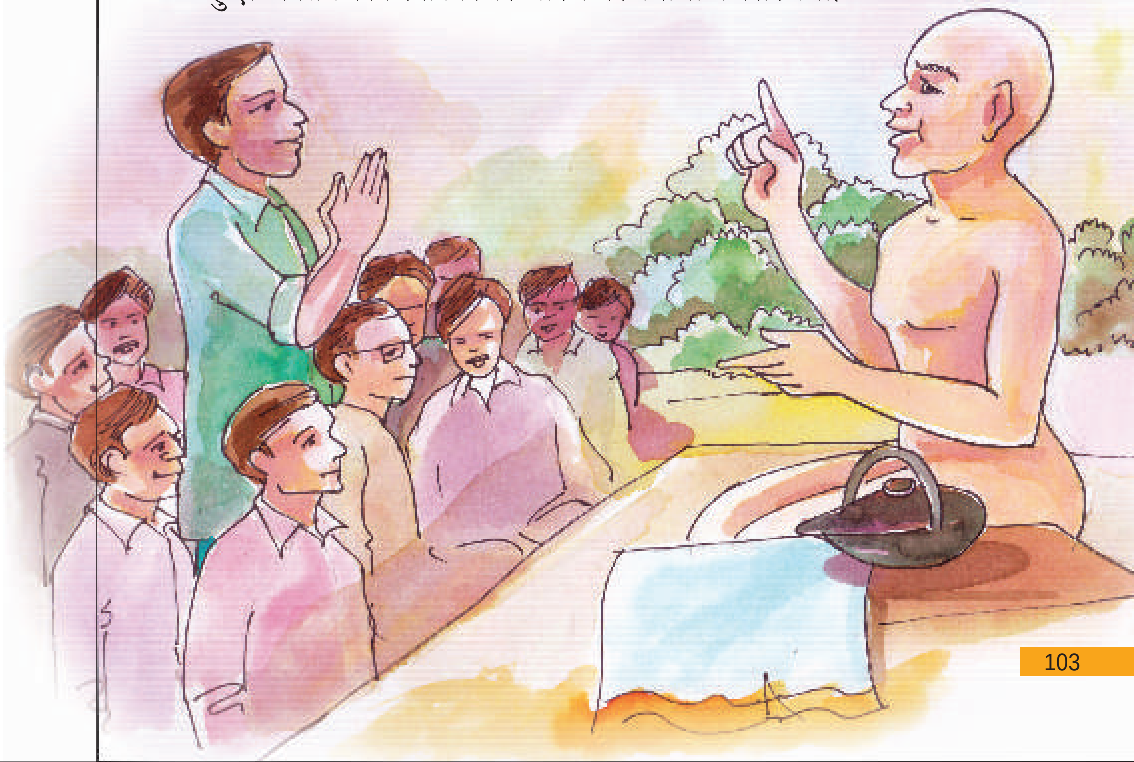

संत बोले 'सही कहा तुमने, माता-पिता भगवान से बढ़कर ही होते हैं, पर इसलिए नहीं कि जैसा कि तुमने बताया। मैं बताता हूँ वे भगवान से बड़े क्यों हैं। संत कुछ देर रुके, फिर बोले 'भगवान ने जब हमारा प्रारब्ध लिखा, हमारा भाग्य लिखा तो उसमें सुख-दुःख, लाभ-हानि और यश-अपयश, सब लिखे। दुनिया में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिसके लिए ईश्वर ने शुभ-शुभ ही चाहा हो। यहाँ तक कि राम और कृष्ण जैसे अवतारों के लिए भी नहीं। माता-पिता ही हैं जो अपनी संतानों के लिए सिर्फ़ सुख, लाभ और यश ही चाहते हैं। इसीलिए संतान को माता-पिता का दर्जा हमेशा ईश्वर से ऊपर रखना चाहिए। अगर माता-पिता हमसे ख़ुश नहीं हैं तो भगवान की लाख पूजा-अर्चना कर लो, कोई फ़ायदा होने वाला नहीं।

लाख टके की बात

अपनों के दरमियाँ सियासत फ़िज़ूल है
मक़सद न हो कोई तो बग़ावत फ़िज़ूल है
रोज़ा, नमाज़, सदक़ा-ए-ख़ैरात हो या हज
माँ-बाप ख़ुश न हो तो इबादत फ़िज़ूल है

-अज्ञात

सच्ची इबादत

बौने क़द के ऊँचे लोग

बुरहानपुर की दरगाह-ए-हक़ीमी उन जगहों में से एक है जो इबादत और सवाब (पुण्य) के साथ ही स्वच्छता और व्यवस्था में भी एक मिसाल है। बोहरा समाज के इस तीर्थ पर आकर तो एक बार ऐसा लगता है जैसे आप किसी दूसरे देश में ही आ गए हैं। बुरहानपुर खण्डवा के नज़दीक ही है। छुट्टियाँ थीं अतः एक दिन पूरे परिवार के साथ दरगाह दर्शन के लिए निकल पड़े। दरगाह में प्रवेश के बाद हम अपनी बारी के इंतज़ार में थे क्योंकि क़तार बेहद लंबी थी। ऐसा लग रहा था कि समय कुछ ज़्यादा ही लग जाएगा। हमें खण्डवा लौटने की व्याकुलता थी। भीड़ देखकर आख़िर निर्णय लिया कि आज तो वापस ही

चला जाए। दरगाह दर्शन किसी और दिन। हम लाइन से निकले ही थे कि पीछे खड़े एक बोहरा बुज़ुर्ग ने पूछा 'क्या बात है आप दर्शन नहीं करेंगे?' हमने अपनी विवशता बतलाई। वे लाइन से बाहर आए, हमें साथ लिया और एकदम आगे ले जाकर खड़ा कर दिया। वहाँ खड़े लोगों से उन्होंने गुज़ारिश की और सभी ने बड़ी सहजता से हमें पंक्ति में सबसे आगे जगह दे दी। इस बीच हमने देखा कि ज़ायरीन (दर्शनार्थी) की तीन-चार बसें और आ गईं। लाइन कुछ और लंबी हो गई। जो बोहरा सज्जन हमें आगे खड़ा करके गए थे वे अब सबसे पीछे जाकर अपनी जगह जाकर खड़े हो गए। मैं परिवार को वहीं छोड़कर उनके पास गया और पूछा 'चाचा या तो हमारे साथ आगे आ जाइये या फिर वहीं खड़े हो जाइए जहाँ पहले थे।' बोहरा सज्जन ने जो जवाब दिया वह मुझे आज तक याद है। 'उन्होंने कहा - 'आप हमारे मेहमान हैं', मैं आपको लाइन में कहीं भी खड़ा करवा सकता हूँ लेकिन मैं तो बोहरा समाज से हूँ यानि की यहाँ का मेज़बान ? मुझे तो जब भी लाइन में लगना है क़ायदे से सबसे पीछे ही लगना होगा। बीच में या ग़लत तरीके से मुझे दरगाहे-हक़ीमी के दीदार तो हो जाएँगे पर मेरी इबादत कभी क़ुबूल नहीं होगी।

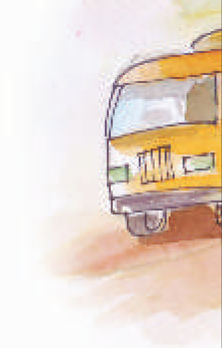

लाख टके की बात

जानवर, आदमी, फ़रिश्ता, ख़ुदा
आदमी की हैं सैंकड़ों क़िस्में
–अल्ताफ़ हुसैन 'हाली'

शरबती

बौने क़द के ऊँचे लोग

हमारे निमाड़ में दो ही मौसम होते हैं; एक गर्मी का दूसरा ज़्यादा गर्मी का। जेठ की तपती दुपहरी जिसमें ख़ाली सड़क सन्नाटों से बात कर रही थी। मेरे एक अनाज व्यापारी मित्र की दुकान के पास दही की लस्सी बेहद स्वादिष्ट मिलती है। फ़ुर्सत में था, चला गया। मित्र की दूकान पर बैठकर लस्सी के लुत्फ़ के साथ हम गुफ़्तगू कर ही रहे थे कि सामने से आते एक चाचा नज़र आए। यूँ तो चाचा फल का ठेला लगाते थे लेकिन थे बेहद दिल फ़रियाद इन्सान। लस्सी पियोगे न चाचा? मित्र ने पूछा। नहीं बेटा मेरे रोज़े चल रहे हैं। हुकुम कीजिए चाचा, कैसे आना हुआ! बेटा यतीमख़ाने के लिए पाँच बोरी गेहूँ भिजवा देना। लगे हाथ पैसे भी बता दो मैं देता ही जाता हूँ। मुझे इस बार दस बोरी रमज़ान पर ज़कात (दान) में देना थी पर क्या बताऊँ बेटा! धंधा बड़ा कमज़ोर चल रहा है।

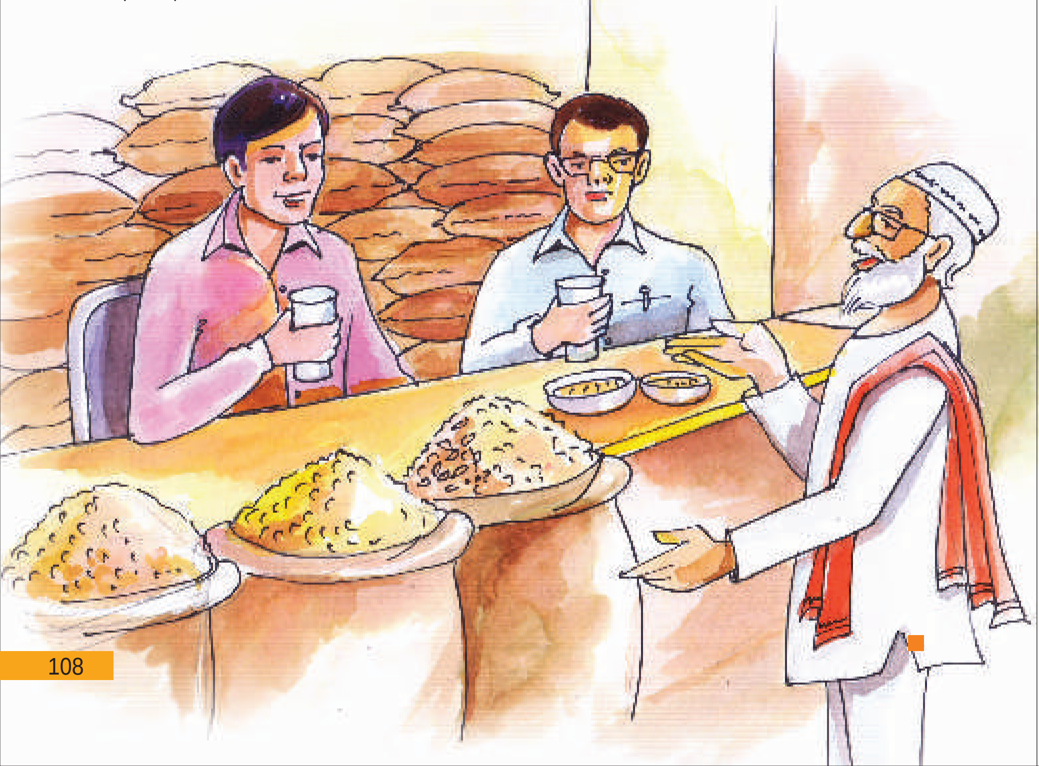

चाचा अभी तो सिर्फ़ शरबती गेहूँ हैं, दो-एक दिन बाद हल्के गेहूँ आने वाले हैं। मैं ख़ुद भिजवा दूँगा, आप बेफ़िक्र रहें। चाचा एकदम गरजे; तुम्हें किसने कहा हल्के गेहूँ भेजने के लिए? मित्र बोला किसी ने नहीं चाचा पर बड़े-बड़े लोग ही ज़कात में तो हल्का गेहूँ ही ले जाते हैं बल्कि कंट्रोल से ख़रीदते हैं। शरबती तो बहुत ही महँगा पड़ता है। चाचा भीगी आँखों से बोले, घर में शरबती खाऊँ और ज़कात में हल्का भिजवाऊँ और ख़ुदा से सवाब (पुण्य) की उम्मीद करूँ; ऐसा दोगला सुलूक मुझसे नहीं होगा। मैं ग़रीब ज़रूर हूँ लेकिन बेईमान नहीं। मेरे बच्चे जो खाएँगे... वही यतीमखाने बच्चे भी खाएँगे। सेल्फ़ और सेल्फ़ी के इस दौर में चाचा की बात सुनकर ऐसा लगा जैसे भीषण गर्मी सावन की मदमस्त और सुहानी फुहार आ गई हो।

लाख टके की बात

जहाँ तक शरीर के रख-रखाव का सवाल है तो सोचिए आपको दिल का दौरा पड़ चुका है। इस हिसाब से खान-पान और जीवनचर्या तय करें। मस्तिष्क के हिसाब से सोचिए आपकी पेशेवर ज़िंदगी के सिर्फ़ दो साल बचे हैं। इसलिए इस हिसाब से प्लानिंग कर लीजिए। जहाँ तक दिल की बात है तो मानकर चलिए की आपकी हर बात दूसरों तक पहुँचती है। लोग छुपकर आपकी बातें सुन सकते हैं इसलिए इस हिसाब को ध्यान में रखकर बोलें। इसी तरह जब धर्म और मज़हब की बात आए तो यह मानकर परोपकार कीजिए की हर तीन महीने में आपका हिसाब होने वाला है। आप रास्ते से नहीं भटक सकते।

पति परमेश्वर

बौने क़द के ऊँचे लोग

रविवार हाट का दिन था। बाज़ार में रोज़ से कुछ ज़्यादा ही भीड़ थी, विशेषकर ग्रामीण लोगों की। इतने में कुछ शोरगुल सुनाई दिया। देखा तो अधेड़ आदमी एक औरत की जमकर पिटाई कर रहा था। वह निरीह स्त्री रोती जा रही थी पर कोई प्रतिकार नहीं कर रही थी। ऐसा लगा मानों वे पति-पत्नी हैं। जब मामला सुलझता नहीं दिखा तो भीड़ में से एक हट्टा-कट्टा आदमी आगे आया। आते ही उसने ग्रामीण अधेड़ को दो-चार चाँटे रसीद कर दिए और बोला ‘अबे! क्यों मार रहा है बेचारी औरत को? ख़बरदार, अब हाथ लगाया तो तेरी ख़ैर नहीं!’

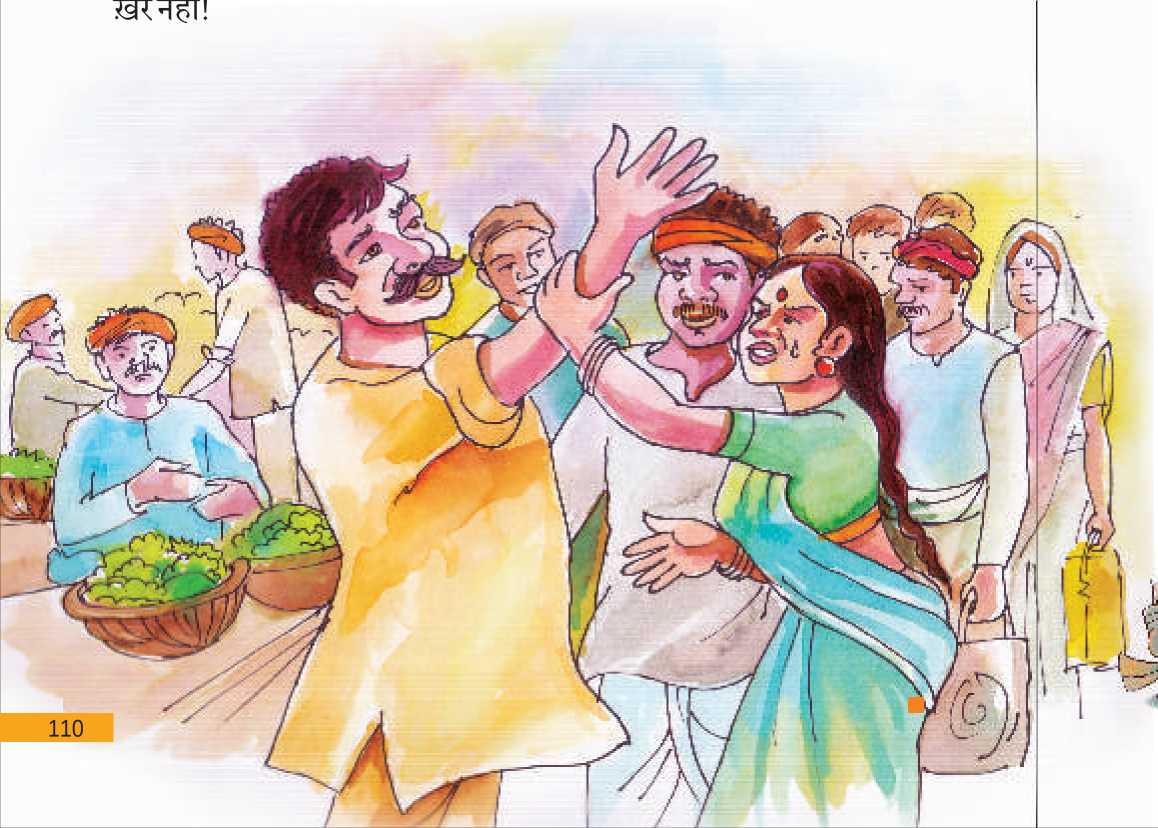

हमें लगा मामला शांत हो गया है, पर घटना ने अचानक नया मोड़ ले लिया। दो पल पहले लाचार, कमज़ोर औरत में न जाने कहाँ से ताक़त आ गई और उसे रौद्र रूप धारण करते हुए उस हट्टे-कट्टे आदमी का हाथ पकड़ लिया। वह गरजते हुए बोली ‘ये मेरे पति परमेश्वर हैं... भगवान हैं मेरे। इन्हीं का दिया खाती हूँ मैं और ये जान छिड़कते हैं मुझ पर। आज मेरी किसी बात पर नाराज़ होकर हाथ उठा लिया है। इनको हक़ है मेरे दो टुकड़े कर देने का, पर तुम कौन होते हो इन पर हाथ उठाने वाले। चला जा यहाँ से अब इन्हें ज़रा सा भी परेशान किया तो समझ लेना दुनिया में मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।’

लाख टके की बात

भरोसा आज भी मौजूद है दुनिया में, नमक की तरह। पतवार के भरोसे नाव समुद्र लाँघ जाती है। बरसात के भरोसे बीज धरती में समा जाते हैं। समुचा जीवन एक-दूसरे की कमियों को निभाते और ख़ूबियों से प्यार करते हुए निर्बाध चलता रहता है। जीवन सखा को उसके गुण-दोष सहित स्वीकारना पड़ता है। स्त्री-पुरुष की सहयात्रा इसी को कहते हैं, यह है सदा के लिए।

बौने क़द के ऊँचे लोग

इन्दौर के बाज़ार से दिनभर काम निपटाकर थका-हारा होटल पहुँचा। कमरे में पहुँचते ही धम्म से बिस्तर पर लेट गया। साथी ने पूछा खाना नहीं खाना क्या? चलो नीचे रेस्टॉरेंट में। मैंने कहा हल्का-फुल्का यहीं कुछ बुलवा लेते हैं। होटल लेमनट्री मुझे इसलिए बहुत पसंद है कि यहाँ के कमरों, दीवारों, गलियारों और लिफ़्ट; हर जगह कुछ न कुछ काम की बातें या प्रेरणादायक स्लोगन लिखे रहते हैं। मेरे जैसे पढ़ने के शौक़ीन के लिए इससे बढ़िया तोहफ़ा और क्या हो सकता है। इंटरकॉम पर रूम सर्विस से संपर्क करते ही बैरा हाज़िर हो गया। मैंने कहा 'तुम तो बस दाल-चावल की एक मिक्स्ड खिचड़ी ले आओ।' उसने जवाब में कुछ इशारा किया, लेकिन मैं समझा नहीं। उसने टेबल से काग़ज़ और पेन उठाया और लिखा 'मैं सुन नहीं सकता, कृपया आपका

ऑर्डर लिख दीजिए। मैं अवाक रह गया! इतना प्रभावशाली, स्मार्ट युवक और बधिर? बहरहाल मैंने ऑर्डर लिख दिया।

सुबह होटल से चैकआउट करते समय मैंने मैनेजर से पूछा - आश्चर्य की बात है कि आपके यहाँ मूक बधिर वेटर्स को भी जॉब मिल जाता है। उसने जो कहा वह मुझे हतप्रभ करने के लिए काफ़ी था। 'इन बेचारों का क्या दोष, कुदरत ने ही इन्हें निर्बल बनाकर धरती पर भेजा है। पर ये हैं तो हमारे ही समाज का हिस्सा इसलिए इन्हें सबल बनाने की ज़िम्मेदारी भी हमारी है। हम इन्हें विशेष ट्रेनिंग देकर आत्मविश्वास से भर देते हैं। इनके इशारों की भाषा हमारा बाकी स्टॉफ़ समझ सके इसके लिए हम सभी को विशेष तौर पर ट्रेन करते हैं। दिव्यांगो की मदद के लिए हमेशा सरकार का मुँह देखना कुछ ठीक नहीं। इन्हें अपने बराबर खड़ा करना क्या हमारा फ़र्ज़ नहीं?

लाख टके की बात

पैर से विकलांग व्यक्ति बैसाखी के सहारे चल सकता है, बिना हाथ वाला पैर से और जिसके पास आँख नहीं वह सुनकर काम चला सकता है। जिसके पास कान नहीं वह भी मशीनों का सहारा ले सकता है। लेकिन सोच से विकलांग आदमी के लिए सारे सहारे बेकार हैं। सुंदर सोच से ही सुंदर समाज की रचना होती है।

बौने क़द के ऊँचे लोग

हम उस पीढ़ी और दौर के हैं जिसकी गर्मी की पूरी छुट्टियाँ नाना-मामा के घर बीतती थीं। महाराष्ट्र का एक क़स्बा है वाशिम। यही हमारा ननिहाल है। सालों बीतने के बाद आज भी वहाँ बिताए मस्ती भरे दिन, बाज़ार, गलियाँ-चौबारे आँखों के सामने चलचित्र की भाँति तैरते हैं। अब ज़्यादा तो नहीं पर सालभर में एकाध बार जब भी जाना होता है मैं पूरे गाँव का एक चक्कर लगाकर पुरानी यादें ताज़ा कर लेता हूँ। इस बार दो-तीन साल बाद जाना हुआ। मैंने सोचा, क्यों न बीते दिनों की तरह साइकल रिक्शा से ही वाशिम का चक्कर लगा दिया जाए। चौराहे पर पहुँचा तो देखा एक ही रिक्शेवाला था। मैं जैसे ही उस पर सवार हुआ, अचानक मेरी नज़र उसके पाँव पर गई। वह एक पाँव से लंगड़ा था। तुम रिक्शा कैसे चला पाओगे - एक पाँव तो नहीं है तुम्हारा? मैंने पूछा। उसका जवाब आज भी रात-बिरात मेरे कानों में गूँजता है। उसने एक पैडल पर पाँव और दूसरे पर अपनी बेसाखी रखी और रिक्शा आगे बढ़ाते हुए बोला 'भाऊ ! ग़रीब का रिक्शा पैर से नहीं, पेट से चलता है।'

कंट्रोल के चावल

बौने क़द के ऊँचे लोग

वैसे तो मैं किराना-अनाज आदि लेने बाज़ार में कम ही जाता हूँ। बाबूजी का डिपार्टमेंट था यह, पर इस बार मम्मी ने मुझे भेज दिया। कहा कि अनाज दुकान से फ़ोन आया है चावल अच्छे आए हैं। इसके पहले कि ख़त्म हो जाएँ, जाकर ले आ। अनाज की दुकान पर एक परिचित मिल गईं। हमारे पुराने मोहल्ले के पड़ौसी की धर्मपत्नी। उनके पास पैसा भी ख़ूब था और रईसी भी। मैंने आगे बढ़कर कहा प्रणाम आंटीजी, कैसी हैं आप? चावल लेने आई हूँ बेटा, उन्होंने जवाब दिया। मैंने कहा यह वाला ले लीजिए, शानदार बासमती आया है इस बार। मैंने भी वही लिया है। उन्होंने दुकानदार वाले से कहा नहीं

बेटा मुझे तो वो सामने वाले बोरे से कंट्रोल जैसे मोटे चावल ही दे दो। मैंने कहा - आप तो इतने खुले मन से ख़र्च करती हैं तो फिर चावल के मामले में कंजूसी क्यों? आंटी इतने हलके चावल खा नहीं पाएँगी आप। सुनते ही उनकी आँखों से झरझर आँसू टपकने लगे। कहने लगीं 'बेटा तुम तो पड़ोसी रहे हो, तुम्हें पता है मुझे और बेटे को चावल का कितना शौक है। हम जीवनभर बाज़ार का सबसे बेहतरीन चावल लाते रहे और खाते रहे। मैं तो फिर चला लूँ लेकिन बेटे को हलके चावल बिल्कुल नहीं चलते। कुछ महीने पहले बेटे के होस्टल में जाना हुआ। वहीं की मेस में खाना खाने चली गई मैं। जब चावल आए तो देखकर दंग रह गई। एकदम ख़राब, मोटे, कंट्रोल जैसे मोटे चावल। मैंने सोचा मेरा इतना नख़रे वाला बेटा कैसे खाएगा इसे? पर धीरे-धीरे वह बिना कुछ कहे खाता गया। जबसे घर लौटी हूँ और चावल बनाए तो बासमती का एक कोर भी मेरे गले नहीं उतरा। मेरी आँखों के सामने हरदम बेटे का चेहरा ही तैरता रहा। मैंने घर के स्टॉक में रखा बासमती काम वाली बाईयों में बाँट दिया। आजकल मैं भी यही कंट्रोल वाला चावल खा रही हूँ।

लाख टके की बात

मैं रोया परदेस में, भीगा माँ का प्यार
दुःख ने दुःख से बात की, बिन चिट्ठी, बिन तार
-निदा फ़ाज़ली

मैकेनिक की सीख

बौने क़द के ऊँचे लोग

इन्दौर में वे ट्रक मैकेनिक थे, बड़ा अपनापा और मुहब्बत रखते थे। उस समय खण्डवा में लीलैंड ट्रकों का काम बड़ी मुश्किल से होता था इसलिए हमारे सारे ट्रक रिपेयरिंग के लिए उन्हीं के पास जाते थे। एक दिन मैं खाना खाने जा ही रहा था कि अचानक वे सामने नज़र आए। मैंने कहा आज आप के दर्शन खण्डवा में कैसे हो गए? चलिये बाबा, आप अच्छे समय आए हैं, घर जा रहा हूँ, आप भी चलिए साथ में खाना खा लेते हैं। वे बोले नहीं बेटा मैं तो घर से खाना खाकर ही निकला था। भूख नहीं है दोपहर बाद बाज़ार में ही खाना खा लूँगा। मैं ग़रीब आपके घर कहाँ जाऊँगा। मैंने कहा अरे बाबा कैसी बात कर दी आपने? क्या कभी आपको ऐसा लगा हमारे व्यवहार से। हम आपको बाबा

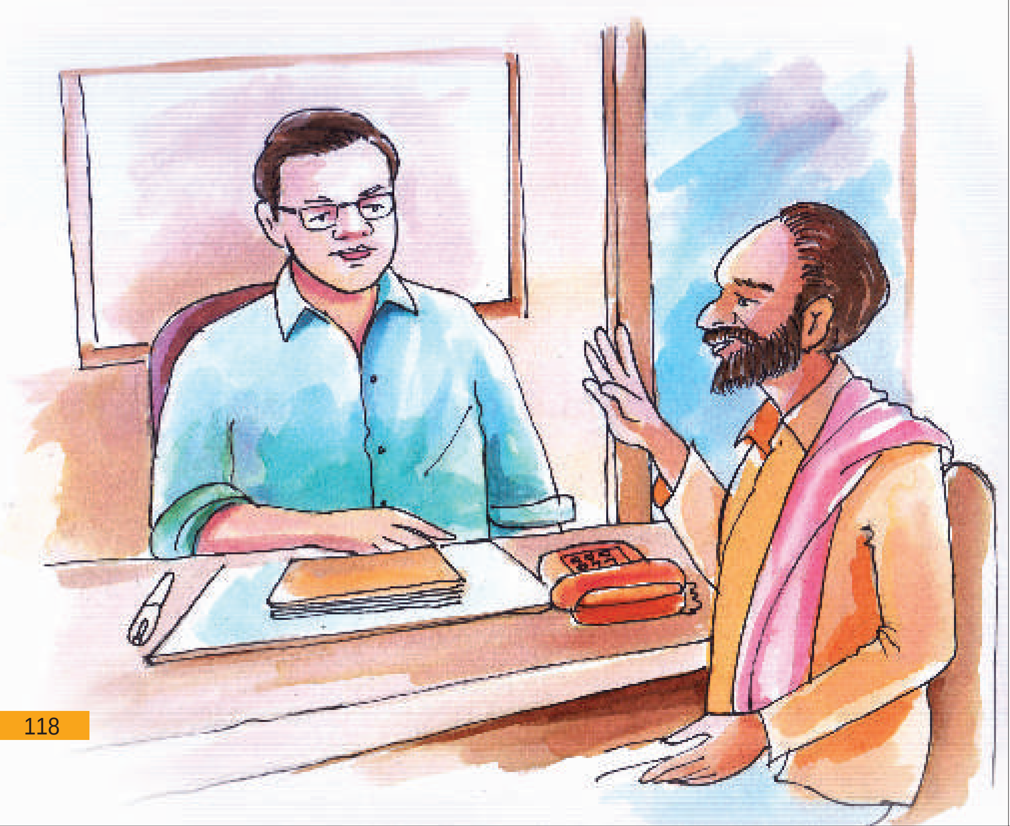

बोलते हैं - इससे बड़ा रिश्ता भला और क्या होगा? उन्होंने फिर मना किया लेकिन मैं ज़बरदस्ती उन्हें घर खाने पर ले ही आया। थाली लग गई और परिवार ने प्रेम और मनुहार से उन्हें कुछ ज़्यादा ही खिला दिया। आख़िर में गर्मागरम पकौड़े आए। मैंने एक पकौड़ा मुँह में रखा ही था और अनमने मन से श्रीमतीजी से कहा आज भजिये कैसे बेस्वाद बने हैं, बिल्कुल मज़ा नहीं आया। पत्नी का चेहरा उतर गया, वो चुपचाप सुनती रही, कुछ नहीं बोली।

बाबा और मैं भोजन करके घर से रवाना हुए। बाबा रास्ते में बोले 'बेटा मैं एक अनपढ़, छोटा और ग़रीब आदमी हूँ लेकिन आपसे गुज़ारिश करना चाहता हूँ। बाबा बोले 'बेटा तुम्हे पता है औरत अन्नपूर्णा का रूप होती है। अपना तन-मन न्यौछावर करके रसोई बनाती है। भोजन में नमक,मिर्च और मसाले नहीं, प्रेम और अपनापन डालती है। हम तो खाते ही एक लाइन में बोल देते हैं - मज़ा नहीं आया! पर सच कहूँ हमारी ये एक बात तीर बनकर उसके दिल के आर-पार हो जाती है। वह कई दिनों तक इस सवाल का जवाब ढूँढते हुए चैन से सो नहीं पाती कि खाने बनाने में चूक कहाँ हुई। बाबा बोल रहे थे और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे उनकी बानी किसी ग्रंथ के पाठ की तरह मेरी आत्मा में उतर रही है। बाबा ने आगे कहा भैया जब भी अपने या किसी और के घर में भोजन करने बैठो तो उसे भगवान का प्रसाद समझकर आनंद से ग्रहण करो। तुम्हारे मन में वैसा ही उल्लास और प्रेम हो जैसा उस रसोई को बनाने वाले के मन में होता है। कभी बेमज़ा टिप्पणी मत करो और न ही जूठा छोड़ो।

लाख टके की बात

हम महिलाओं को जो कुछ भी देते हैं, उसके बदले में वे हमें ज़्यादा ही लौटाती हैं। आप उन्हें प्रेम दें तो वे आपको संतान देती हैं, यदि आप उन्हें मकान दें तो वे आपको घर देती हैं। यदि आप उन्हें अनाज देते हैं तो वे आपको भोजन देती हैं। यदि आप उन्हें मुस्कुराहट दें तो वे आपको अपना दिल देती हैं। कहने का मतलब हम जो कुछ उन्हें देते हैं, वे हमें उससे कुछ ज़्यादा ही लौटाती हैं। इस सबके बदले पत्नी सिर्फ़ इतना चाहती है कि पति मेरा इतना मान रखे, इतना प्यार करे जितना संसार के किसी और पत्नी को उसके पति ने न दिया हो।

नज़रों का लिहाज़

चुनावी गहमा-गहमी के दिन थे। टक्कर भी काँटाजोड़। सारे इलाक़े में एक ही सवाल - जीतेगा कौन? आज फ़ॉर्म जमा करने का अंतिम दिन था। पहले एक पार्टी के उम्मीदवार ने ऐतिहासिक रैली निकालकर अपना फ़ॉर्म जमा किया तो आज दूसरी पार्टी जवाबी निकालकर अपना नामांकन भरने निकली। पहली पार्टी के उम्मीदवार से हमारे पुराने पारिवारिक संबंध थे। हमारा तन-मन-धन, सब कुछ उसके साथ था। दूसरी पार्टी के उम्मीदवार को इस बात का पता था। शाम का समय था, विशाल रैली के कारवाँ की धूल के पीछे सूरज अस्त होने को था। अचानक दूसरी पार्टी के उम्मीदवार के पीए का नंबर मेरे

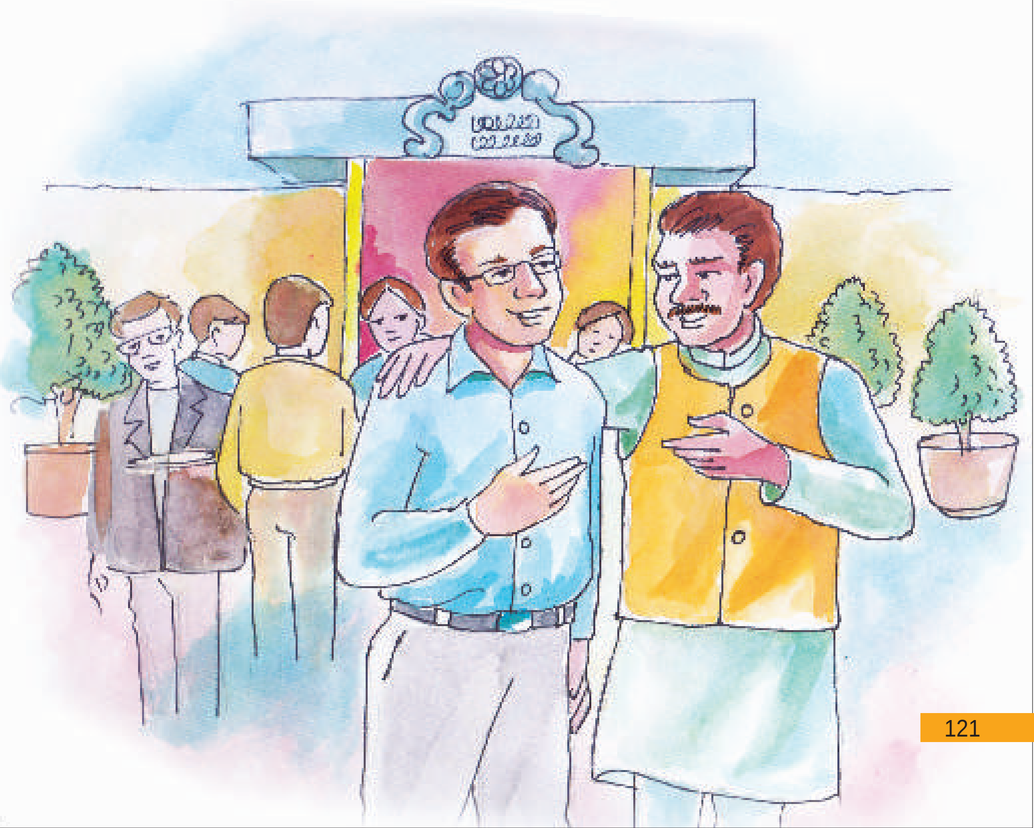

मोबाइल पर चमका। नमस्कार आलोक भाई ! कहाँ हैं आप? मैंने कहा घर पर हूँ। और मम्मी-बाबूजी, भैया? संयोग से हम सब इस समय घर पर ही हैं मैंने जवाब दिया। भाई साहब मम्मी-बाबूजी से आशीर्वाद लेने आना चाहते हैं - पीए ने आग्रह किया। मैंने पूछा कुछ विशेष। नहीं बस, आशीर्वाद ही लेना है। मैंने बुझे मन से कह दिया आ जाइए।

कुछ ही मिनटों बाद गाड़ियों का बड़ा काफ़िला घर के सामने था। उम्मीदवार ने सारे कार्यकर्ताओं को बाहर रुकने का इशारा किया और स्वयं अंदर आ गए। अंदर आते ही माँ-बाबूजी को चरण स्पर्श किया, भैया को आलिंगन और भाभी से प्रश्न किया? 'तिलक लगाकर मिठाई नहीं खिलाएँगे भाभीजी? भाभी तुरंत मिष्ठान्न लेकर हाज़िर हो गई और मुँह मीठा करवाया। परिवार और इधर-उधर की बातें होने लगीं, कोई राजनैतिक या चुनावी मुद्दा चर्चा में नहीं आया। दस मिनिट बाद वे उठ खड़े हुए और एक बार फिर मम्मी-बाबूजी के पैर छूकर रवाना हो गए। हम सबके मन में जिज्ञासा बनी रह गई - कि वे आए क्यों थे?

चुनाव हो गए और नतीजे भी आ गए। हमारे समर्थन वाला उम्मीदवार पराजित हुआ और दूसरी पार्टी वाले भाई जीत गए। उसके बाद कई आयोजनों में गाहे-बगाहे उनसे मुलाकात होती रही। हर बार वे पूरी गर्मजोशी से मिलते, कहीं कोई नाराज़गी नहीं। एक दिन मैंने हिम्मत करके पूछ ही लिया 'भाई साहब! आपको अच्छी तरह से पता था कि हम दीगर पार्टी के उम्मीदवार के कट्टर समर्थक हैं, टूटने और दल बदलने वाली तासीर भी नहीं हमारी फिर चुनाव के समय में इतनी व्यस्तता के बावजूद आप हमारे घर क्यों आए? वे हौले से मुस्कुराए, मेरे कंधे पर हाथ रखकर एक कोने में लग गए और बोले आलोक भाई मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि आप दोनों भाईयों को कोई नहीं डिगा सकता। न कोई

दबाव और न कोई लालच। एक बात याद रखिएगा भारतीय संस्कृति में चेहरे की शर्म और लिहाज़ आज भी बना हुआ है। आप दोनों भाई ख़ूब लिखते और बोलते हैं। मेरे आने का सिर्फ़ एक मकसद था कि आप अपने उम्मीदवार के समर्थन में जितना चाहे लिखें, बोलें.... चलेगा लेकिन जब भी मेरे विरुद्ध लिखने-बोलने का विचार आपके मन में आएगा तो मेरा चेहरा, मेरी बात और वही लिहाज़ आपकी क़लम के पैनेपन और आवाज़ की बुलंदी को ख़ुद-ब-ख़ुद रोक देगा। बस यही छोटा सा मकसद था आपके घर आने का। मुझे लगा वे बहुत बड़ी बात मेरे चेहरे पर कहकर गए।

लाख टके की बात

बहुत सारे लोग क़ाबिल तो होते हैं लेकिन उनमें महत्वाकांक्षा नहीं होती। दुनिया की इस भीड़ में चंद लोग ही होते हैं जो क़ाबिल भी होते हैं और महत्वाकांक्षी भी। यही वे लोग हैं जिनकी आँखें भी बड़ी होती हैं और सपने भी। यही वे लोग होते हैं जिनका एहसान होता है ख़ुद पर भी समाज और राष्ट्र पर भी।

राज मिस्त्री की कहानी

बौने क़द के ऊँचे लोग

बैंक मैनेजर के पद से रिटायरमेंट के लिए उनका चार-छह महीने का समय ही बचा था। फिर भी कामकाज में ईमानदारी, तत्परता और समर्पण ऐसा कि नये कर्मचारी उनसे रश्क़ करते थे। एक दिन मैंने पूछ ही लिया फुटबॉल या हॉकी मैच में अगर अच्छे ख़ासे गोल से टीम जीत रही होती है तो आख़री मिनटों में तो वह टाइम पास ही करती है। आक्रामक की बजाय रक्षात्मक खेलती नज़र आती है। मुझे लगता है यही हाल रिटायरमेंट से नज़दीक आ गए अधिकारियों का भी होता है। वे अपनी नौकरी का अंतिम समय एकदम सुरक्षित बिताना चाहते हैं फिर आप इतने परिश्रम और रिस्क से काम में क्यों लगे रहते हैं?

प्रश्न सुनकर वे आदतन मुस्कुरा दिये और बोले भाई ! एक कहानी सुनो। एक राजा के पास एक राज मिस्त्री था। ज़बरदस्त कलाकार, हवेली-महल बनाने में पारंगत। जब वो बूढ़ा हो गया तो एक दिन उसने अपने राजा से निवेदन किया कि अब मेरा शरीर साथ नहीं देता। मैं अपना समय परिवार के साथ धर्म-ध्यान में लगाना चाहता हूँ। कृपया मुझे सेवानिवृत्त कर दें। इतने कुशल कारीगर को खोना राजा को ठीक नहीं लगा। राज मिस्त्री की बात का सम्मान करते हुए उन्होंने कहा 'जाने से पहले जितनी सुंदर और विशाल बना सकते हो, एक हवेली और बना दो। पैसे-कौड़ी की चिंता मत करना। पूरा ख़ज़ाना इस नये काम के लिए खुला रहेगा। तुम्हें कोई रोकेगा-टोकेगा नहीं। जिस दिन तैयार हो जाए मुझे उस नई हवेली की चाबी सौंप देना। मिस्त्री के चेहरे पर सलवटें आ गईं। उसने सोचा जाते-जाते राजा ने एक और बड़ा काम बता दिया। बहरहाल, मरता क्या न करता, उसने बेमन से एक-दो कमरे का छोटा-मोटा बेतरतीब जुगाड़ू मकान बना दिया ताकि राजा की बात भी रह जाए और वह अपने काम से जल्दी छुट्टी भी पा ले। काम पूरा होते ही राज मिस्त्री राजा के पास गया और कहा महाराज हवेली तैयार है, यह रही चाबी। राजा ने चाबी लेने से इंकार कर दिया और राज मिस्त्री से कहा 'तुमने पूरा जीवन हमारी सेवा में बिताया। दर्जनों महल-दुमहले बनाए। ये आख़री हवेली मैंने अपने लिए नहीं तुम्हारे लिए बनवाई है। यह चाबी आज से तुम्हें मुबारक। राज मिस्त्री का चेहरा फक्क पड़ गया। वो सिर पकड़कर वहीं बैठ गया और सोचने लगा कि काश ! मुझे ये बात पहले पता होती तो शानदार हवेली तान देता। कहानी सुनाकर मैनेजर साहब बोले हम सबका फ़र्ज़ है कि जीवन के अंतिम दिन तक अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरे मनोयोग से निभाएँ। ऐसा न हो कि अंतिम दिनों में ईश्वर आपको जो सौग़ात देना चाहता हो, आप उससे वंचित रह जाएँ।

लाख टके की बात

मित्रों हर पल को जियो, अंतिम पल ही मान
अंतिम पल है कौन सा, कौन सका है जान
-कविराज गोपालदास 'नीरज'

नानी बाई को मायरो

बौने क़द के ऊँचे लोग

रिश्ते में यूँ तो वे सगे भाई-बहन थे पर आपसी रंजिश ऐसी कि बीते दस सालों से एक-दूसरे घर आना-जाना तो दूर बातचीत भी बंद थी। इन सालों में न जाने कितने तीज-त्यौहार और मौसम आए पर किसी ने एक-दूसरे को फूटी आँख भी नहीं देखा। इसी बीच बहन के यहाँ उसके बेटे की शादी तय हो गई। सारे रिश्तेदारों को मनुहार और बुलावे, पर भाई के यहाँ कोई चिट्ठी-पत्री और औपचारिक निमंत्रण तक नहीं। देखते ही देखते शादी का दिन आ गया। सुबह का समय था। बारात निकलने की तैयारियाँ अंतिम चरण में थीं। बहन अपने पति के साथ सभी को हिदायत देते हुए सारे कामकाज की बागडोर बख़ूबी

संभाले हुए थी। अचानक उसकी नज़र घर के मुख्य द्वार पर गई। सबसे पहले तो उसने अपने शरीर पर चिमटी भरी कहीं वह सपना तो नहीं देख रही है। दरवाज़े पर भाई-भोजाई और उसके परिजन हाथों में बड़े-बड़े थाल और उपहार लेकर खड़े थे। इस दृश्य से वह सकपका गई। भाई थाल नीचे रखकर बहन से आकर लिपट गया और कहने लगा बिना मायरे के बेटे की शादी कर लेगी पगली ! मामा की उंगली पकड़े बिना मेरे भांजा कैसे घोड़ी पर चढ़ जाएगा। मेरे जीते जी मेरे बिना वह सात फेरे ले लेगा क्या? तू भले ही मुझे नहीं बुलाए पर मेरा तो फ़र्ज़ है अपनी बहन के यहाँ नेकचार और शगुन लेकर जाना। मुझे इस कर्तव्य से कोई नहीं रोक सकता, तू नहीं और भगवान भी नहीं। बहन क्या जवाब देती उसकी आँखों से गंगा-जमुना बह निकली। मुहब्बत की इस बाढ़ में चेहरे के मैकअप के साथ वर्षों का बैर भी बह गया।

■

लाख टके की बात

हम घर में रखे टीवी, फ्रिज और वाहन की रिपेयरिंग के लिए तो समय निकाल लेते हैं पर रिश्तों की रिपेयरिंग से कन्नी काटते हैं। नये-नये बहाने ढूँढते हैं जबकि संबंध जीवन के लिए सबसे ज़रूरी हैं।

ज़िंदगी में आगे यह हुनर भी आज़माना चाहिए
जंग हो अपनों से गर, तो हार जाना चाहिए

मरने के पहले जीने का आनंद

बौने क़द के ऊँचे लोग

मेरा उस शहर में लगातार आना-जाना था फिर भी पराया शहर तो पराया ही होता है। ज़माने भर की जानकारियाँ इकट्ठा कर लो; थोड़ी ही होती है। उस शहर का आलीशान सभागृह था वह। बड़ी वाजिब क़ीमत पर सबके लिए सुलभ जिसका संचालन एक पारमार्थिक ट्रस्ट करता था। एक आयोजन में उस सभागार की ख़ूबसूरती निहार ही रहा था कि पास खड़े मित्र ने एक सज्जन से मिलवाया। मित्र ने बताया कि यही वे हस्ती हैं जिनके नाम पर यह सभागार बनाया गया है। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि क्योंकि आज तक मैंने इस तरह के सभागार, भवन, स्टेडियम उन्हीं के नाम पर देखे थे जो इस दुनिया से कूच कर चुके हैं। जीते-जी किसी आदमी के नाम पर कोई सभागार? मामला कुछ चौंकाने वाला था। पहले तो मैं सकुचाया फिर इधर-उधर की बात करते हुए मैंने पूछ ही लिया; भाई साहब आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ कहीं आपको

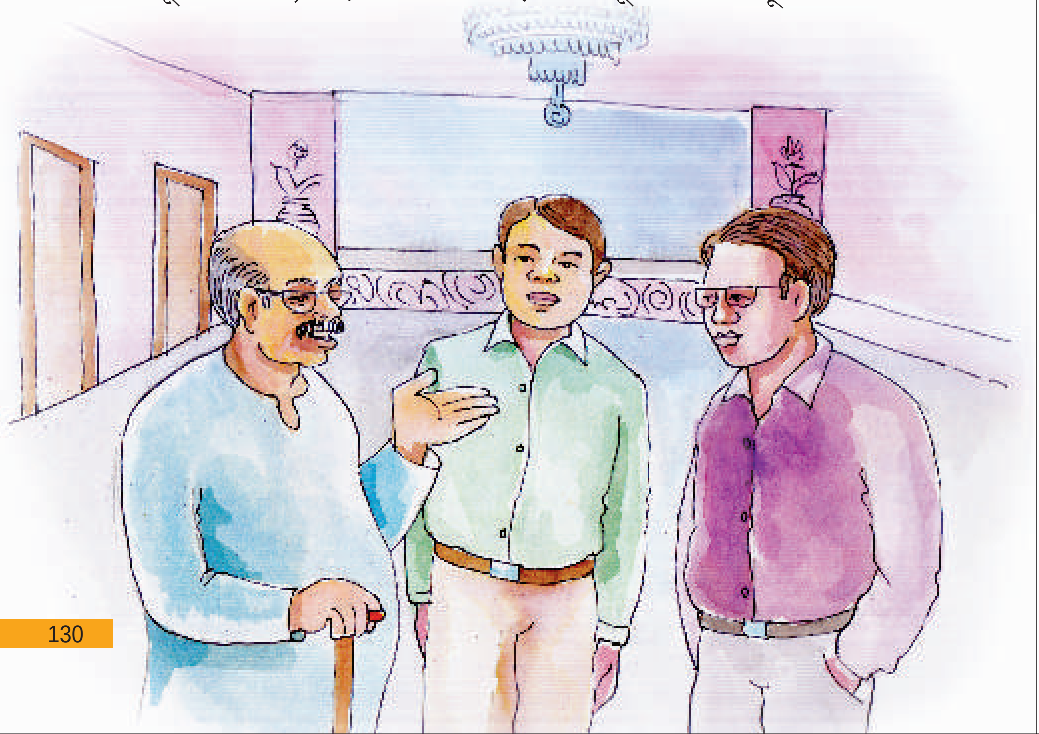

बुरा तो नहीं लगेगा? उन्हें मेरी बात का अंदाज़ा हो गया था अतः हँसते हुए बोले मुझे पता है आप क्या जानना चाहते हैं! यही न कि यह सभागार किसी ज़िंदा व्यक्ति के नाम पर कैसे? फिर बोले आर्थिक रूप से अत्यंत संपन्न मेरे दोनों पुत्र विदेश में हैं। उन्हें अब मेरी संपत्ति की कोई आवश्यकता नहीं। मेरे पास दो ही विकल्प हैं, अभी भी उनके लिए पैसे बचाकर रखूँ और मरने के बाद बच्चों के लिए छोड़ जाऊँ या फिर जीते-जी मेरी मेहनत से कमाए गए इस पैसे का पूरा आनंद लूँ। इस उम्र में मेरे कोई फ़िज़ूल ख़र्च या शौक़ तो बचे नहीं हैं। मुझे लगा कि मैं अपनी बचत से ख़ुद अपने नाम पर एक सर्वसुविधायुक्त सभागार बनवा दूँ और इसमें आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को देखते हुए मैं अपना बचा हुआ जीवन आनंद के साथ बिता सकूँ। मेरे न रहने के बाद हो सकता है इन पैसों से मेरे बच्चे भी मेरी स्मृति में कोई सभागार बनवा दें या किसी नेक काम में दान कर दें, लेकिन मैं तो उसका आनंद नहीं ले सकूँगा! मैं चाहता था कि अपनी कमाई का पूरा आनंद जीते-जी ले सकूँ, और वह मैं ले रहा हूँ।

लाख टके की बात

सर्पिणी क़तार में अंडे देते हुए आगे बढ़ती जाती है। वापस आते समय जब उसे भूख लगती है तो वह उन्हीं अंडों को खाने लग जाती है। उस समय क़तार से लुढ़के अंडे ही बच पाते हैं। क़तार से हटकर चलने वाला व्यक्ति ही जीवन में अपनी अलग पहचान बनाता है। भीड़ का हिस्सा मत बनिये - भीड़ की वजह बन जाइये।

टैक्सी ड्रायवर

क्वावालंपुर की यह मेरी तीसरी यात्रा थी। यह शहर मुझे हमेशा लुभाता रहा है क्योंकि ये हमारे एशिया के ही एक ऐसे देश मलेशिया की राजधानी है जिसने हमारे बाद आज़ादी पाने के बावजूद अपने दम पर प्रगति के नई कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

मौसम में कुछ ठंडक थी और हल्की बारिश ने शाम को कुछ और सुहाना कर दिया था। मुझे एक दोस्त की बड़ी बहन के निवास पर डिनर हेतु जाना था। होटल के बाहर आकर मैंने कैब बुलवा ली। कुछ आगे बढ़ते ही कैब ड्रायवर ने धीमे स्वर में म्युज़िक सिस्टम चालू कर दिया। अचानक कानों में मिश्री सी मधुर

धुन घुल गई। 'तेरे मन की गंगा और मेरे मन की जमुना का, बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं।' मैंने आश्चर्यचकित होकर ड्रायवर से कहा अरे ! आपके पास तो हिन्दी गाने भी हैं। उसने प्रसन्न होते हुए कहा सर मेरी पेन ड्राइव में दुनिया के लगभग हर देश का संगीत मौजूद है। जिस देश की सवारी, उस देश के गाने लगा देता हूँ। मैंने कहा तुम्हें तो सारे देशों की भाषा नहीं आती होगी तब तुम दूसरी भाषा के गीतों से बोर नहीं हो जाते? सर मेरा क्या है, मुझे तो कार चलानी है लेकिन परदेस में अपने देश का संगीत सुनकर जब मेहमान के चेहरे पर ख़ुशी और होठों पर मुस्कान झिलमिलाने लगती है तो मुझे लगता है मैंने अपने काम को ईमानदारी से निभा दिया। उसके विनम्र जवाब ने मुझे लाजवाब कर दिया।

लाख टके की बात

सच्ची ग्राहक सेवा वही है जब उसको मिलने वाली ख़ुशी हमारी ख़ुशी से बड़ी हो ।

पानी पताशे

बौने क़द के ऊँचे लोग

हरदा हमारी सबसे बड़ी बुआ का शहर है। उनके निश्छल प्रेम के चुम्बक में कुछ ऐसी ताक़त थी कि हर बरस गर्मी की छुट्टियों में एक चक्कर हरदा का लग ही जाता। शाम के समय घंटाघर के पास बना वाचनालय मेरा परमानेंट अड्डा होता। अच्छे साहित्य का बड़ा ख़ज़ाना वहाँ मौजूद था। एक शाम वहाँ से निकलकर हरदा भ्रमण करते हुए जब बुआ के घर लौट रहा था तो रास्ते में चढ़ाई पर पानी-पताशे का ठेला देखकर मेरे मुँह में पानी आ गया। मैंने पताशे वाले भैया से कहा पाँच-सात खिला दो भैया। क्यों नहीं! अभी लीजिए - पताशे वाले ने कहा। अभी उसने दो पताशे खिलाए ही थे कि अचानक वह

मिस्टर इंडिया की तरह ग़ायब हो गया। मैंने नज़र दौड़ाई तो वह सामने चढ़ाई पर एक बूढ़े का हाथ ठेला धकाता हुआ दिखा। पाँच मिनिट के इंतज़ार के बाद पताशे वाले भैया हाज़िर थे। मुझे उन पर क्रोध आ रहा था। मैंने कहा ग्राहक यहाँ प्लेट पकड़े खड़ा है और तुम मुझे छोड़कर ग़ायब हो गए? ऐसे दुकानदारी होती है क्या? वह विनम्रता से बोला, माफ़ कीजिए भैया आपको थोड़ा इंतज़ार करना पड़ा, पर ज़रा सुनिये... मैं ठहरा भरा-पूरा जवान। जब रोज़ सुबह पानी-पताशे का यह ठेला चढ़ाई पर से धकाकर यहाँ पर लाता हूँ तो मेरा दम निकल जाता है। इसलिए दिन में जब भी कोई बूढ़ा मुझे इस चढ़ाई पर ठेला धकाते हुए नज़र आता है तो मैं अपना काम छोड़कर उसका हाथ बटाने चला जाता हूँ। मुझे लगता है पाँच मिनिट ही सही, पर मुझे किसी बड़ी तीर्थयात्रा से ज़्यादा सुकून मिल गया। ग्राहक भाग्य से आते हैं लेकिन ये भी सही है कि किसी की मदद करने का मौक़ा भी सौभाग्य से मिलता है। मैं इस मौक़े को किसी भी क़ीमत पर खोना नहीं चाहता।

लाख टके की बात

दूसरों के भले के लिए अपना सुख और मुनाफ़ा छोड़ने वाला अंत में सबसे ज़्यादा सुखी और मुनाफ़े में रहता है। दधीचि अपनी हड्डिया देकर भी नहीं मरे, कर्ण कवच-कुंडल देकर भी अमर है।

स्वाभिमानी बहन

बौने क़द के ऊँचे लोग

तकलीफ़ें तो उसकी जन्मकुंडली में ही लिखी थीं। परिवार की आर्थिक स्थिति कमज़ोर थी। सूरत-शक्ल भी एकदम सामान्य। बड़ी मुश्किल से शादी हुई तो ससुराल भी कमज़ोर ही मिला। दुर्भाग्य ने यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ा। पति की बीमारी के चलते ज़िंदगीभर हाथ तंग बना रहा। इन सारी तकलीफ़ों के बावजूद दो बातें अच्छी थीं। पहली, वह सिलाई-कढ़ाई में बेहद होशियार थी अतः जैसे-तैसे घर का गुज़ारा कर लेती। दूसरी, बच्चे पढ़ाई में अच्छे निकल गए। अचानक एक ख़ुशख़बर के साथ उसका फ़ोन आया कि बिटिया का

एडमिशन इन्दौर के मेडीकल कॉलेज में हो गया है। मैंने बधाई दी और कहा कि बड़ा शहर है, ख़र्चे भी बड़े लगेंगे, बिटिया की पढ़ाई के लिए जो भी ख़र्च लगे मुझे बता देना; भिजवा दूँगा। कहने लगी ठीक है भैया, अगर ऐसी कोई ज़रूरत हुई तो आपको ज़रूर याद करूँगी।

दो-चार महीने तक उसका कोई फ़ोन नहीं आया। एक दिन मैंने ही फ़ोन लगाकर पूछा क्या हुआ बिटिया का? उसने कहा भैया सब ठीक हो गया। बिटिया कॉलेज जाने लगी है। मैंने पूछा होस्टल, फ़ीस और किताबों के ख़र्च के लिए तुम्हारा फ़ोन नहीं आया? उसने जवाब दिया भैया ! आपने हिम्मत और हौसला दिया था, अच्छा लगा। पढ़ाई बहुत लंबी है और ये सारी ख़र्च तो लगे ही रहेंगे। एक दिन की तो बात नहीं। इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए हमने अपनी दीगर ज़रूरतें और ख़र्च कम कर लिए हैं। आपकी दुआओं से सब ठीक हो गया है।

लाख टके की बात:

स्वाभिमानी व्यक्ति की पहचान यही होती है कि वह अपने हालात को समझे और उसके मुताबिक ज़िंदगी के ख़र्च और रहन-सहन को तय करे। मदद एक बार की होती है लेकिन एहसान ज़िंदगीभर का।

स्वाभिमान का सम्मान

घर में तीन भाइयों में वे सबसे बड़े थे। पढ़ाई में बचपन से ही तेज़ अतः अच्छी डिग्री भी हासिल कर ली और व्यापार भी चल निकला। देखते ही देखते बड़े भाई धनधान्य और साधनों से संपन्न हो गए लेकिन छोटे भाई कोई ख़ास तरक़्क़ी नहीं कर पाए और कमज़ोर रह गए।

बड़े भाई की बिटिया की शादी बड़े घराने में तय हो गई। शादी से महीनेभर पहले बड़े भाई ने दोनों छोटे भाइयों को बुलवाया और पूछा तुम्हे पता ही है कि घर में शादी आ गई है, ख़र्च भी बड़ा है। तुम दोनों कितनी मदद कर पाओगे? दोनों निरुत्तर थे। जैसे-तैसे मझले ने हिम्मत जुटाकर कहा भैया आपके आगे हमारी क्या बिसात जो हम आपको पैसे से मदद कर पाएँ! फिर भी आपका आदेश सर आँखों पर। हमारे पास जो कुछ है सब आपके हवाले।

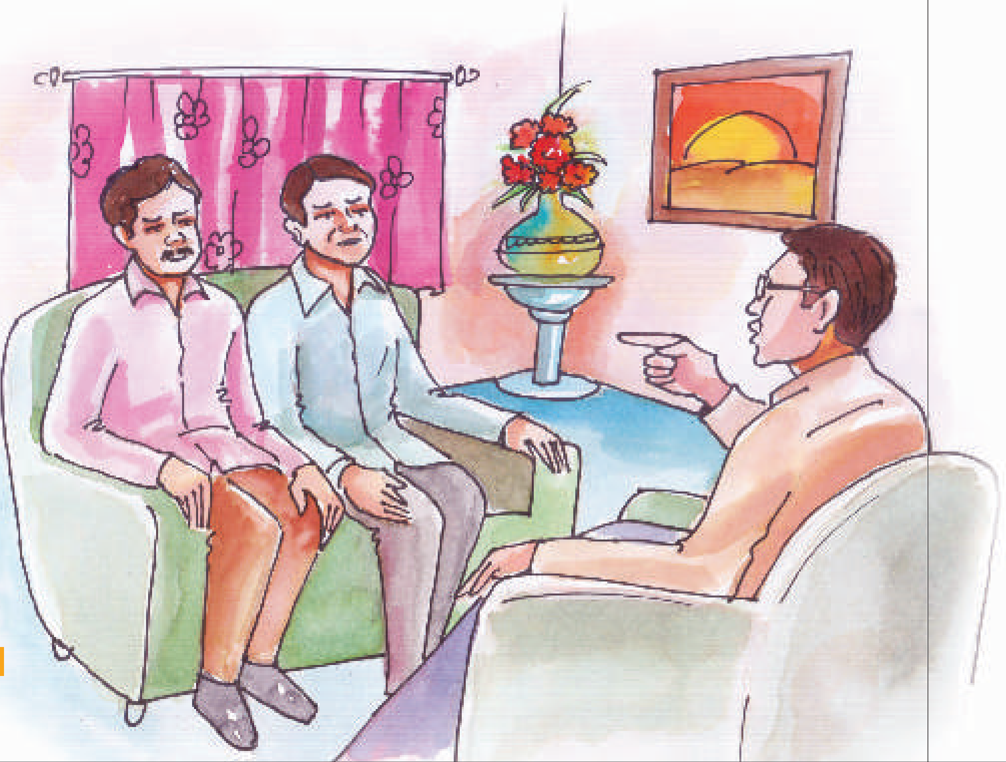

रात का घटनाक्रम अगले दिन मुझे पता लगा। मैंने हिम्मत जुटाकर बड़े भाई से प्रश्न किया भैया ! आपको और मुझे अच्छी तरह से पता है कि उन दोनों की आर्थिक स्थिति कितनी नाज़ुक है। मैं यह भी जानता हूँ कि आपके पास कितनी ताक़त है कि ऐसी चार शादियाँ बिना किसी से एक रुपया लिए आप आज ही कर सकते हो। फिर भला अपने कमज़ोर दोनों भाइयों पर यह अतिरिक्त वज़न क्यों? बड़े भैया पहले तो सकुचाए और मुझसे कहा कि तुमसे कुछ छुपाया नहीं हूँ इसलिए बता रहा हूँ। वादा करो इसका ज़िक्र किसी से न करना। मेरी सहमति से आश्वस्त होने के बाद वे बोले कि तुम सच कह रहे हो मुझे मदद की ज़रूरत नहीं लेकिन ऐसा करने के पीछे एक बड़ा कारण है। मेरी तो एक ही बेटी है लेकिन दोनों छोटे भाइयों की दो-दो बेटियाँ हैं। मैं समर्थ होकर भी यदि इनसे मदद माँगता हूँ तो कल ये अपनी बेटियों की शादी के वक़्त मुझसे मदद मांगने में कोई संकोच नहीं करेंगे। इनकी मदद करने से ज़्यादा ज़रूरी है इनका स्वाभिमान भी बना रहे।

लाख टके की बात:

पेड़ पर तने और शाख़ों के अतिरिक्त पत्तियाँ और फूल भी होते हैं। पत्तियाँ रहती हैं अलग-अलग। उपयोगिता के बावजूद भी उनकी वह क़ीमत नहीं होती जो फूलों की। फूल में उसकी पंखुड़ियाँ होती हैं जो इकट्ठा होती हैं। अलहदा होने से कई गुना बेहतर है एक साथ गूँथकर फूल की तरह जीना।

निर्जीव से प्यार

घर में नई कार आ जाने से पुरानी कार बेचना थी। पुरानी कारें बेचना आजकल आसान नहीं। न तो ग्राहक मिलते हैं और न उचित क़ीमत। आज एक दादा-बहादुर टाइप के आदमी आए और उन्होंने अब तक पुरानी कार के लिए आए ऑफ़र से पच्चीस हज़ार रुपये अधिक की पेशकश कर दी। कहने लगे पैसे नक़द लाए हैं और कार आज ही लेना है। हम सबके चेहरे पर ख़ुशी की लहर दौड़ गई। चूँकि घर के सारे बड़े निर्णय पिताजी की सहमति से करते आए हैं अतः उनके सामने प्रस्ताव रख दिया। उन्होंने कहा विचार करके बाद में बताते हैं और उन दादा-बहादुर को विदा कर दिया।

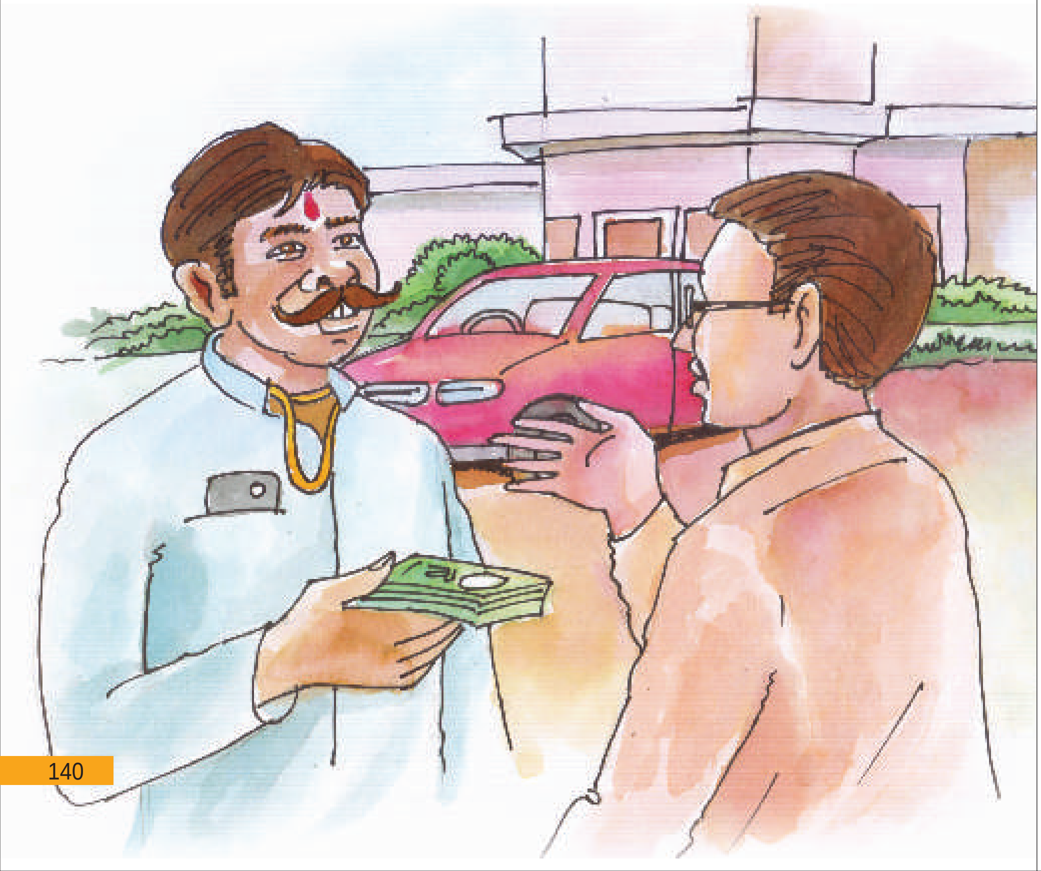

उनके जाने के बाद हमने पिताजी से कहा; बाबूजी! बड़ी मुश्किल से इतने अच्छे दाम मिल रहे थे। आपने हाथ आया एक अच्छा-भला ग्राहक रवाना कर दिया। बाबूजी धीमें से मुस्कुराये और कहने लगे कोई भी गाड़ी एक निर्जीव वस्तु नहीं; लक्ष्मी होती है। उस कार से हमने इतने सालों में न जाने कितनी यात्राएँ की हैं, हर बार उसने सही सलामत घर तक पहुँचाया है। आज जब नई गाड़ी आ गई है तो उसे दस-बीस हज़ार की लालच में किसी ग़लत व्यक्ति को सौंप देना स्वार्थ ही कहलाएगा। इस कार को कम क़ीमत पर बेच देना लेकिन ऐसे हाथों में जो उसे संभालकर रखे, जैसे हमने उसे रखा था। जब कभी यह कार हमारे सामने से गुज़रे तो हमें अफ़सोस न हो कि हमने अपनी लक्ष्मी को किसी ग़लत व्यक्ति के हवाले कर दिया।

लाख टके की बात:

हर अचेतन वस्तु में भी चेतना होती है। फ़र्क़ यही होता है कि हम उसे किस भावना से देखते हैं। मनुष्य की आत्मीय और नेक भावना ही पत्थर को भी पूजनीय बना देती है।

बौने क़द के ऊँचे लोग

एक बड़े कारोबारी थे जिनका बड़ा नाम और बड़ा काम था। जीवनशैली भी कुछ ऐसी कि जिसे देखकर घड़ी के काँटे भी शरमा जाएँ। कार्यशैली कुछ ऐसी कि बड़े-बड़े कॉर्पोरेट उनसे रश्क़ करते। व्यवसाय, खान-पान, व्यायाम, रहन-सहन, रिश्ते, बोलचाल, सबकुछ संतुलित और नियमित। क़ामयाब होने के बाद भी वे सदा निराभिमानी बने रहे। कभी भी प्रतिस्पर्धियों की ईर्ष्या और वक्तव्यों पर यक़ीन न करते हुए सबके प्रति समता का भाव बनाए रखा।

दिन की शुरूआत हुई ही थी कि शासकीय विभाग का लवाज़मा आकर दरवाज़े पर खड़ा हो गया और जाँच-पड़ताल के लिए वॉरंट पेश किया। कुछ पल के लिए वे चिंतित हुए और थोड़े विचलित भी लेकिन पूरे सम्मान के साथ अधिकारियों को स्वागत कक्ष में बैठाया। जब कुछ सहज हुए तो सारे ज़िम्मेदार कर्मचारियों को बुलाकर कहा कि किसी जाँच के लिए ये अधिकारी हमारे दफ़्तर

में आए हैं, हमारे अतिथि हैं इन्हें पूरा सहयोग देना है। हमारे पास छुपाने जैसा कुछ भी नहीं जो भी माँगे मुझसे पूछे बिना बिना लाग-लपेट के सामने रख देना।

कार्यवाही शुरू होने के कुछ देर बाद वरिष्ठ अधिकारी से निवेदन किया सर ! दुनिया इधर की उधर हो जाए मैं प्रतिदिन सुबह दो घंटे के लिए क्लब जाता हूँ जहाँ नियमित रूप से वर्कआॅउट्स करता हूँ। मेरे तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए यह अनिवार्य है। मेरी पूरी टीम आपके हवाले है, आप जो चाहें पूछें और जाँचे। मेरी जानकारी के अनुसार मेरे यहाँ कामकाज में कोई त्रुटि नहीं। यदि तकनीकी रूप से आप कुछ ग़लत देखते हैं और मुझ पर कोई पेनल्टी बनती है तो बेझिझक कर दीजिएगा, मुझे कोई शिकायत नहीं होगी।

अधिकारी तनाव के इन लम्हों में अमूमन विचलित हो जाने लोगों से हटकर इस इन्सान को अपने सामने देखकर विस्मित थे। कारोबारी बोले आप चाहें तो मेरा मोबाइल भी रख लें और मुझे अपनी कार से जाने की इज़ाज़त दें और यदि यह मुमकिन न हो आप अपने किसी कर्मचारी को मेरे साथ भेज सकते हैं लेकिन मैं क्लब जाऊँगा ज़रूर। उनके आत्मविश्वास और सकारात्मकता को देखकर अधिकारी कुछ कहें इसके पहले वे अपने जिम की किट और टेनिस रैकेट लेकर दफ़्तर से बाहर हो गए।

लाख टके की बात:

विपत्तियाँ जीवन का अटूट हिस्सा हैं। जिस तरह से हम प्रसन्नता का स्वागत करते हैं उसी तरह से मुश्किलों का सामना भी करना चाहिए। विपदा का स्वरूप विकराल हो सकता है किंतु हमारा मन हर हाल में किसी भी विपदा से कुछ और बड़ा होता है। इस बात को जितनी जल्दी समझ लिया जाए उतना अच्छा।

बलात्कारी पति

बौने क़द के ऊँचे लोग

एक ग्राहक को टायर उधार दिए हुए लंबा समय बीत गया था। लाख मिन्नतों और तक़ादों के बाद भी वे भुगतान का नाम नहीं ले रहे थे। उनका दिया चैक भी बाउंस हो गया। चैक लेकर वक़ील के पास रात 8 बजे पहुँचा। काफ़ी लोग प्रतीक्षा कक्ष में बैठे हुए थे। वक़ील साहब ने भीतर से मुझे देखकर सीधे कैबिन में बुलवा लिया। मैं कुछ कहता उसके पहले उन्होंने कहा भैया! सिर्फ़ 10 मिनिट की मोहलत दीजिए। उस महिला को सुन लेता हूँ जो शाम 6 बजे से अपने नंबर की इंतज़ार में बैठी है। मैंने कोई बात नहीं और वक़ील साहब के कैबिन में ही साइड वाले सोफ़े पर एक अख़बार लेकर चुपचाप बैठ गया।

महिला की उम्र तकरीबन 30 बरस होगी। उसका परिवेश निमाड़ के ग्रामीण अंचल का प्रतीत होता था। हाथ में एक पोटली थी जो उसने सीधे वक़ील साहब की टेबल पर रख दी। वक़ील ने पूछा जीजी मैं क्या मदद कर सकता हूँ तुम्हारी? महिला पोटली खोलते हुए बोली मेरा पति पिछले एक हफ़्ते से जेल

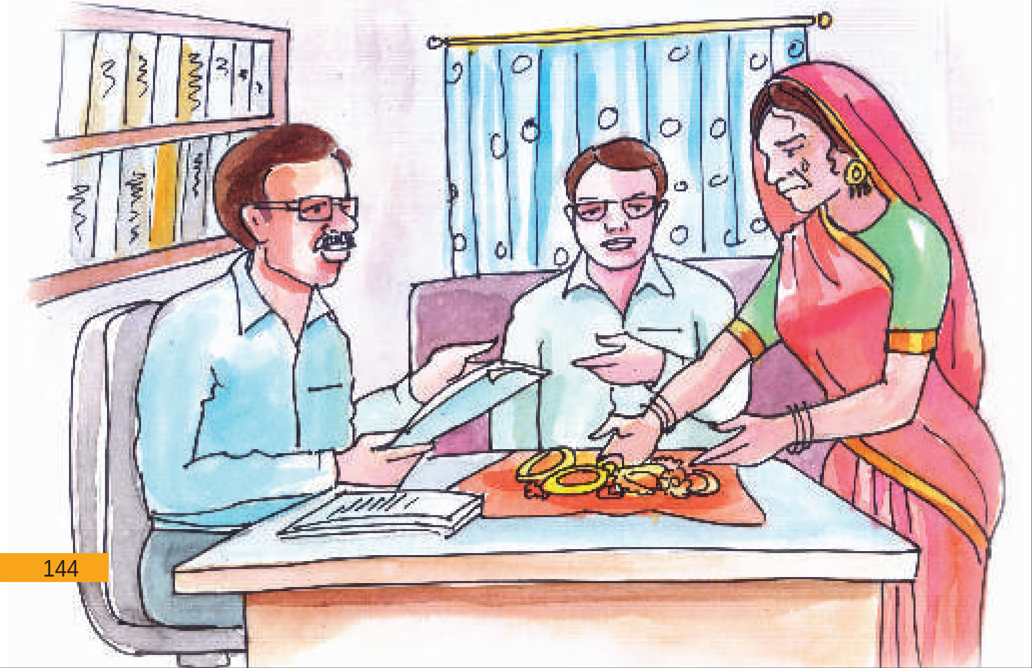

में बंद है। मेरे पास न कोई ज़रिया है और न ही रुपये। बस ये कुछ ज़ेवर हैं और मकान के काग़ज़। भीगी आँखों और भर्राए गले से वे बोली इन्हें बेचकर जो भी ख़र्च आता हो कर दीजिए पर मेरे पति को जेल से छुड़वा दीजिए।

वक़ील साहब ने पूछा किस जुर्म में तुम्हारा पति जेल में गया है? वह बोली मामला कुछ ऐसा है कि मैं न बता सकूँगी। जो भी है वो पुलिस के इन काग़ज़ों में लिखा है, आप ही पढ़ लीजिए। वक़ील साहब ने नाक पर रखा चश्मा ठीक किया। ग़ौर से काग़ज़ पढ़े और फिर महिला से ध्यान हटाकर मुझसे मुख़ातिब हुए। देखिये भैया! ये है भारतीय संस्कृति। जिसमें बचपन से ही लड़कियों के मन में यह बात बैठा दी जाती है कि पति परमेश्वर होता है। इसका पति निठल्ला है और ये मज़दूरी करके घर चलाती है। श्रीमानजी बलात्कार के आरोप में जेल में बंद हैं और यह है कि अपना सबकुछ दाँव पर लगाकर उसकी ज़मानत करवाना चाहती है। आप तो दुनियाभर में घूमते हैं; कभी किसी देश, संस्कृति या सभ्यता में किसी भारतीय जैसी समर्पित जीवन साथी मिले तो मुझे बताइयेगा।

लाख टके की बात:

लोकमान्य तिलक से किसी ने पूछा कि भारतीय नारी अच्छा वर पाने के लिए महागौरी का व्रत रखती है लेकिन पुरुषों के लिए ऐसी कोई व्यवस्था क्यों नहीं? तिलक महाराज बोले भारत की सभी स्त्रियाँ श्रेष्ठ हैं, मुश्किल सिर्फ़ श्रेष्ठ पुरुष ढूँढने की है। बस इसीलिए स्त्रियों को व्रत रखना पड़ता है। वह अपने अभिभावकों को छोड़कर नये परिवार के लिए पूरा जीवन न्यौछावर कर देती है। यह बात सिर्फ़ शब्दों में नहीं मौक़ा पड़ने पर वह इसे अपने आचरण से भी साबित करती है। जीवन साथी को पूरा प्रेम देना पुरुष की ज़िम्मेदारी है। अवैध विवाह में भी प्रेम नैतिक है लेकिन बिना प्रेम के वैधानिक विवाह भी अनैतिक है।

काका

बौने क़द के ऊँचे लोग

कॉलेज जाने का समय हो गया था। मित्र का घर रास्ते में ही पड़ता था। घर से साइकिल लेकर मित्र को घर से लेते हुए कॉलेज जाना मेरी दिनचर्या का हिस्सा था। जब उसके घर पहुँचा तो वह मौज़े पहन रहा था। मैं बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया। फ़ीते कसने के बाद वह खड़ा हो ही रहा था कि एक सफ़ाईकर्मी दरवाज़े के बाहर सीढ़ियों पर आकर खड़ा हो गया। वह हर सुबह उनके यहाँ आता था और घर में पीछे के रास्ते से आकर वॉश रूम्स की सफ़ाई कर देता था। कॉलेज में देर हो रही थी इसलिए मित्र ने अपने पिता को आवाज़ दी। बाबूजी! पीछे का दरवाज़ा खोल दीजिए, सफ़ाई वाला आया है। उसके पिता बाहर आए और उन्होंने जो कहा मुझे शब्दशः याद है। कहने लगे - बेटा

यह तो भाग्य का लेखा-जोखा है कि ईश्वर ने तुम्हें बड़े घर में जन्म दे दिया और उसे सफ़ाई करने वाले के परिवार में। चाहे यह सफ़ाई कर्मचारी है लेकिन उम्र में तुमसे बड़ा है। तुम्हारी ज़िम्मेदारी बनती है कि तुम बड़े घर के बच्चे की तरह अपनी वाणी और व्यवहार में भी बड़प्पन दिखाओ। अगर तुम इसे भैया या भाई कहने में शर्म आती है तो तुम इसे अंकल कहकर पुकारा करो। ध्यान रखो मुझे इसे सम्मान देने में कोई संकोच या शर्म नहीं होती है। ख़बरदार आज के बाद इसे असम्मानजनक संबोधन दिया तो। चलो भाई! पीछे आ जाओ मैं दरवाज़ा खोल देता हूँ, ऐसा कहकर मित्र के पिता भीतर चले गए।

लाख टके की बातः

ख्यात साहित्यकार रामनारायण उपाध्याय की पंक्तियाँ याद आ जाती हैं 'जिसके साथ चलते हुए दूसरा आपको महसूस करवाए कि आप सचमुच बड़े हैं तो इसका मतलब है कि वह व्यक्ति आपसे बड़ा है और जिसके साथ आपको यह लगने लगे कि आप छोटे हैं इसका मतलब वह व्यक्ति छोटा है। बड़प्पन और छोटापन विचार और व्यवहार से होता है किसी की जाति या कर्म से नहीं।

जैसा खाओ अन्न वैसा रहे मन

बौने क़द के ऊँचे लोग

दो कमरे - किचन का छोटा सा किराये का मकान था उनका। चार बच्चों को एक साथ रहने और पढ़ाई करने में दिक़्क़त आती थी इसलिए माँ ने सामने वाले मकान की तीसरी मंज़िल पर यह कमरा किराये पर ले लिया था। बारी-बारी से हम भाई-बहन उसमें पढ़ाई करते। बोरियत से बचने के लिए एक छोटा सा टेप रिकॉर्डर साथ ले आए थे। मुकेश मेरे पसंदीदा गायक थे जिनकी आवाज़ का दर्द सीधे दिल में उतरता था। जब उनके गीत बज रहे होते तो मालूम ही नहीं पड़ता कि वक़्त कब बीत गया। दूसरी मंज़िल पर एक चाचा रहते थे जिनकी उम्र तक़रीबन 60 बरस थी। वे अक्सर हालचाल पूछते रहते। एक दिन टेप रिकॉर्डर पर बाने बज रहे थे तो चाचा आए और पूछा कि इस उम्र में मुकेश के गीत सुन

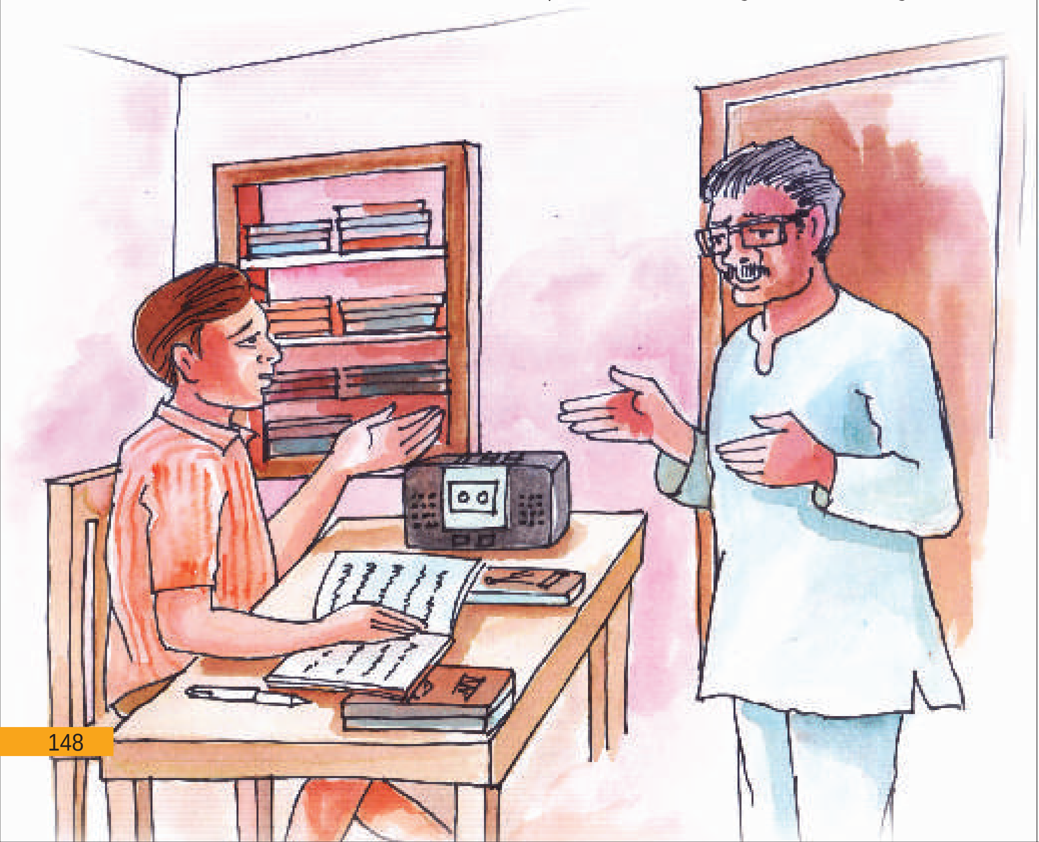

रहे हो? मैंने कहा क्यों क्या हम मुकेश के गाने नहीं सुन सकते? कहने लगे हर चीज़ अपनी उम्र के हिसाब से होना चाहिए। अभी तुम्हें जीवन में लंबा चलना है। तुम जैसी फ़िल्में देखते हो, जैसा साहित्य पढ़ते हो, जो संगीत सुनते हो वह सब तुम्हें तुम्हारे मन को भीतर तक प्रभावित करता है। तुम्हारी उम्र ऊर्जा, जोश और स्पीड की है। इस उम्र में तो किशोर कुमार के गाने सुनों। वह तुम्हें मस्ती, चपलता, ऊर्जा और उत्साह देंगे। ये मुकेशजी का संगीत हम जैसे सीनियर सिटीज़न के लिए छोड़ दो। दूसरे दिन मैं बाज़ार से किशोर दा के चार कैसेट्स ख़रीद लाया।

लाख टके की बात

सरलता से कही हुई सच बात जीवन को दिशा दे देती है। किशोर और युवावय में सुनने की आदत ज़रा कम होती है लेकिन जो इन बातों पर भरोसा कर लेता है उसे निश्चित ही जीवन में एक नई राह मिलती है।

बौने क़द के ऊँचे लोग

बरसों बाद घर-आँगन में शहनाई की गूँज का अवसर आने वाला था। पूरा परिवार भतीजी की शादी की तैयारियों में जुटा था। दीगर कामों के अलावा कुमकुम पत्रिका बनवाने की ज़िम्मेदारी भी मुझ पर थी। चूँकि इस काम में मुझे रस आता है इसलिए तय कर लिया कि शादी की पत्रिका एकदम अनूठी और लीग से हटकर बनवानी है। इन्दौर के मेरे एक मित्र शब्द-शिल्पी भी हैं और ग्राफ़िक डिज़ाइनर भी अतः उन्हीं को यह काम सौंपा। हम सब पूरी मशक्कत के साथ कार्य को मूर्त रूप देने में जुट गए। पत्रिका छपकर तैयार हो गई और पार्सल से घर भी पहुँच गई।

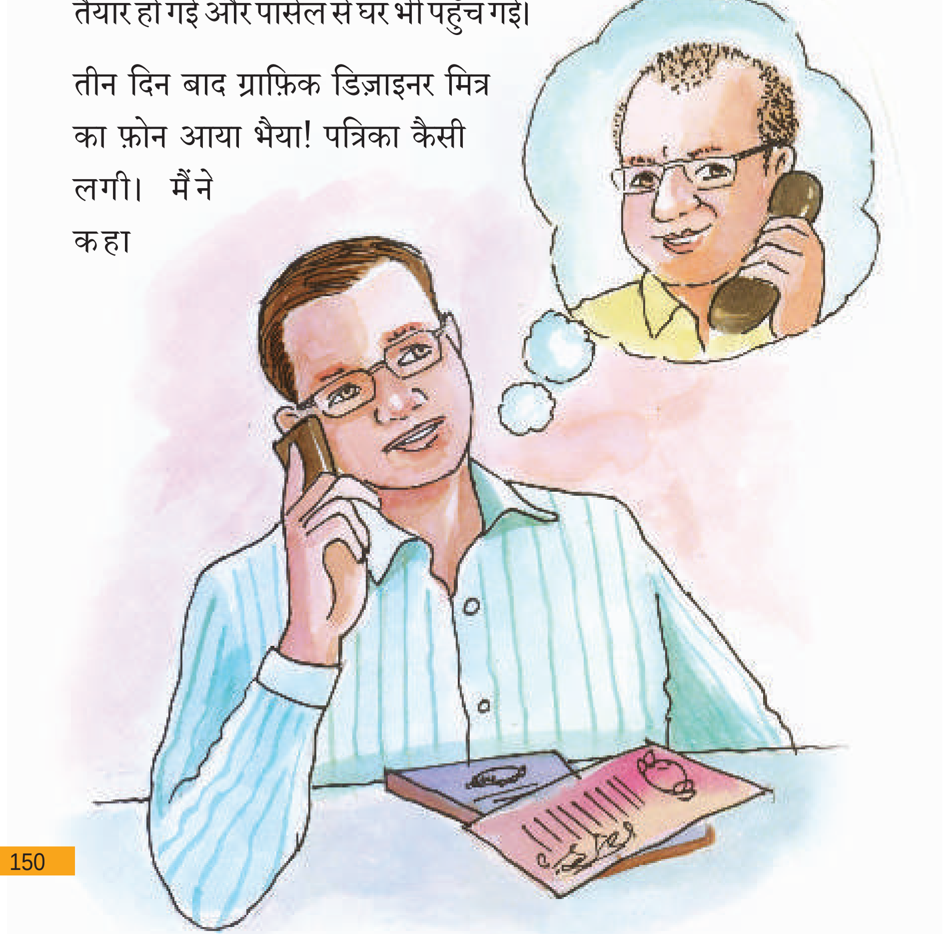

तीन दिन बाद ग्राफ़िक डिज़ाइनर मित्र का फ़ोन आया भैया! पत्रिका कैसी लगी। मैंने कहा बाक़ी सब तो ठीक है लिफ़ाफ़े का काग़ज़ कमज़ोर हो गया। यह सुनते ही उनका स्वर उदास हो गया क्योंकि मैंने तो सिर्फ़ विचार दिया था उसे पूरी तरह से सजाने-सँवारने की अथक मेहनत उनकी पूरी टीम की थी। उन्होंने अगला प्रश्न किया 'पत्रिका का काग़ज़ कैसा है?' मैंने कहा बेहतरीन। उन्होंने फिर पूछा मैटर, कलम स्कीम, प्रिंटिंग क्वालिटी और डाई कटिंग कैसी लगी? मैंने कहा लाजवाब। मित्र तुरंत बोले भैया आपसे ग्राहक से ज़्यादा रिश्ता मित्रता का है इसलिए एक बात आपको अधिकारपूर्वक कहना चाहता हूँ। जब कुमकुम पत्रिका की सारी बातें अच्छी लगी थीं तो पहले इन अच्छाइयों की ही बात आपसे मुँह से सुनने को मिल जाती! कमज़ोर लिफ़ाफ़े की बात बाद में भी तो हो सकती थी। मेरा निवेदन है कि जब कभी किसी से शिकायत करनी हो तो शुरूआत उसकी अच्छाइयों से कीजिए। कमियों को बाद में भी मुहब्बत से अंडरलाइन किया जा सकता है। आपकी बात का असर ज़्यादा होगा, वह ध्यान से सुनी भी जाएगी और उस पर अमल भी होगा। दवाई कितनी भी कड़वी हो पहले उस पर मीठे मुलम्मे के कवर से बने केप्सूल में ही रखा जाता है जिसे खाने में कभी कोई दिक़्क़त नहीं आती। ■

लाख टके की बात

सकारात्मक विचार देर तक असर करता है। ग़लती किसी से भी हो सकती है। यदि सामने वाले को उसकी बेशुमार अच्छाइयों से नवाज़कर कमज़ोरी बताई जाए तो बात बेहतर हो सकती है। यदि कोई कलाकार कमज़ोर ग़ज़ल गा रहा है तो पहले उसकी आवाज़ की मिठास की तारीफ़ कीजिए। बाद में कहिए काश! आप एक बेहतर ग़ज़ल का चयन करते।

बौने क़द के ऊँचे लोग

यात्राएँ जीवन का सबसे बड़ा सबक़ होती हैं। एक स्कूल की मानिंद वे हमें ज़िंदगी की हक़ीक़तों से रूबरू करवा देती हैं। हर क़दम पर धीरज सिखाती हैं और अपने घर से दूर हो रही हलचलों से वाक़िफ़ करवाती हैं। मॉस्को की एक कॉंफ्रेंस के सफ़र के लिए मुंबई से हम दो ही टायर डीलर थे। दुबई होते जाने वाली मुंबई की यह फ़्लाइट उड़ान भरती उसके पहले उसका टायर ख़राब हो गया। टायर आने और बदले जाने में फ़्लाइट तीन घंटा लेट हो गई। ज़ाहिर है जब दुबई पहुँचे तो मॉस्को की फ़्लाइट उड़ चुकी थी। एमिरेट्स की मॉस्को के लिए अगली सीधी फ़्लाइट 24 घंटे बाद थी। हमने अपनी एयरलाइंस में जाकर

मॉस्को की ज़रूरी मीटिंग का हवाला दिया तो उन्होंने एमिरेट्स की फ़्लाइट्स से जर्मनी होते हुए मॉस्को जाने का इंतज़ाम कर दिया। 24 घंटे के तनाव, थकान और परेशानी के बीच नींद में डूबे हुए ही थे कि फ़्लाइट मॉस्को एयरपोर्ट पर लैंड कर गई। फ़्लाइट लैंड होते ही हवाई जहाज़ में तमाम यात्रियों की तालियों ने हमें चौंका दिया। जिज्ञासावश मैंने एक रूसी सहयात्री से इन तालियों की वजह पूछी। उसने मुस्कुराकर जवाब दिया। रशिया में जब भी कोई फ़्लाइट सुरक्षित लैंड कर जाती है तो हम तालियाँ बजाकर दो लोगों का शुक्रिया ज़रूर अदा करते हैं। पहला उस नीली छतरी वाले का जो हर लम्हा हमारी चिंता करता है। दूसरा उस फ़्लाइट क्रू का जिसके पायलट, एयरहोस्टेस और अन्य कर्मचारी यात्रियों की सुरक्षा का ख़्याल रखते हुए फ़्लाइट को सुरक्षित लैंड करवा देते हैं। ज़िंदगी को एक नया सबक़ मिला कि यात्रा हवाई हो, रेल या सड़क मार्ग से; अपने सारथी का छोटा आभार मन को असीम तसल्ली देता है।

लाख टके की बात:

विपरीत परिस्थितियों में झल्लाना और बेचैन हो जाना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जब सबकुछ अच्छा हो रहा हो तो तब भी हमें अपने मन की अच्छी भावनाओं का इज़हार करने से चूकना नहीं चाहिए। शुक्रिया देने में कोई क़ीमत नहीं लगती लेकिन पाने वाले के लिए वह अनमोल हो जाती है।

क्या नहीं करना है

बौने क़द के ऊँचे लोग

मेरे मित्र के पिता प्राथमिक शाला के बेहद ईमानदार और परिश्रमी शिक्षक थे। जीवन में अपने मूल्यों और सिद्धांतों से कभी कोई समझौता नहीं किया। उनका पाँच बच्चों का बड़ा परिवार था। पेट काटकर, अपनी तमाम तमन्नाओं और अरमानों का गला घोंटकर पति-पत्नी ने बड़ी मुश्किलों में बच्चों को पढ़ाया और परवरिश की। हायर सैकंड्री के बाद मित्र का एडमिशन मुंबई के बड़े कॉलेज में हो गया। उनके परिवार में मुंबई जैसा महानगर कभी किसी ने देखा नहीं था सो सब चिंतित थे। मित्र को ट्रेन पर विदा करने से पहले हम उसके घर गए। आँसू एक ऐसी चीज़ है जो सुख और दुःख दोनों ही समय अंतर्मन की ज़ुबान बन जाता है। कुछ ऐसा ही माहौल था उनके घर का। निकलते-निकलते

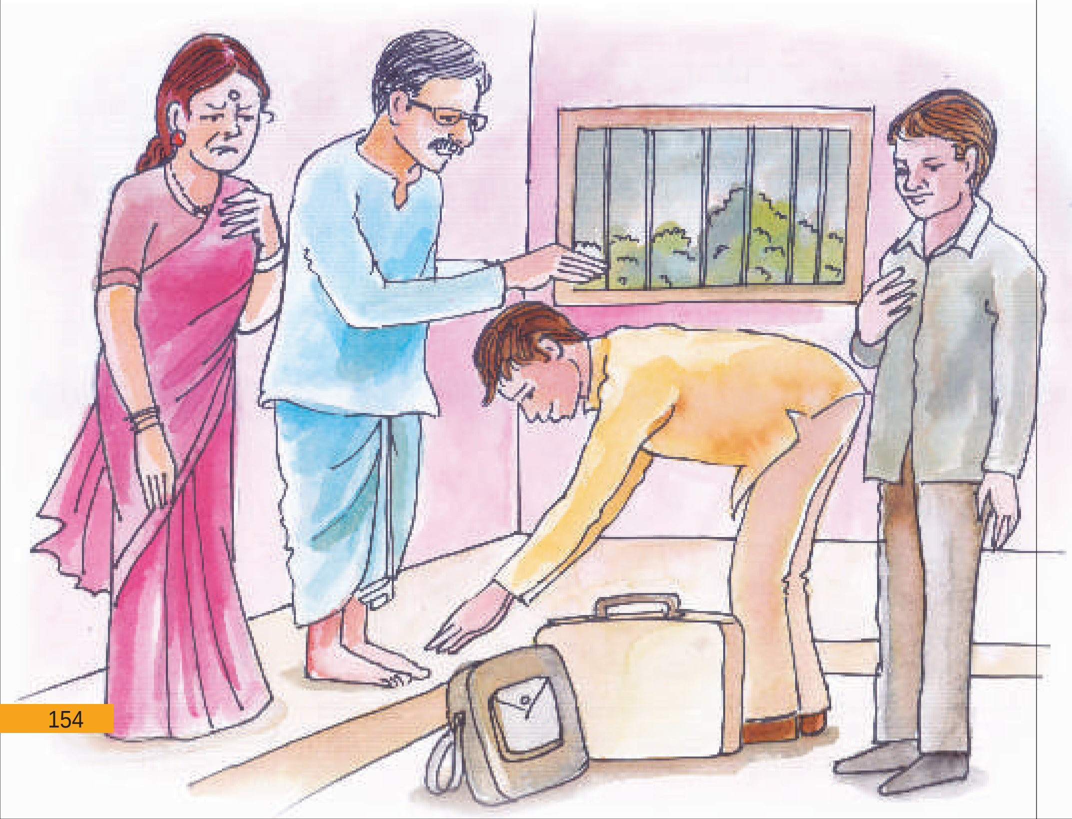

मित्र ने अपने शिक्षक पिता के चरण छुए और विदा की अनुमति माँगी। उस समय प्राथमिक शाला के साधारण से शिक्षक के मुँह से निकले शब्द किसी बड़े ग्रंथ से कम नहीं थे। वे कहने लगे 'बेटा! जीवन में आज तक कभी भी एक दिन के लिए तुम्हें आँखों से ओझल नहीं होने दिया। जीवन में कब, क्या-क्या करना है, हमेशा तुम्हें सिखाया जिसका तुमने अक्षरशः पालन किया। आगे का जीवन अब तुम्हारे हाथ में है। क्या-क्या करना है इसकी फ़ेहरिस्त बहुत छोटी सी थी जो मैंने तुम्हें सौंप दी। अब क्या-क्या नहीं करना है वह फ़ेहरिस्त बहुत लंबी है; जिसे तुम्हे ही तय करना है। जीवन में इस ग़रीब मास्टर की गर्दन ऊँची न हो तो चलेगा लेकिन इतना ध्यान रखना कि तुम्हारे कारण अपने पिता की गर्दन नीची न हो।

लाख टके की बात:

हमारे माता-पिता अच्छाइयों का विश्वविद्यालय होते हैं। हमारे समझदार होने तक वे हमें सारी दुनियादारी से वाक़िफ़ करवाते रहते हैं। समय आने पर हमें ही तय करना होता है क्या अच्छा है और क्या बुरा। कुछ परीक्षाओं में स्वयं ही उत्तीर्ण होना होता है।

दिल मिले न मिले, हाथ मिलाते रहिए।

सच्चे रिश्ते वही हैं जिनमें शब्द कम

और समझ ज़्यादा हो,

प्रमाण कम और प्रेम ज़्यादा हो।

जीवन को खेल भावना से जीना ही

जीवन निखारने की सर्वोत्तम कला है।